❀ संरक्षक ❀

श्री करेल्ला चिनवीरा स्वामी

श्री करेल्ला गंगराजू

जनरल मर्चन्ट्स

दुम्मगूडेम

जिला :—पूर्व—गोदावरी

कलाकार

पुरुष

नल (शाहनशाह)
वीरसेन (नल का छोटा भाई)
नघुक (शाहजहाँ)
सर्वार्थदर्शी (वजीर)
बवण्डर (खानखान)
रणदृष्ट (सिपहसालार)
कालाग्नि (दैत्य)
सुमुख (दूत)
नारद (मुनि)
राम (अयोध्या का राजा)
भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न } राम के भाई

कुश, लव } राम के बेटे
तक्ष, पुष्कर (भरत के बेटे)
अङ्गद, चित्रकेतु (लक्ष्मण के बेटे)
सुबाहु, श्रुतसेन, यूपकेतु (शत्रुघ्न के बेटे)
वशिष्ठ, वामदेव और वाल्मीकि (मुनि)
हनुमान
जाँबवान
सुग्रीव
अङ्गद सुषेण नल और नील
मैंद, द्विविद, गवय और गवाक्ष
शङ्कर, ब्रह्मा और इन्द्र

स्त्री

सुरुचि (नल की स्त्री)
माँडवी
श्रुतकीर्ति
पार्वती

सीता
उर्मिला
अरुन्धति (वशिष्ठ की स्त्री)

ॐ

विज्ञापन

यह हर्ष की बात है कि हमारे स्वतन्त्र भारत में हिन्दी एक राष्ट्र भाषा बन गई और अब हिन्दी भाषा प्रेमी दुगुने बल से उसका प्रचार कर सकेंगे। दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार इधर कुछ समय से होता आया है और पाठशालाओं के पठन-क्रम में इसको भी स्थान दिया गया है। विशेषतया आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी का प्रचार प्रखर रूप से देख पड़ता है। भारत के स्वातन्त्र्योद्योग के साथ-साथ हिन्दी सीखने की प्रवृत्ति और इस भाषा में प्रेम आन्ध्र भाषा-भाषियों में अनायास ऐसा बढ़ा मानों।दोनों अन्योन्याश्रित हैं। इसी भावना के प्रतीक हमारे ग्रन्थकार श्री पोक्कुलूरि रामचन्द्र शर्माजी ने प्रस्तुत नाटक की रचना करके हिन्दी भाषा प्रेमियों के सम्मुख रखा। आपका परिचय देने में मुझे हर्ष होता है कि आप आन्ध्र प्रान्त के पूर्व—गोदावरी जिलान्तर्गत राजमन्द्री नगर के निवासी हैं और सन १९२७ ई० में यहाँ आकर करीब दो बरस तक मेरे पास हिन्दी का अध्ययन किया और तब से आप हिन्दी भाषा के प्रचार में तन-मन धन लगाकर पूर्ण परिश्रम करते आ रहे हैं। आप ने कई एक स्त्री-पुरुषों को हिन्दी सिखाकर आन्ध्र प्रान्त के कई स्थानों में 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' मद्रास, के परिक्षाओं के केन्द्र स्थापित किया और उसके तीनों श्रेणियों के परिक्षाओं में उत्तीर्णता कौशल प्राप्त कराया। आपने राज-मन्द्री में कुछ काल तक हिन्दी का छापाखाना खोलकर स्वयं हिन्दी सिखाने के लिये एक मासिक पत्र भी चलाया। इनके निःस्वार्थ परिश्रम से खुश होकर अनेकों ने इनको सोने की अँगूठिया व सोने के तकमें पुरस्कार रूप प्रदान किया है। इस उद्दान्त परिश्रम के साथ-साथ

आप ने फलस्वरूप प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों के अवलम्बन पर एक नवीन कथानक इस नाटक के द्वारा प्रस्तुत किया जिससे आपकी योग्यता व बुद्धिमत्ता का परिचय मिलता है। इसमें समयानुकूल कहीं कहीं श्री गोस्वामी तुलसीदासजी के रामायण में से कुछ चौपाइयां व दोहे उद्धृत किये गये हैं। मेरे ही पास शुरू से हिन्दी सीखकर इस नाटक की रचना की इससे इतनी योग्यता इनमें देख मैं फूला नहीं समाता और अपनी खुशी को शब्दों में प्रकट करने में असमर्थ हूँ। नाटक लिखने के उपरान्त इन्होंने इसे मेरे पास संशोधन के लिये रखा और मैंने भी समय का अभाव होते हुये भी यथा साध्य संशोधन भी किया। भाषा रोचक बनाने के लिये कोशिश व हिन्दी में प्रचलित उर्दू, अरबी व फारसी शब्दों का और मुहावरों का प्रयोग खासकर हमारे आन्ध्र देश वासियों की जानकारी के लिये किया गया है। महात्मा गांधी के कथनानुसार ग्रन्थकार का मुख्य उद्देश्य उन शब्दों का ज्ञान पाठकों को कराना है इसलिए कठिन शब्दों के माने और उनका प्रयोग समझना जरूरी है। इसके अलावा इसमें इस्तेमाल किये गये शब्दों के माने हिन्दी सीखने वालों की सुहूलियत के लिये एक शब्द कोष भी हिन्दी में और तेलुगू माने हिन्दी लिपि में लिखकर तयार किया है जो थोड़े दिनों में छापकर प्रकाशित किया जायगा। इस साहित्यिक नाटक को पढ़कर हमारे दक्षिण भारत भाई काफी फायदा उठा सकेंगे और आशा है कि वे इसके प्रचार की कोशिश करके लेखक का परिश्रम सफल करेंगे। किताब के संशोधन में कहीं त्रुटियां भी रह सकती हैं जिसके लिये विद्वज्ञ मुझे क्षमा करेंगे।

श्री-काशी।
ता० ३० मार्च सन १९४८ ई०,

डी० वी० शर्मा
(दुव्वूरि वेंकटेश्वर शर्मा)
बी० ए० एल० एल० बी०, वकील

वीर लव-कुश लव
हिन्दी साहित्य नाटक

पहला अङ्क

— मङ्गलाचरण —

श्लोक—वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मङ्गलानांच कर्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ॥
वामाङ्गे य च विभाति भूधर सुता देवापगा मस्तके।
भाले बाल विधुर्गलेच गरलं यस्यो रसि व्यालराट्॥
सोयं भूति विभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा।
शर्वस्सर्व गतः शिवः शशिनिभः श्री शङ्करः पातुमाम॥

दो०—श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुर सुधारि।
बरनउ कुश-लव विमल जस जो दायक फल चारि॥

❋ चौपाई ❋

संभुकीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपाकरि उमहि सुनावा॥
सोइ शिव पावन्हि को दीन्हा। राम भगत अधिकारी चीन्हा॥

नान्दी—

दो०—कलिमल ग्रसे धर्म सब गुप्त भये सब ग्रन्थ।
दंभिन्ह निजमति कलपि करि प्रकट किये बहुपंथ॥

सात द्वीप को जीतकर मान दान से पूर।
नल राजा प्रकट भये धीर वीर अरु शूर॥
वर बल से विधि नाम हो किया काम अति क्रूर।
कुश कुमार, लवने तभी किया मान मद चूर॥

[पट परिवर्तन]

पहला दृश्य

हस्तिनापुर में सभा मण्डप

(राजा नल, बीरसेन, नघुक, सर्वार्थदर्शी, खानखान बवण्डर और रक्तदष्ट आदि का पैठना)

नल—(वजीर से) हे अमात्यवर! आपकी वजीरी में सातों टापू काबू में आगये अब कोई कमी नहीं रह गई। अब द्यु लोक को भी कब्जे में कर लेना क्या लाजिम नहीं? तो भी आपकी तजवीज क्या है?

नघुक—शाहमशाह! ऐन यही है। सुरेश भी अनगिनित नृपतियों से और असुरों से कई बार मात हो चुका है। तब हम लोग क्यों नहीं उसपर फ़तह पा सकते? यदि वज्रपाणि को भी पराजित न किया तो सात टापुओं को फ़तह करके क्या किया? खामख्वाह यों करना ही चाहिये।

सर्वार्थ—जहाँपनाह! वे द्युलोकवासी अमर हैं। उन्होंने अमी पान किया है। उन्हें फ़तहयाब करना नामुमकिन है। आप कहेंगे कि क्या वह असुरों से नहीं हारा? वह दीगर बात है। उन्होंने ईशदत्त वर के बल से ऐसा किया। खुदा के फ़ज़ल के बिना पुरन्दर पर फ़तह पाना सुगम नहीं है। धरती पर उस सुरेश से बढ़कर शवाबी

एक-जन्मा अशख़ास मौजूद हैं उन्हें शिकस्त देकर अपने काबू में करना काबिले तारीफ़ नहीं है ?

नल—वजीरे आज़म ! मशविरा तो आपने बड़ी माकूल दी है। ब्रह्मास्त्र से भी मौत न होने का वरदान जिन्होंने हासिल किया वे वज्रपाणि को जीत सकते हैं। मुझे भी यह वरदानहासिल है। वृकोदर से तो बढ़कर देवनायक नहीं हैं। तब उसे कब्जे में क्यों नहीं कर सकते ?

सर्वार्थ—हे शाहमशाह ! मुझे तो पेश्तर ही मालूम था कि आपको रोकना मेरे काबू और वूते के बाहर है। आप चढ़ाई कर सकते हैं। पर मैं एक पशोपेश में हूँ कि हर एक मन्वन्तर में द्युलोक की व्यवस्था के लिये श्रीआदि विष्णु किसी एक सुरराव को मुकर्रर कर देता है। उस ओहदे का दावेदार वही शख्स है। अलावा इसके कोई ग़ैर शक्स अपने वर के कुव्वत से मस्त होकर उस सुरेश के तख्त को छीनने का कोशिस करे तो किसी न किसी तदवीर से श्रीआदि विष्णु अय्यार के मार्फ़त उसकी तौहीनी करके उसको कामयावी हासिल करने से बाज रखता है। तब यों ही अस्थाई चीज़ के खातिर अब लुभाव में पड़कर मौजूदा उत्तुङ्ग स्थल से भी हाथ धो बैठने की आशंका है। बाद में अफ़सोस करने से क्या फ़ायदा ?

नल—ऐ देवान ! आपके मनसूबे बेशक सही हैं। कोई भी बदफ़ैली अगर हम न करें तो वह रुतुबा हमसे कोई नहीं खरोंच सकता। आपके कहे मुताबिक हिरण्यकश्यप, बदमिजाज नहुष वगैरह बड़े-बड़े बहादुरों की तनज्जुली इसलिये हुई कि वे सब बहिर्मुख मादक प्रवृत्तियों में पड़ गये थे।

सर्वार्थ—(खीझ दिखाकर) सबही ने सद्विचार और धारणा से काम करने को ठानकर अपने वक्त में अमल किया ! सल्तनत का बुलन्द ओहदा हाथ लगने पर गरिमा में पड़ जाते हैं तब अपने

आपको भूलकर ओहदे के उसूलों की पाबन्दी नहीं कर सकते। बतौर मिसाल के हम गुजरे वक्तके वृत्रासुर, बलि वगैरह के इस्मशरीफ़ पेश कर सकते हैं। चुनांचे काकदांत के लिये बेकार कोशिस काहे का है? इस तरह देवदेव से झगड़ा मोल लेना वाजिब नहीं।

नल—हे सुधी! तुमने तो बजा फ़रमाया। उन लोगों के बारे में आप कुछ खास वजूहात पाइयेगा। जरा गौर कीजिये।

सर्वार्थ—बादशाह! हो सकता है! क्या हिरण्यकश्यप, राजाबलि, लंकेश, राजा नहुष और वृत्रासुर वगैरह हम लोगों से ज्यादे अक्लमन्द नहीं थे? क्या उस तख्त की वजह से उनकी सल्तनत भी गारत नहीं हुई? क्या यह आपकी दुर्ज्ञेय चेष्टा नहीं है? इसका अंजाम क्या होगा! अच्छी तरह सोच लेना चाहिये।

नल—ऐ दीवान! आपकी बात को बेतुकी नहीं कह सकता हम लोगों के अमल में किसी कदर भी जहमत की संभावना नहीं है। वे सब आधि में फँस गये और सल्तनत से हाथ धोया। हमें क्या पेच है? फ़रमाइये।

सर्वार्थ—हे नृपति! आपके फ़रमान का मुकाबला नहीं कर सकता और हुक्म की तामीली को खाकसार हमेशा दस्तबस्त है। लेकिन द्यु-लोक को फ़तह करना दुश्वार है।

नल—हे सर्वार्थ दर्शी! बस अब कान न हिलाना, अपने नाम की सार्थकता के लिये इसजङ्ग में फ़तह हासिल करने की काबिल मश-विरापेश करो और मुस्तैदी से कामयाबी के लिये कोशिस में लग जाओ।

दरवान—(झुककर सलाम करता है) खुदावन्द! गुसाईं नारदजी नाके के पास मौजूद हैं। ताबेदार हुजूर की अरहवना का मुन्तजिर है।

नल—खातिर पेशवाई से अन्दर लिवा लाओ।

दरवान—जो हुक्म सरकार। (जाता है नारदमुनि को लिवा लाता है) [नल आदि खड़े होकर सिजदा करके मनुहार देते हैं।]

नारद—(आशीस देता है) दिग्विजयमस्तु। तुम्हारा मकसद पूरा हो। मिजाज शरीफ ?

नल—(आसन दिखाते हुये) हे वीतरागी ! पधारिये (पाद्य, अर्घ्य, आचमन के लिये सामग्री प्रस्तुत करते हैं)

नारद—(आचमन करके) सबलोग तशरीफ रखिये (सब बैठने हैं)

सर्वार्थ—कोई अनोखी बात हो तो कान देने की ख्वाहिश हो रही है, निहोरा करता हूं, फ़रमाइये।

नारद—क्या कहनूत सुनाऊँ ! उनको तो सदैव बैरी की दहशत ही दिक किया करती है। किस वक्त कौन आकर उन्हें पदच्युत करेगा यही बात उनका दिल दहलाती रहती है। उस देवनायक को तो एक भी पुनीत निशा सोने को नहीं प्राप्त है। इस तरह के निशाचर पैदा हो रहे हैं जो तप करके पिनाकपाणि और विधाता को खुश करते हैं और युयुधान को जीतने के लिये वर ले लेते हैं। और उस पर हमला बोलते हैं। तब वह नारयण के पनाह जाकर किसी तरह अपना बोल बाला कायम रखता है।

नल—वह चक्रायुध पुरन्दर की इमदाद क्यों करता है ?

नारद—क्यों ? आपने नहीं सुना ? विष्णु का बड़ा भाई वज्रपाणि है। इसी से वह हमेशा अपने भाई की सहायता किया करता है और वह आश्रितों का पक्षपाती है। लेकिन अगर कोई शठ किसी दुर्भावना से उनकी पनाह में जाना चाहे और उनकी उपासना भी करे तो पुरः उनका धन-दौलत सब नोच लेता है और इफ़रात मुसीबतों में बोर देता है।

नल—क्या-क्या। चक्रपाणि का बन्धु पुरन्दर है ? सो कैसे ?

नारद—हे नल ! तुम्हारी शंका दूर करता हूं। सुर और असुरों का सिजरा बयान करता हूं कान धर कर सुनो। इसे मैंने अपने पिता जी से सुना था। सबसे पहले ब्रह्मा के मन से मरीचि, अत्रि, अङ्गिरा,

पुलस्त्य, पुलह, और कश्यप पैदा हुये। कश्यप से ही यह सारा खलक बना। दक्षप्रजापति भी ब्रह्मा का डॉवरा था। उनको तेरह कन्यायें हुई। उनके नाम अदिति, दिति, काला, दनायुज सिंहिका, क्रोधा, प्राधा विश्व, विनता, कपिला, मुनि, और कद्रुवा। बाद इसके सती और अश्विनी आदि अट्ठाईस कन्यायें पैदा हुई। इनके बड़े पराक्रमी पुत्र और पोते हुए जिनकी गिनती नहीं की जा सकती। हे राजन ! अदिति के गर्भ से त्रिलोकेश्वर धाता, मित्र, अर्यमा, इन्द्र, वरुण, अंशु, भग, विवस्वान, पूषा, सविता, त्वष्टा, और विष्णु पैदा हुये। इन्हीं को द्वादशादित्य कहा जाता है : सबसे छोटा होने पर भी अख्तियार में सबसे बड़ा विष्णु माना गया है। दिति को एकलौता पुत्र हिरण्यकश्यप हुआ। प्रतापी हिरण्यकश्यप के प्रह्लाद, प्रह्लाद के विरोचन, विरोचन के बलि उत्पन्न हुये। बलि को अनन्त पक्षयुक्त मशहूर महाकालनामी बाणासुर सम्भव हुआ। ये सब असुर कहलाये। इसी तरह सब अमर और असुरों की पैदाइश है। इस वास्ते विष्णु भगवान भली-भांति अजमाकर ऐसे वरदान देते हैं जिसका कि रोक-टोक नहीं है।

नल—तो क्या ब्रह्मदत्त वरदान में भी कोई बाधा है ?

नारद—(अपने मनमें) यह तो ब्रह्मदत्त वरदान ही से गुमान में आकर ऐसा कह रहा है। यह कुछ न कुछ गुस्ताखी जरूर करेगा। इसके इफ्तखार को टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहिये। (प्रकाश) हे राजा ! वृकोदर और वार्षीक्या मेरे वालिदैन नहीं हैं ? क्या मैं अन्यथा कह सकता हूं ? सुनो हिरण्यकश्यप को वर किसने दिया ? दैत्यराज रावण को बुलन्द ओहदा दिलानेवाला कौन था ? यह वरदायक खलखतदार ब्रह्मा मेरे पिता ही थे। उन सब वरों का नतीजा क्या हुआ ? वे सब क्यों हलाक और ध्वस्त हुये ? उनके अमल में अड़चन डालनेवाला कौन था ? हे राजन ! सुनो वह एक स्थितिकर्ता श्रीमन्नारायण ही है। तुम जानते ही हो कि भस्मासुर को महादेवजी ने वर दिया था। उसका

जाहिर फल क्या हुआ ? इतने मिसाल सामने रखकर भी तुम क्यों अन्देशा में पड़ते हो ?

नल—हे ब्रह्म ऋषि ! आपका कहना खरा है। प्रत्युत ऐसा भी है ! कि जगत पिता ब्रह्मा का आदेश पालन करने के लिये चौदह भुवन तो नित्य ही प्रस्तुत रहते हैं न ?

नारद—सो ठीक है पर पुरु जानने की इप्सा बेजा है।

नल—तब इस जहान में सारे जीव उनके वचन के आधीन हैं ?

नारद—(अपने मनमें) अबकी बार यह प्रतीत होता है कि इसके गरूर का कोई ठिकाना न रहा। किसी फरेब से इसकी अवनति दिखानी होगी। गुफ्तगू की रफ्तार ठीक चल रही है (प्रकाश) अक्सर विधि के वचन का पालन सबको करना होगा। चाहे वह अवतार पुरुष ही क्यों न हो ? जब तक ब्रह्मा का अधिकार मौजूद रहेगा तब तक लाकलाम उनके जुमलेफ़जूल नहीं जा सकते।

नल—हे मुनिवर ! अगर ऐसा ही है तो मेरा इरादा अमर लोक पर फ़तह हासिल करने का है। क्या यह मुमकिन नहीं ? आप जैसे त्रिलोक पूज्य और जानकार के सलाह के मुताबिक वर्तने को तयार हूं। मैं सात टापुओं का शास्ता हूं सो आप जानते ही हैं। मेरी मन्शा पूरी होने में क्या कसर है ?

नारद—(व्यंग भरी मुसुकान से) रस चूस लेने के पश्चात् गन्ने के सीठी के लिये तरसना कितनी अकलमन्दी की बात है ? इतना जिहन में रक्खो कि तुमसे पहले कितने ही ओजस्वी महीपालों ने उस शक्र पदवी को बेकार जानकर तज दिया। अब तुम इसके लिये कोशिस कर रहे हो, क्या यह उचित होगा।

नल—हे महात्मा ! आपके नाईं बुजुर्ग लोग ही बताते हैं कि वहाँ राज्यश्री नित्य नया शृँगार करके सम्पूर्ण कलाओं से दीप्तिक

होकर अपने स्वामि को लुभाये रहती है। ऐसे पद की कामना क्या सार रहित है ?

नारद—खासी अच्छी बात कही नृप श्रेष्ठ! लेकिन इन्द्रासन मिलना मुहिम है। निर्विघ्न हविष्य से शतयति पूरा किये बिना उसको नहीं पा सकते। चुनांचे तुम भी पहले शतयाग की पूर्ति कर लो।

नल—इसकी क्या आप जिम्मेदारी भी ले सकते हैं ?

नारद—आपने भी बड़ी माकूल बात पूछी। राजा बलि ने भी हजारों याग किये और प्रभूत द्रव्यदान दिया तब भी उसको क्या मिला ?

नल—हे मुनिवर! आपने बजा फ़रमाया। आप इस बात को मानने में इनकार न कीजियेगा कि चौदह भुवनों का खल- खतदार वृकोदर ही है। तब वर लब्ध मानव अपने मनसूबे को पूरा कर ही सकता है ? तो सतक्रतु सब बेकार है।

नारद—हे नृपति! तुम्हारी बात कुछ हद तक ठीक है। आप यह तो बताइये कि मेरे पिता ने क्या त्रैलोक्याधिपत्य भी प्रसादित किया है ?

नल—हे मुनिवर! ब्रह्मा ने मुझे ब्रह्मास्त्र से भी कजा का खटका न रहने का वरदान प्रसादित किया है। क्या ब्रह्मास्त्र वज्रायुध से बढ़कर नहीं है ?

नारद—(आपही आप) ठीक है लोग हमारे जैसे लोगों से राय करते हैं इसके उद्भव होने की बात अब चौदह तबक रोशन हो गई। अब कायल तो यह किसी तरह नहीं हो सकता। अब कोई षडयन्त्र रचना चाहिये। पुरन्दर की तो यह आरजू रहती है कि उसे किसी खतरनाक पेंच में मैं न डाल दूँ। लोग चाहे मेरा हेलव करें मुझे तो जमाना बेतार का तार कहता ही है। अब मौका अच्छा मिला। किसी चक्कर में इसको ऐसा रगड़ूँगा कि मेरी तबियत मस्त हो जायगी और इसको भी छटी का दूध याद आ जायगा। इसको अव्वाई श्रीरामचन्द्र

के खिलाफ उभाड़ूँगा। यह तो आतिशबाजी का अनार है और उधर वह परम शक्तिमान महाविष्णु का अवतार। इस साहि को उसका-कर रामचन्द्रजी से लड़ा दूँ तो ठीक होगा।

(प्रकाश) हे नरेश ! अगर तुम वाकई इन्द्र विजय की लालसा करते हो तो मेरे आदेश के मुताबिक चलो। पुरन्दर को इन्द्रासन पर मुकर्रर करने की आकांक्षा से ब्रह्मादि देवगणों से मिन्नत किये जाने पर अवधीश श्रीदशरथ के यहाँ चक्रधर ने अवतार लिया। रावणादि निशाचरों को मारकर सुरगणों के भय को मिटाकर त्रैलोक्य के शत्रुओं का नाश कर यशस्वी श्री रामचन्द्रजी ने इन्द्रासन उद्धार किया। जो इस समय सुप्रसिद्ध सरयूतट स्थित अयोध्या में अपने डाँवरे कुश लव और बिरादरान भरत, लक्ष्मण वगैरह के साथ आरामतलबी में मौज उड़ा रहे हैं। पाकशासन के ख्वाहिशों का ईफ़ा करनेवाले वे ही हैं। उनको पराभूत करके सुजस प्राप्त करने पर त्रैलोकाधिपत्य तुम्हारे बश में हो सकता है। तैंतीस करोड़ देवता कुल तुम्हारे अधीन होकर तुम्हारे बात पर चलेंगे। तब तो खामख्वाह पुरन्दर का तख्तेताऊस आपही आप तुम्हारे हाथ लगेगा। यदि बिरद चाहते हो तो मारामार अयोध्या को कूच करो और उन पर फ़तह पाओ। इससे तुम्हारी मुराद पूरी होगी।

नल—ऋषिवर ! आपने अच्छा याद दिलाया। पेश्तर भी मैंने इसकी उड़ती खबर सुनी थी। लेकिन कुछ इतमीनान नहीं हुआ। क्या था रावण को मारनेमें। वह तो वन्दर और रीछों की मदद से काम-यावहुआ। इसमें रामचन्द्र की बड़प्पन थी ?

वीरसेन—मैंने तो सुना कि उसने दरख्त के आड़ में दुबक कर बालि बन्दर को मारा था। वाकई तो बालि को मारने में कायरता और बेतरतीबी थी। इससे विषण्ण होकर वालि ने कहा कि 'अगर मुझे मारने के बजाय मुझसे कहे होते तो क्या मैं सीता जी को लाकर

हाजिर न कर देना ? बेगुनाह को लुककर मारने में क्या तारीफ ?' और भी कई खरी-खोटी सुनाया।

नारद—हे राव ! इसकी पूरी कैफ़ियत बयान करता हूँ। सारे सदस्य कान लगाकर सुनो।

बवण्डर—चूँकि आप मुनिवर हैं सत्य तो कहेंगे ही, लेकिन चिऊँटी का पहाड़ बनाकर तो बयान करेंगे न ?

नारद—भय्या ! यों कभी मत कहो। विश्वास रखो जो हुआ वहीं कहूँगा। सुनो ! बालि तो काफ़ी दत्त और दवङ्ग था। उसे वृकोदर का यह वर मिला था कि उसके सामने होकर अगर कोई लड़े तो उसका आधा बल बालि को मिल जायगा।

चुनांचे रामचन्द्र जी को उसके आँखों से ओझल होकर ही मारना पड़ा।

यह बात सही है कि बालि ने श्रीरामचन्द्र जी से धिक्कार देते हुए पूछा—

चौ०-"धरम हेतु अवतरेहु गोसाईं। मारेहु मोहिं व्याध की नाईं॥
मैं वैरी सुग्रीव पियारा। कारन कवन नाथ मोहिं मारा॥"

[तु० रा०]

श्रीरामने उत्तर दिया—

चौ०-"अनुज बधू भगिनी सुत नारी। सुनु सठ कन्या सम ये चारी॥
इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकइ जोई। ताहिबधे कछु पाप न होई॥
मूढ़ तोहिं अतिशय अभिमाना। नारि सिखावन करेसि नकाना॥
मम भुजबल आश्रित तेहिजानी। माराचहसि अधम अभिमानी॥"

[तु० रा०]

नल—श्रीराम के पैदा होने का कारण दशानन का संहार ही था न ? हाँ ! श्रीराम बालि को जब एक ही शर से मार सके तब रावण

के मारने में क्या कठिनाई हुई ? वालि तो रावण से कई गुना बलशाली था !

नारद—श्रीरामचन्द्रजी तो रावण को एक ही तीर से मार सकते थे लेकिन कारण उसका यह बताया कि—

छंद—"यहि के हृदय बस जानकी मम जानकी उरु वास है।
मम उदर भुवन अनेक लागत बान सब कर नास है ॥"

दोहा—काटत सिर होइहि विकल। छूटि जाइ जब ध्यान।
तब रावन के हृदय शर। मारहिं राम सुजान ॥"

[तु० रा०]

हे नल ! देखो एक बात और है। उस जंग में जितने बहादुर शामिल हुए थे उनका यश चारों ओर फैलना, भूभार उतारना और तवारीख में आना जरूरी था। निर्गुण परब्रह्म परमात्मा सब जीवों का नेता है। उसके लिए कोई काम दुशवार नहीं है। रावणादि असुरों को बरबाद करने के लिये मनुज रूप धारण किया है। हे राजन् ! और भी सुनो, इसके पहले का जिक्र सुनाता हूँ। पुराने जमाने में रावण ने जब अणरण्य को ठगकर मार डाला उसके लड़के ने घोर तपस्या की। जब उसकी तपस्या से संतुष्ट होकर आदि विष्णु श्रीमन्नारायण ने दर्शन दिया और उसपर प्रसन्न होकर वर मांगने को कहा—उस पर उसने यह वर माँगा कि उसे रावण के मारने की शक्ति मिले। तब विष्णु भगवान बोले कि रावण ने वृकोदर और शिवजी से मुँह माँगा वर प्राप्त किया है। उसकी मौत मेरे हाथ ही होगी जब कि मैं राजा दशरथ के घर जन्मलूँगा। हे राजा ! अब तुम समझ सकते हो कि श्रीरामचन्द्र कौन हैं।

बवण्डर—(उठके) तब उन्हें तो सृष्टिकर्ता के कलमा पर कायम रहना ही पड़ेगा न ?

नारद—इतना ही नहीं। पहले जब आपव तप कर रहा था तब मृत्युञ्जय से भेंट हुई और उसने कहा कि आइन्दा त्रेतायुग में रामचन्द्र के रूप में हरिका प्रादुर्भाव होने पर उन्हें उनके यहाँ पुरोहित के तौर पर रहने का अवसर मिलेगा और उनको ब्रह्मोपदेश देने की योग्यता प्राप्त होगी। इस ढंग पर श्रीविष्णु राम के अवतार में जाहिरा देख पड़ते हैं जिसको पराजित करने से सहस्राक्ष खुद-बखुद तावेदार बनकर रहेगा! अगर उससे तुम हार खाओगे तो भी कोई बट्टा लगने या नाक कटने की बात न होगी क्योंकि वे अवतार पुरुष हैं और तुम भी बहादुर हो।

सर्वार्थ—हे सन्यासी! श्रीरामचन्द्रजीके बारे में व उनके मुख्तलिफ रिश्तेदारों से वाकिफ़ होने की ख्वाहिश हो रही है।आपकी फ़जल हो तो कुछ फरमाइये।

नारद—बहुत खूब! श्रीरामचन्द्रजी के भाई भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न हैं और यमज औलाद कुश और लव हैं। तक्ष और पुष्कर भरत के, अँगद और चन्द्रकेतु लक्ष्मण के, सुबाहु, शत्रुघाति और यूपकेतुशत्रुघ्न के बेटे हैं। और जनक, केकय आदि सगे बन्धु व गह्वरवासी ऋच्छपति, बनैला सुषेण, हनुमान और अंगदादि भक्त हैं। सुग्रीव और विभीषणादि अहबाब भी हैं। उन लोगों की बहादुरी अनोखी है। ऋच्छपति के हाथ में कई कुंड मालू हैं। यह और मैं दोनों विधाता के मानसपुत्र हैं। जब सुरासुर ने समुद्र मथन किया था तब सुरों की श्रेणी में रहकर पहले-पहल इसी ने पेट भर सुधा पिया। लरिकाई में लरिक सलोरी करते-करते उदय मण्डल से अस्त मण्डल तक छलाँग मारता था। उन दिनो मैं एक बार ऋच्छ पतिने देखा कि सुरगण दहशत खाकर हाहाकर मचाते हुए पुकार रहे हैं और एक बुलन्द पहाड़ के नीचे जिसको कि असुरों ने उनके ऊपर दे मारा था, दबकर खतर नाक हालत में थे। उस समय सुरों को ढाँढ़स

दिलाते हुए वहां पहुँचा। और उस खौफनाक पहाड़ को अपने दोनों जान् से ठोकर मारकर हटा दिया जिससे वह पहाड़ तिनका तिनका होकर गिर पड़ा और सुरों की जान बच गई। उसी समय पहाड़ का एक कंगूरा उसके घुटने में चुभकर भीतर रह गया। इसके पहुंचते ही तमीचर भाग खड़े हुए। हे नल! इस जाम्बवान की करतूत जरा और सुनो। राम रावण की मारकुटाई में जब राम लक्ष्मण और उनके सारी टोली को इन्द्रदमन ने नागपाश से बान्ध दिया और राम लक्ष्मण को उठाकर ले जाना चाहा। तो उसीवक्त यह वहां पहुँच गया और इन्द्रजीत को ललकार कर कहा—अरे रदनीचर? मेरे जीते बचते तू इन्हें नहीं ले जा सकता। घननाद अट्टहास के साथ बोला—"अरे सठिया! तू अभी जीता है? तू ले, इस शक्तिशर से अपने कोबचा।" यों कहकर मेघनाद ने बाण छोड़ा। बाण के पहुँचते ही रीछराज डॉक कर उसे पकड़ लिया और उसीसे इन्द्रदमन को दे मारा। उस आघात से मेघनाद चीखता हुआ जमीन पर गिर पड़ा और बदहोश हो गया। तब मेघनाद को चींटी की तरह उठाकर रावण के पैरों पर फेंक दिया वह वर बल के जोर से जीता रह गया।

हे राजन! और भी मसल सुनो। यह रीछपति बड़ा विचित्र जीव हैं। वामनावतारमें श्री महाविष्णु ने राजा बलि की परीक्षा के समय तीनपग में ही (त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः) ब्रह्माण्ड को नाप लिया था। उस विराट स्वरूप के साक्षात्कार होते ही भालू-राज ने प्रत्युत्थान पूर्वक उनकी तीन बार परिक्रमा की। इसके अलावा वह काफी बुद्धि-शाली है वजीरी में उससे बढ़कर दूसरा नहीं हो सकता। वह सुग्रीव का अव्वल वजीर है।

सुषेण वानर नायक है। यह सुग्रीव का मामा और अमात्य है। हकीमी में यह अश्विनी कुमारों को भी मातकर सकता है। मुर्दों को भी जिला सकता है। कस में भी कुछ कम नहीं।

विभीषण क्या कम पराक्रमी है ? जङ्ग के समय रावण पर गदा की वार जब किया, रावण अचेत होकर छटपटाने लगा । यह भी वर प्रमाद है ।

अङ्गद वालिका फरजन्द है और इन्द्र का पोता है । बालि से पराक्रम में कम नहीं ठहरेगा । श्रीराम के कहने से वह दूत बनकर लंका में गया और वहाँ के सब निशाचरों के फक्र को चूर कर रावण के पुत्र नरान्तक को मार डाला और रावण के चारमुकुट राम के पास फेंक दिया । जङ्ग में भी हनुमान के बराबर जौहर दिखाया । और दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दिया । जङ्ग इसके लिये अठखेलियाँ हैं ।

सर्वार्थ—हे अमर श्रेष्ठ ! मरुत्वान कैसा वीर है ? वानर नायक सुग्रीव के मिजाज का तारीफ सुनना चाहता हूँ ।

नारद—सुग्रीव और लंकेश दोनों बराबर ओजवान हैं । हनुमान के बलकी सीमा कौन कहे । उसका बल उसी को ज्ञात नहीं । कोई भी शर उसे पीडा नहीं दे सकता । बालकपन में ही उसने जन्यपति को खाने का एक फल समझ निगलने के लिये त्रैलक्ष योजन उछल कर पकड़ लिया और उसको निगल ही रहा था कि सुरराज ने घबड़ा कर अपने वज्रायुध से खींचकर मारा जिससे वह बदहोश होकर एक पहाड़ के कँगूरे पर गिर गया । बेचारे का मुँह टेढ़ा हो गया । उसके पिता वायुदेव यह सुनकर इन्द्र पर नाराज हुआ और एक कन्दरा में जा छिपा । वायु के छिप जाने से सब कोई जालियों में फँसे मछलियों की भांति छटपटाने लगे और हड़प तड़पकर जान खोने लगे ।

तब त्रिदेव ने उसे खोज निकाला और उसके नाराजगी की वजह पूछकर कहा—तुम क्या चाहते हो ? वायुदेव ने तब कहा—कि मेरे पुत्र को ऐसा वरदान दीजिये कि वह अजर अमर होकर किसी के हाथ शिकस्त न खाय । तीनों देवताओं ने उसको यह बरदान

दिया। तब से यह अजेय कहलाने लगा। इससे समझ सकते हो कि कौन ऐसा हो सकता है जो कुलिश और ब्रह्मास्त्र लगने पर भी जिन्दा रह सके?

रणदृष्ट—मुनिवर! तो ब्रह्मास्त्र लगने से सभी मरते हैं न? ब्रह्मा तो शालिहोत्र हैं न?

नारद—सो ठीक है। हनुमान ने खुल्लम-खुल्ला लंका में तनहा जाकर सबको ललकार-ललकार कर मारा और अक्षय कुमार तथा देवान्तक का खातमा किया, बाग उजाड़ डाला, सारे हेमपुरी को फूँक कर राखकर दिया। यह तो ऐसा वीर है और श्रीराम का ऐसा परम भक्त है कि त्रिदेव व तैंतीस करोड़ देवता भी इसका कुछ बिगाड़ नहीं सकते।

वीरसेन—तो इतना बूता इसे कहाँ से आया?

नारद—मैंने सुना था कि असल में यह और षण्मुख दोनों ईश के फरजन्द थे। यह हनुमान हेतुवाद, आन्वीक्षिकी, नव-व्याकरण और वेद्य में पण्डित तथा उत्कृष्ट पुरुष है। इसने वेद का अध्ययन कलिन्द के यहाँ एकपाँव उदय मण्डल में और दूसरी अस्तमण्डल में रखकर सूर्य भगवान के चाल के साथ-साथ रहकर किया। शंकर के पास संगीत सीखा। अहा! राम-मारुती युद्ध का क्या परिणाम हुआ? उसका जिक्र क्या करें! उसमें भी परम भक्त हनुमान का पाबामजबूत ठहरा। याद रखो हनुमान को श्रीरामजी का भन्ना हो तो वह भूविपर्यय भी कर सकता है।

अब लक्ष्मण का हाल सुनो। इसने चौदह वर्ष तक बिना खाये पिये रहकर इन्द्रजीत का वध किया। कबन्ध के लम्बे हाथ को टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

भरत भी ऐसा ही पराक्रमी है। आपने सुना ही होगा कि संजीव

पर्वत ले जाने के वक्त भरत ने एक ही अमोघास्त्र से शैल सहित हनुमान को नीचे गिरा दिया।

शत्रुघ्न ने भी दस योजन लवणासुर का वध किया। शत्रुपक्ष का नाश करने में कुशल होने के कारण उसका नाम शत्रुघ्न पड़ा।

अब कुश लव का हाल सुनो। इन्होंने ऊपर के सब बहादुरों को हरा दिया। ये सब तरह के शस्त्रास्त्र का इस्तेमाल करना जानते हैं। और ये वाल्मीकि के साऊँ थे। तक्ष, पुष्कर, सुबाहु आदि अपने-अपने पिताओं के समान बलवान हैं। चुनांचे हे राव! उस राम को जीतकर चौदहों भुवन अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल महातल पाताल, भूर्लोक, भुवर्लोक, सुवर्लोक महर्लोक, जनलोक, तपोलोक, सत्यलोक सब अपने काबू में कर सकते हो। यही तुम्हारे लिये सुबुक रास्ता है।

सर्वार्थ—(अपने में) यह नारद तो मक्कार, हँसोड़, असहिष्णु और शंबरप्रिय है। नहीं तो क्यों ऐसा कजियादार युद्ध का प्रवर्तक बन रहा है? महाराज तो वर के घमण्ड से भरे हैं। नारद के कलमों में ढह गये। वे भी मेरी बातों को न मानेंगे। आफ़त का मौका आ गया। रामजी से वैर काहेका! क्यों ऐसी नादानी कर रहे हैं? नारद ने निहायत मुँह लगोई किया (प्रकाश) हे मुनिवर! क्या कोई भी ऐसा है जिसने शम्बर में रामचन्द्रजी को हराया?

नारद—(अपने में) अहो! यह तो राजा को किसी तरह पलटने को इङ्गित कर रहा है। भृकुटी टेढ़ी करके (प्रकाश) क्यों! वह तो प्रतिदिन जितेन्द्रिय और भक्त के हाथ हारते ही रहते हैं। इसमें कोई गढ़न्त नहीं है।

नल—आप लोग राम के भक्त होने के कारण उनको इतना प्रतिभाशाली बताया। हकीकत में वे इतने महात्मा नहीं थे। क्या

ऐहिरावण और मैरावण ने उनको बन्दी नहीं बनाया ? उनका वे क्या कर सके ? उनको बन्दरों ने ही तो छुड़ाया ?

नारद—खुल्लम-खुल्ला कहने में मेरे बराबरी का दूसरा नहीं मिलेगा। तुम कुछ भी कहो मुझे कुछ आना-जाना नहीं। श्रीराम के प्राण भक्त हनुमान और मैरावण की पत्नी चन्द्रसेना का गौरव बढ़ाने के लिये ही ऐहिरावण और मैरावण को नहीं मारा।

नल—(अपने में) इनमें से एक पट्ठा हनुमान ही एक बहादुर मालूम होता है। इसकी बहादुरी अधृष्य है। ब्रह्मा के वरदान से पूजित होकर मैंने इतने टापुओं पर कब्जा किया अब क्या वह राम मुझे हरा सकता है ? घने झाडखण्ड में रहनेवाले, संसार से विरत, हवा खाकर जिन्दगी बसर करनेवाले अप्रतिग्रही-मुनि को जङ्ग की कैफ़ियत क्या मालूम हो ? (प्रकाश) हे त्यागी ! श्रीराम के बारे में आप जितना बखान करते हैं उतना ही मेरे दिल में उनसे मोर्चा लेने की ललक हो रही है।

नघु क—हे तात ! देवऋषि के जुमले सही व दुरुस्त हैं। मैंने भी श्रीराम के बारे में वैसे ही विरद सुना था जैसे योगी फरमा रहे हैं। उनके सलाह के मुताबिक राम के ऊपर धावा बोलना अपना फ़र्ज समझता हूं।

नारद—कुमार ! तुम्हारी बहादुरी, तितिक्षा और धार्मिकता पर मैं खुश हूं। श्रुति कहता है कि "आराष्ट्रे राजन्य-इषव्यश्शूरो महारथो जायताम्" राजा के धर्म के मुताबिक ही तुम्हारी बुद्धि काम कर रही है। सहज ही में सात द्वीपों को जीत लिया। अयोध्या जैसे छोटे सल्तनत को यों ही छोड़ देना ठीक नहीं। जैसे भी हो अपनी ताकत का नमूना उनको दिखाओ, तुम्हारे सितारे चमक जायँगे। इसके लिये कुमक के वास्ते लश्कर और सामन्तों का इकट्ठा करना जरूरी है।

सर्वार्थ—(मन में) यह क्या ! अब खैरियत नहीं मालूम होती। शाहनशाह के दिमाग की चाल उलटी हो गई है। देवताओं का आश्रय छोड़ भेताल की इबादत में ही अपनी भलाई समझ रहा है। (प्रकाश) दुनियाँ में परम शक्तिमान, परमात्मा ब्रह्मादि देवताओं की भलाई के लिये और भू-भार हरने के लिये श्री रामचन्द्र का अवतार हुआ। उनका गुणगान श्रुति, स्मृति और पुराणों में किया गया है। यह सब जानते हुए उनसे वैर मोल लेना वाजिब नहीं। उन्होंने कभी हमारे काम में रोड़ा नहीं डाला। आशाइसको ठोकर मारकर अब यह आफ़त को बुला रहा है। क्या यह मुमकिन है कि हम इस जङ्ग में फ़तहयाब होंगे ? पितामह से वर पाकर कितने-कितने महापुरुष और निशाचर मिट्टी में नहीं मिल गये ? इन्द्रजीत का काकोला नागास्त्र क्या कारगर हुआ ? सब चीजों की कुछ हद होती है। इसके बाहर जाने में उसकी अवनति निश्चय है। कहाँ का वैनतेय, कहाँ की लङ्का। रामचन्द्रजी के प्रसाद से ही वह इतना काम कर सका। दर-असल राम श्रीमहाविष्णु का अवतार है इसमें कोई शक नहीं। गुजरे जमाने में पृथ्वी माता, ब्रह्मा, तैंतीस करोड़ देवता असुरों की बदचलनी से तकलीफ़ पाकर विष्णु के यहाँ पनाह माँगने गये। तब उन्होंने साफ़ कहा कि रामावतार में वे उन सब तकलीफ़ों को दूर कर देंगे। ऐसे महापुरुष के ऊपर धावा करना कोई अक्लमन्दी की बात नहीं है।

नल—हे अमात्य ? वह चाहे साक्षात् श्री महाविष्णु क्यों न हो ? अब तक जो गुफ़्तगू हुई वह तुमने सुना ही है। जीत ख्वाह हार जो होगा सो होगा। एक जगह दो बादशाह, एक ताले में दो कुंजी साथ साथ नहीं रह सकते। हमारे खानदान को दुश्मन के हाथ मार का खौफ़ नहीं है। अब यह तय हो जायगा कि शाहनशाह मैं हूँ या वह। अपने को जो वर हासिल है उसे जानकर भी क्यों सहमते हो ? अधूरे राज का शाहनशाह कहलाना मुझे पसन्द नहीं।

सर्वार्थ—उन विरञ्चि के वरों का भरोसा अब त्याग दीजिये महाराज।

नद्युक—शादी के वक्त में ही क्या कहीं नाते-नातका तय की जाती है? जङ्ग की खबर पाकर सुलह करने को पैगाम आवें तब? हमें यह सोचकर सिमटना नहीं चाहिये कि हम फतह न पावेंगे? क्यों खानखान?

बवण्डर—शाहनशाह! हुजूर के आफताबे हुकूमत चारों ओर इस कदर रोशन है कि परवरदिगार के सामने कोई भी उँगली उठाने की हिम्मत नहीं कर सकता। हुजूर के हुकुम का इन्तजार है। जिस वक्त चाहें हमारे लश्कर के हिम्मत का अजमाइश करके देख सकते हैं। हम लोगों के जीते जी हुजूर के सामने किसी दूसरे बादशाह का नाम फ़िदवी नहीं सुन सकता। हुक्म फरमाइये हुजूर!

सर्वार्थ—इतने उतावले मत होओ।

नद्युक—(बवण्डर से) ऐ नमखवार खानखान! अब हम चुप-चाप नहीं बैठ सकते वालिद के मुराद को पूरा करना होगा तुम तयार हो जाओ। और सारे सल्तनत में खबर भेज दो कि एक हफ्ते के अन्दर अपने अपने लश्कर के साथ अयोध्या पर कूच करने के लिये हाजिर हो जायँ।

सर्वार्थ—ऐ शाहजादे! इतनी जल्दी मत करो। आगा पीछा सोच लेना चाहिये।

नल—कूच बेशक होगा। सब सामन्तों को इकठ्ठा कर लो थोड़े ही अर्से में अच्छी साइत दिखवालो।

रणादृष्ट—पुरोहित को पुकारूँ हुजूर?

नल—जल्दी नहीं! दैवज्ञ से इतमीनान में दर्शनीय सगुन निकल-वाकर उपपत्तिपाना है क्योंकि श्रीराम मामूली राजा नहीं है।

नारद—राजन ! तेरे शौर्य धैर्य को देख मैं खुश हुआ। जगत् पिता ब्रह्मा तुम पर प्रसन्न हैं। और तुमको क्या चाहिये ? सोम वंशज भले और शरीफ़ हैं इसलिये कभी-कभी मिलकर कुशल हाल जानने की चाव से इधर याता-यात करता रहता हूं। कालातीत हो रहा है अब चलना चाहिये।

नल—हमारे पूर्व-पुण्य से हम पर आपकी हमदर्दी रहती है। आपके दर्शन से हम धन्य हुये।

नघुक—वीतराग-मुनियों के आगमन से अभ्युदय की सूचना मिलती है.

वीरसेन—ज्ञानी महोदय ! मेरी त्रुटियों को माफ़ कीजियेगा।

नारद—(उठकर) राजन ! अब मैं चला (सब उठकर प्रणाम करते हैं। नारद अशीस देकर चला जाता है)

❀ गाना ❀

नारद—

जग झूठा रे सारा सइयाँ, देख क्यों ललचाया।
संग संगाती सुख के साथी, झूठी ममता माया॥
माया रे, माया, माया रे, माया ॥ जग० ॥
बच-बच के चलना, पाप ने मोह-जाल बिछाया,
माटी में मिल जायगी तेरी, एक दिन कंचन काया।
काया रे, काया, काया रे, काया ॥ जग० ॥
कुटुम्ब कबीला बेटी बेटा, सपने की-सी छाया।
छाया रे, छाया, छाया रे छाया ॥ जग० ॥

[नारद का प्रस्थान]

सर्वार्थ—यह देव ऋषि तो मुनि के नाते पूज्य हैं। लेकिन यह तो ऐसा बेतकल्लुफ ऐरा गैरा और वादाप्रिय है कि इससे सदा जोखिम का अन्देशा रहता है। जहाँ जाता है कोई न कोई टण्टा खड़ा करके हट जाता है। यहाँ आकर झगड़े का बीजारोपण किया और सारे सामन्त और लश्कर को राम के हाथ सौंप देना चाहता है। राम के प्रति अपनी भक्ति-निरूपण में हमारे माथे सविनासुत को चढ़ाकर चला गया। इसमें एक बात का बड़प्पन है तो यही है कि कभी अलीक नहीं कहता।

नघुक—(कुछ भड़क कर) अमात्यवर्य ! आप निरे सठिया गये हैं। जईफी के साथ-साथ कुव्वत भी कम हो गयी, नहीं तो ऐसी बातें न करते, फिर कभी ऐसी बातें न कहियेगा।

सर्वार्थ—बेटा ! आपके अन्न जल से बना हुआ खून मेरे रग-रग में भरा हुआ है। और मैं इतनी उमर के बाद नमकहराम नहीं बन सकता। होनहार को सामने देखते हुये गुप-चुप बैठे रहना मेरा काम नहीं। नारद भी तो यही कहता है कि श्रीरामचन्द्रजी श्री आदि विष्णु के अवतार हैं। वे कभी हमें नहीं सतावेंगे। उनके गुरु महाज्ञानी आपव हैं। उनका काम कभी बेतुका नहीं होता। आपने सुना होगा कि असुरों का गुरु एकाक्ष है। वह मरकर खाक हुये मनुष्य को भी जिला सकता है। इसी शुक्राचार्य को मारने के लिये शंकरजी ने त्रिशूल ताना तो वह उनके पेट में घुसकर छिप गया। ऐसे गुरु के रहते हुये कोई असुर विष्णु भगवान से दुश्मनी करके नहीं बचा। यह भी आप लोग समझ सकते हैं कि मैं कभी मीठी छुरी की तरह पेट में काकोल भरके ओंठ में खाँड़ लगाकर चिकनी-चुपड़ी बातें करना नहीं जानता।

ववण्डर—अजीज देवानजी ! तंबीह तो ठीक है। जो तालेवर और ताकतवर हैं वह ऐश-आराम से अफ़र होकर ख्वाह फकीरों की नाईं निराकुल और निकम्मा कैसे बैठे रहेगा ? उसकी तरक्की क्या होगी ?

अमीर से अमीर राजा भी अपनी पूँजी न बढ़ावे तो चन्द ही अर्से में तिजोरी खाली होकर आफत में पड़ जायगा। लोकपों का निहाल होना बरबादी को बुलाना है। किसी को ताकत जानकर भी कान में तेल डालकर बैठा रहे तो मौका पाकर वह उसका खातमा कर सकता है। तब उसके काबू में रहकर, मजबूर हो बदनामी के साथ महसूल अदा करना पड़ेगा। चुनांचे हमेशा इर्द-गिर्द और नेकुगनबूद के शाहों को दबाकर हटिया हाथ में रखना चाहिये। क्षत्रिय का अखलाक जङ्ग ही है। खुद गरज कौन नहीं होता? संचय ही से सम्पत्ति बढ़ती है।

वीरसेन—ऐ खानखान! मैं भी तुम्हारी बातों को मंजूर करता हूं।

सर्वार्थ—हे शाह आजम! मुलाहिजा फरमाइये। अच्छे राव से झगड़ा ठाना। क्या लड़ने के लिये रामचन्द्र ही मिले? परशुराम ने जब हम पर हमला किया था तब हम सब क्या कर सके? उसी भार्गव को श्रीराम ने कैसे पराजित किया। खैर! मैंने अपने इल्म व ताकत के मुताबिक हर तरह से अर्ज फरमाया और मिन्नत करता हूं कि इस मौके पर झगड़े को बढ़ने से रोकें। आगे मैं तो आपका विनीत एवं आज्ञाकारी सेवक हूं। जो हुकुम दीजियेगा बजाऊँगा। श्रीरामचन्द्र को मामूली इन्सान मत समझिये।

नल—(खिसिया कर) हे दीवान! तुम्हें जो कहना था बेरोक-टोक कह दिया। उनकी ताकत को जो तुम पेश्तर से जानते थे सुना दिया। चाहे जो हो सूर्य वंश के मजाल को तो देखना ही होगा। बस अब तुम लाम को लैस कर हफ्ते के अन्दर कूच की तैयारी करो।

सर्वार्थ—जहाँपनाह! मेरे बेतकल्लुफ ईजाद को कमसिन और कम अक्ल की बातें समझकर गुस्ताखी माफ कीजियेगा, हुजूर के इताअत पर चलने को तैयार हूं।

नायक—शाहनशाह के सामने इस तरह बयान करनेवाले वजीर का मिलना नामुमकिन है। ऐ तोबा! उधर देखो! वह कौन आ रहा

है ? कुम्भकर्ण या कबन्ध ! (सब उधर देखते हैं कालाग्नि प्रवेश करके बादशाह को सलाम करता है)

कालाग्नि—उन दोनों में से मैं कोई नहीं हूं। पर हूँ रावण का अकारिब। आप लोगों के वहम की आवाज सुन मैं आया। मेरी आरज़ू जरा सुनिये।

नल—तुम कौन हो ? तुम्हारा नाम ? तुम क्यों आये ? और चाहते क्या हो ?

कालाग्नि—महाराज ! मैं रावण का रिस्तेदार हूं मुझे लोग कालाग्नि कहते हैं। मैं चाहता यही हूं कि जो लड़ाई आप राम से छेड़ना चाहते हैं उसमें आप का इमदाद करके राम व उनके भाई, रीछ और बन्दरों को चबाचबाकर अपने खानदान के दुश्मनी का बदला उनसे लूँ ।

सर्वार्थ—हे देवारि ! राम-रावण की रण-विभीषिका के समय तुम कहाँ थे ? और लंका को फूँक राख करनेवाले एकक हनुमान को क्यों नहीं रोक कर खा सके ?

कालाग्नि—दीवान जी ! उस वक्त मैं भूधर पर विकट तप कर रहा था। ब्रह्मा से वर पाने के पेश्तर ही मेरे राजा, रिस्तेदार और यार मर चुके थे। मेरे लौटने पर यह तबाही देखी। तब से राम के खातिर घात लगाकर फिर रहा हूँ। मुझे भी पितामह से वर मिला है कि देव, दानव, वानर, और नर से हार या मौत का खटका नहीं है। अगर आप उनको छोड़ भी दें तो भी मैं उन्हें तजनेवाला नहीं हूं। आप चाहें तो उनका राज्य भी दिला दूँ।

नल—शुक्रिया ! मैं वीर क्षत्रिय हूँ। ब्राह्मण नहीं कि किसीसे कुछ लूँ। हे ईठ ! तुम मेरे नायब होकर रहो।

कालाग्नि—हुजूर की आज्ञा आँखों पर। अपने सरदार और संघातियों के साथ व्यवस्था करके कूच के दिन हाजिर हो जाऊँगा।

नल—ठीक है।

[सलाम करके कालाग्नि का निष्क्रमण]

आज की बैठक खतम की जाती है। खानखान! उम्दे नजूमी से यात्रा का मुहूर्त ठीक करके कूच की जायगी। तुम लैस हो जाओ (वजीर से) वजीर! चलो चलें।

सर्वार्थ—जैसी आज्ञा (सब उठते हैं)

[यवनिका पतन]

दूसरा दृश्य

[जनानखाना। पहले मंजिल के बड़े कमरे में सती सुरुचि राजा की गोद में बैठी है। अँगराग आदि करती हुई।]

सुरुचि—हे पतिदेव! क्या बात है? आप आज ऐसे कान में उँगली देकर बैठे हैं? (संभ्रम से चीड़ और चोली सम्हाल कर) मुझ से कोई खता तो नहीं हुई?

नल—(चुम्मा लेता हुआ शिर और पीठ पर हाथ फेरता हुआ) पाकदामिनी! तुमसे और खता?

सुरुचि—सल्तनत के बारे में कोई बात है?

नल—और क्या हो सकता है? दयिता। राज्य भार हमेशा उत्तरदायित्व से भरा है और उसका अञ्जाम देना खतरे से खाली नहीं है। क्षत्रियों की जिन्दगी ही दुरूह है। मौका पाकर अमात्य भी सत्याज हो जाते हैं।

सुरुचि—हे प्राणेश! हमारे वजीर खतरनाक नहीं हैं। वे तो कई एक बेहतरीन इन्सानों में चुनिन्दा हैं। खैरख्वाही के अलावा कभी बदख्वाह न रहे। मातहती में रहते रहते किसी बात पर हठ किया हो तो उसे माकूल सचिवों की आदत समझना चाहिये। आनेवाली आफतोंको दूरंदाजी से हुजूर के रूबरू आगाही के तौर पर पेश करके

अपने नमकहलाली का नमूना रखते हैं। खैर ! ऐसे कृतज्ञ सचिव से वैमनस्य रखना आपको शोभा नहीं देती।

नल—महर ! तूने बजा फ़रमाया। लेकिन इसके माने यह नहीं है कि भावी झंझटों की ताकीद करने से बदजबान बातें सुनी जाँय ?

सुरुचि—हे प्रियवर ! जब उसे निश्चयात्मक बुद्धि और सच्ची दृढ़ता होगी तभी तो वह खुल्लमखुल्ला आपको सुना दिया और अपने कथन से विमुख नहीं होता।

नल—हो सकता है। चन्द दिन हुए नारद मुनि आये थे। उन्होंने बताया कि राजा रामचन्द्र पर फ़तह पाये बग़ैर शाहनशाही के हक में कसर रह जायगा। मैंने अपने सब सिपहसालारों से भी राय कर ली है और उनको लैस होने की हुक्म दे दी। तभी से ये वज़ीरे आजम जङ्ग से बाज रखने की कोशिश कर रहा है।

सुरुचि—हे बालम ! जिस काम से वह इतनी खिलाफ़त करता है उसके करने में आपको क्या उजलत है ? सातों तडाओं पर अख्तियार जमाना यह बहादुरी किसी गिनती में नहीं है ? रामचन्द्र तो श्री विष्णु का अवतार माना जाता है न ? तो उससे तनाजा कभी कोई मोल लेता है ?

नल—(सुरुचि को चिमट कर अदना बोसा लेकर) ऐ जानी ! तुम भी यही कहती हो ? उन्हें जीतकर उनसे महसूल न लिया तो हमारे नाम पर धब्बा लगेगा।

चौ०—"अहो मोह महिमा बलवाना।

नारि सुबाहु सत्य कवि कहहीं। अवगुण आठ सदा उर रहहीं।

साहस अनृत चपलता माया। भय अविवेक अशौच अदाया।

रिपुकर रूप सकल तै गावा। अति विशाल भय मोहिसुनावा।"

सुरुचि—(आत्मगत) महा मुनि नारद भी कोई बात तय करके नहीं गये। इससे कुछ दहशत हो रही है और आँच की संभावना

मालूम हो रही है। मेरे दक्षिन कुछ अभिभूत हो गये हैं। अब याद पड़ता है कि मुनिराज ने जाते वक्त मुझे भी दर्शन देकर कहा था कि किसी न किसी ढङ्ग से पति के साथ तू भी जंग में जाना। न मालूम इसका क्या आशय हो सकता है। कुछ अजनवी बात जरूर होने वाली है। इसलिये पिया के साथ जङ्ग में जाने का उपाय करना चाहिए। (प्रकाश) प्रभो कूच का वक्त कब तय किया ?

नल—एक हफ्ते के अन्दर आचार्य से दर्शनीय मुहूर्त दिखलाकर निश्चय किया जायगा।

सुरुचि—आराति तो त्रिलोक विजई है। उसने रावण को जीता। इस जङ्ग को देखने के लिये सुरगण आसमान में वलाहक के आड़ से हवाई जहाजों पर बैठकर आयँगे मुझे भी देखने की लालसा बढ़ रही है। मुझे भी आप के साथ ले चलिये।

नल—हे कबीला! तुम क्या कह रही हो ? इसको तुम त्योहार मानती हो ? या समारोह ? प्रबल दुर्द्धर्ष रणक्षेत्र देखने का कुतूहल क्यों हो रहा है ? वहाँ तो सुर्ख लोहू से भरे हुए गार भीलों के बराबर जिसमें मक्खन वा फेनी के समान वपा और कटे हुए धड़ व टूठ, निकली हुई अँतड़ियाँ सेवार या मृणाल सा तैरते हुए दिखाई देंगे। वहाँ तुच्छ वपुरी, भूत, प्रेत, पिशाच, बद्ध ब्रह्मराक्षस, यक्ष, यम-दूत, स्याकिनी, डाकिनी आदि झोंटिग विकराल शकल में खप्परों से लोहू पीते हुए मुँह बदकाकर नाचते खरोचते माँस के टुकड़ों को उछाल उछाल कर गेंद की तरह खेलते हुए नजर आवेंगे। वहाँ तो मुर्दाओं का सूबा बना रहेगा। तुम तो उसे देखकर क्या सुनकर ही घबड़ाकर बेहोश हो जाओगी। वह तुम्हारी जैसी जनानखाने में रहनेवाली स्त्रियों के लिये विहार थल नहीं है। अरीबावली, कैसी पागलपने की बात कर रही हो ?

सुरुचि—हृदयेश ! आप को प्रभुमान कर आपके लिये अपनी

जान तिनके के समान न्योछावर करने वाले बहादुरों के लिये यह त्योहार सा है। क्या उनकी बहादुरी देखने काबिल नहीं है ? अदने डरपोक और भगोड़ दुनिया में अजस और बाद में दोजख पाते हैं। मैं भी कुछ गुमराहों का बध करके अपनी हाथ की सफ़ाई दिखाऊँगी। मेरे लिये फिक्र करने की कोई जरूरत नहीं। अपनी इज्जत व जानकी भली-भाँति हिफ़ाजत कर सकती हूँ। मुझे भी ले चलिये नाथ ! ताकि मैं भी नारदादि मुनियों की और ब्रह्मादि देवताओं को पूजा और श्रीरामचन्द्रजी का दिव्य दर्शन कर सकूँ और आपकी विजय देख सकूँ।

नल—(सुडौल मुसुकान से) हे चारुहासिनी ! योषितों को रणमें ले जाना उचित नहीं। इत्तिफ़ाकन फ़तह के बजाय शिकस्त हुई तो तुम्हारी हालत कितनी नाजुक हो जायगी। गगनचुम्बी अट्टालिकाओं के अतरथ्याविरोध में रहने वाली ललनाओं को आतताई व स्वेच्छा चारियों के अश्लील और वासनायुक्त चेष्टाओं से खतरा होने की अन्देशा है। अपनी जान हथेली पर लेकर चलने वाला क्षत्रिय भी अबलाओं का आबरू भङ्ग नहीं देख सकता। प्रियतमें यह जिद छोड़ दो। अतिचारी और मायावी बन्दरों की बुद्धि व चाल समझना मुहिम है। इधर तुम जैसी मृदुल ललनाओं का सौन्दर्य ! न जाने क्या होगा ! क्या तुम सोचती हो कि वहाँ भी परिधि के अन्दर ही रह सकोगी।

सुरुचि—बेशक नाथ ! आपने जो फ़रमाया वह सर्वथा सत्य है। हुजूर का मुखालिफ़ श्रीराम तो एक पत्नी व्रत पालक हैं ! वह तो परस्त्री सहोदर हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के रहते कोई उनके तरफ से क्या औरतों को बुरी नजर से ताक भी सकेगा ?

नल—(विलास से सुरुचि के कंधेपर हाथ डालते हुए) प्रेयसी राम को औरों के बनिस्बत कुछ माना भी जा सकता है ? लेकिन

और तो वही बन्दर और वही भालू हैं। क्या तू वालि को नहीं जानती वह भी तो बन्दर ही था बन्दर। बन्दरों को भी वाजिब व ग़ैरवाजिब का कुछ ख्याल हो सकता है? वे तो अंत्यज और लम्पट हैं।

सुरुचि—महबूबा! तो क्या मुझे अपने साथ न ले जाइयेगा? सिपहसालार शहीद बलवान और बेदाग हैं क्या उनका खानखान शिवपुत्र विशुद्ध वरुआ नहीं है? तन्तिपाल ऋच्छपति हमारे वृकोदर का डांवरा नहीं है? क्या वे कभी बेकायदे चलेंगे? वीरपत्नि कैकेयी और रति के माफ़िक मैं भी आप को तनहा नहीं छोड़ सकती वहाँ चल कर आपके जय के लिए खुदा की इबादत करूँगी।

नल—सती! अनिल-सुत स्नातक ही है। दुनिया उसे ब्रह्मचारी तो कहती है उस बन्दर ब्रह्मचारी को सहस्रमर्कट कहने से माकूल होता। इधर देखो! पण्ड और स्नातक को गार्हस्थ के बारे में क्या मालूम? वे भले मानस का ठट्ठा उड़ाने में अपनी सिफ़त समझते हैं।

सुरुचि—निकृष्ट विचारों से आप क्यों उनकी अवज्ञा करते हैं? हनुमान से बढ़कर आबरू दार कोई बताइये। उसे तो ऋष्यश्रृङ्ग की तरह स्त्री और पुरुषों का अन्तर ही ज्ञान नहीं। हाँ नाथ! यह तो बताइये कि हनुमान क्यों स्थिर स्नातक बना? और हमारे पूज्य चतुरानन की अर्चना करना लोगों ने क्यों तज दिया?

नल—हाँ! हनुमान से पूज्य और पराक्रमी कोई नहीं है। वह बालकपन से ही असंभ्रांत था। डरपोक सुग्रीव ने हनुमान को नज़रबन्द रखने के लिए यह प्रतिज्ञा कराई कि मैं शादी कभी न करूँगा; तभी से सुग्रीव के साथ रहता है। अब ब्रह्मा का इतिहास सुनो—

एक बार विष्णु भगवान और ब्रह्मा में तनातनी चली कि दोनों में कौन बड़ा है। झगड़ा निपटाने के लिये शङ्कर भगवान के पास गये।

तव शङ्कर जी ने कहा कि दोनों में जो पहले हमारे चरण या मस्तक का पता लगाकर आवेगा वही वड़ा माना जायगा। इतना कह वे अन्तर्धान हो गये। श्री विष्णु चरणों का पता लगाने गये मगर विफल होकर लौट आये। ब्रह्मा ने सिर का पता लगाने की बेकार कोशिश की मगर एक केवड़े के फूल को ऊपर से गिरता हुआ देख, उसे रोककर मालूम किया कि वह शंकर जी के जटाओं से छूटकर गिर गया! तव ब्रह्मा ने उसे अपनी तरफ़ से इस वात की गवाही देने पर मजबूर किया कि वे शंकर के सर का पता लगा सके। फ़िर जब मामला शंकर जी के सामने पेश हुआ तो श्रीविष्णु की सत्यता और ब्रह्मा की कारस्तानी का पोल खुल गया। उसी वक्त शङ्कर जी ने यह शाप दिया कि ब्रह्मा पूजा से वंचित रहेगा। और वह केवड़े का फूल भी पूजा के काम में इस्तेमाल नहीं किया जायगा। यही वजह है कि यहाँ ब्रह्मा की पूजा मन्दिरों में नहीं होती।

सुरुचि—(मुँह बनाकर नाराजगी के साथ भौं टेढ़ी करके) ठीक है। पर मेरे आने में क्या रोक टोक है?

नल—(सोचकर) हे रोहिणी जैसी सुन्दर सती! नाराज़ न हो। तुम्हें अवश्य ले चलूँगा। दर्शन भी कराऊँगा। अपना लाड़ला वीर नद्यु कन्रणका अगुआ है। सर्वार्थदर्शीके अलावा और सब लोग वखुशी तयार हैं (सुरुचि को पास खसोट कर) हे छवीली! तुम जीती और मैं हारा। अपनी कनीजों के साथ मुस्तैद हो जाओ आधीरात बीत गई। पुर रक्षक क्याकर रहे होंगे देख आऊँ।

सुरुचि—(खुश होकर) हे प्राणेश! आप कितने अच्छे हैं? आपके सुभागमन तक अपने कुल देव चतुरानन की अर्चना करती रहूँगी।

[यवनिका पतन]

तीसरा—दृश्य

(वशिष्ट की झोपड़ी के करीब राह में)

सुमंत्रि—(अपने मन में) कौन सी ऐसी बात है जो आज इतनी जल्दी विज्ञ आपव जी को बुलाने के लिए श्रीरामजी ने मुझे भेजा ! सती साध्वी सीता, भक्ताग्रगण्य भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्नादि सहोदरों के साथ राज्यलक्ष्मी की वृद्धोपाय करनेवाले मंत्रिमंडल से परिवृत्त हनुमज्जांववदादि अनुचर सहित, उनके पद्चार भी न सहने वाले पुत्र संतान सहित श्रीरामचन्द्रजी, सकलैश्वर्य विभूषित राजा को आज किस बात की कमी हुई ! कुछ न कुछ संभावी है। चाहे जो हो, राजाज्ञा का पालन ही फ़र्ज़ है । गुरुदेव की झोंपड़ी भी नियर आया (दरवाजे पर जाकर) मुनिवर ! मुनिवर ! (पुकारता है)

देवी अरुंधती (भीतर से) कौन है ?

सुमंत्रि—गुरुमां ! वन्दना ।

अरुन्धती—आओ बेटा, बैठो ! बहुत दिनपर आना हुआ । सब राजी—खुशी तो हैं ? कैसे आना हुआ ?

सुमंत्रि—आप के आशीश से सब खैरियत हैं माँ । गुरुदेव को राम जी ने याद किया है ।

वशिष्ट—(भीतर से) अच्छा चलो आते हैं ।

[यवनिका पतन]

अङ्क—दूसरा

पहला दृश्य

[श्री रामजी का दर्बार]

[रामजी तख्तेताऊस पर बैठते हैं. भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, कुश और लव, तक्ष, पुष्कर, अंगद, चन्द्रकेतु, सुबाहु शत्रुघाति, यूपकेतु तथा सुमंत्रिआदि मुसाहिब अपने अपने आसन पर विराजमान हैं।]

श्रीराम—हे तात ! मुझे निशीथ में एक दुस्वप्न हुआ। तबियत कुछ घबड़ा रही है, होनहार क्या है मालूम नहीं।

लक्ष्मण—हे भय्या ! क्या हुआ ? क्या ख्वाब देखा ?

श्रीराम—आज तड़के ही यह ख्वाब आया कि हम सब बिरादर और सीता............

लक्ष्मण—बस बस ! और व्याख्यान कि कोई जरूरत नहीं। अन्योन्य वियोग के सितारे जम गए। मुझे भी इसी किस्म का स्वप्न आया था लेकिन इसलिये जाहिर नहीं किया कि बेकार का अफ़सोस और तरद्दुत होगी। अभी कोई जहमत सिरपर पड़नेवाली है।

भरत—हम लोगों के बेकार व्याकुल होने से क्या फ़ायदा ? होनी होकर ही रहेगी।

लव—ख्वाब से भी खौफ का अन्देशा है ? क्या आपको इतमीनान है ? कौनसी मुसीबत आयगी ?

श्रीराम—लल्ला ! यूँ न कहो। उसका नतीजा कुछ जरूर होगा और उससे आइन्दे की बलाओं की सूचना मिलती है।

(आपव और वामदेव का आगमन। आननफानन आवभगत करके उनको आदाब करते और पधारने के लिए श्रीराम आसन दिखाते हैं)

श्रीराम—गुरुदेव ! आप इन आसनों को शोभित कीजिये। अहो भाग्य ! सुअवसर पर आपके दर्शन हुए।

वशिष्ठ—(वशिष्ठ और वामदेव आशीस देकर बैठते हैं) [वामदेव से वरूथ में] रामचन्द्र के निर्याण का समय करीब आ गया। इसी की ताकीद हो रही है। अभी इन बातों को प्रकट करना उचित नहीं। आइन्दे के लिये एक दो जुमलों से आगाह करना काफी होगा। (प्रकाश) हे राम ! मेरे बुलाने का कारण मालूम हो गया। व्याकुल होने की बात कुछ नहीं है। तुम्हारे स्वप्न से कुछ संकेत मिलते हैं। लेकिन इससे विशेष खटका न होगी। एक छोटे से बखेड़े की उम्मीद है।

लक्ष्मण—(बीच में रोक कर) क्या ! अभी जङ्ग हम लोगों से किनारे नहीं रहना चाहती ? उसकी चरमावस्था कब आयगी ?

वशिष्ठ—(आश्वासन देते हुये) हे वत्स लक्ष्मण ! यही आखिरी कश्मकश है। इसमें विजय होने पर अमर हो जाओगे। सारे भू साम्राज्य पर उद्दाम होकर चक्रवर्ती बनकर अधिकार कर सकोगे !

भरत—गुरुदेव ! क्या अभी भी इस कदर दुश्मन मौजूद हैं ? युवान को रक्त पातही ध्येय है ? विधि ने इस जाति को पैदा ही क्यों किया ? यदि किया भी तो इस जाति ने कौन सी गुस्ताखी की थी कि इससे चिढ़कर ऐसा काम इसे सौंपा ?

वशिष्ठ—श्लोक-अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्रसुप्त विवसर्वतः।
तत: स्वयंम्भूर्भगवान् व्यक्तो व्यंजयन्प्रजा ॥
महाभूतादि वृत्तौजा: प्रादुरासीत्तमोनुद: ॥

(श्रुति) ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीत् बाहूराजन्य: कृत: ऊरू तदस्य
यद्वैश्य: पद्भ्यागुम् शूद्रो अजायत।

यह जगत् आदि में अप्रज्ञान (अप्रत्यक्ष) अलक्षण, अन्धकार मय था। तर्क रहित अविज्ञेय (जानने के अयोग्य), चारों ओर से शांति नींद में सोये हुए के समान था। इसके बाद स्वयंभू भगवान प्रजा को व्यक्त अवस्था में लाता हुआ स्थूल रूप से प्रकाश करता हुआ अन्धकार को दूर करके प्रकट हुआ। पञ्चमहाभूत यानि पृथ्वी, आप तेज, वायु, आकाश, से चारों तरफ घिरा हुआ था।

उस स्वयंभू भगवान की हम सब प्रजा व संतान हैं। उसके न कोई माता है न पिता! संतान होने के नाते स्वयं भगवान का प्रेम हम पर है। उसके लिये हम सब एक समान हैं। किसी के ऊपर कीना (द्वेष भाव) उसको नहीं है।

उसके मुखसे ब्राह्मण, बाहुओं से क्षत्रिय, ऊरुओं से वैश्य, और पद से शूद्रों का जन्म हुआ। इस प्रकार चातुर वर्ण का प्रादुर्भाव हुआ यानी चारोंवर्ण भगवान के शरीर के रूप माने गये हैं। शरीर की रक्षा के लिये जिस प्रकार भुजाओं की आवश्यकता है उसी प्रकार क्षत्रिय जाति रक्षा के लिये निर्माण किया गया है। इस लिये संतों की रक्षा और दुष्टों का दमन क्षत्रिय का धर्म है। जो चीज दूसरी जाति के लोगों को संभव नहीं होती उसे क्षत्रिय जाति जङ्ग के द्वारा प्राप्त करती है। रण रङ्ग में जो अपना जान निसार करता है वह वीरलोक पाता है। रण जीतकर भुवनेश्वर कहलाते हैं और ऐश-आराम पाते हैं। चाहे वह मरे वा जिये उसे सुख ही सुख है, द्विजों की हालत न्यारी है। उनको श्रुति, स्मृति, पुराणादि के पठन, पाठन से द्युलोक की प्राप्ति होती है। इसके साथ साथ यह नियम भी है कि उनको आराम शून्य होकर मोहमाया को जीतकर तपस्याग्नि में अपने चोले तपाकर काँटा सा बना देना पड़ता है। ऐहिक सुख से निर्लिप्त रहते हैं। इसी लिये आकबत में जगह पाते हैं। इसमें अगर वे कभी कोई त्रुटि कर बैठें तो तपोवृद्ध होने पर भी नष्ट हो जाते हैं। सृष्टि-चातुरी उनके बनाये रङ्ग

विरङ्ग इनसान जानवर, परखेरू, कीड़े व सारे कुदरत की कारवाई में देख पड़ती है। यही उस भगवान का खेल तमाशा है।

चौ०—भलेउ पोच सब विधि उपजाये। गनिगुन दोष वेद बिल गाये।
कहहिं वेद इतिहास पुराना। विधि प्रपञ्च गुन अवगुन साना।
दुःख सुख पुण्य पाप दिनराती। साधु असाधु सुजाति कुजाती॥
दानव देव ऊँच अरु नीचू। अमिय सजीवन माहुर मीचू॥
माया ब्रह्म जीव जगदीसा। लच्छि अलच्छि रङ्क अवनीसा॥
काशी मग सुरसरि क्रमनासा। मरु मालव महिदेव गवासा॥
सरग नरक अनुराग विरागा। निगम अगम गुन दोष विभागा॥

दो०—जड़ चेतन गुन दोष मय, विश्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि विकार॥

[तु. रा.]

इस से यह स्पष्ट है कि हमें अपने अपने कायदे के मुताबिक चलना चाहिये !

लक्ष्मण—हे महामुनि ! यह तो बताइये कि मानव जन्म पाकर भी फिर से जन्म लेने की कौन विधि है ?

वशिष्ठ—हे लखन ! सुनो। इसका मादा बताता हूं। ये सब जीव अपने अपने कर्म के मुताबिक मरते व जन्म लेते रहते हैं।

"कर्मणा जायते जन्तुः कर्मणैव विलीयते।" कर्म से प्राणी पैदा होते हैं और कर्म ही से मर जाते हैं।

ये सब कीड़े मनुष्य जन्म पा सकते हैं और वे मानव अपने किये के अनुसार कीड़े, कुत्ते, सुवर या अन्य पशु, पक्षी के जन्म लेते हैं। उधर देखो ! वहाँ एक गधा चर रहा है। तुमने सुना होगा कि महादानी बादशाह बलि अपने कर्मों के अनुसार कुछ काल तक गधा बन कर विचरता था।

भरत—हे ब्रह्मऋषि ! आपके वचन सर्वथा सत्य हैं, क्षत्रिय को वीर स्वर्ग की प्राप्ति होती है और महीसुर अपने मन्त्र व ज्ञान बल से महानन्द प्राप्त कर सकता है ! क्या दोनों बराबर हैं ?

वामदेव—तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मैं दूं। प्रत्येक मानव जाति के आहार व्यवहार के नियम अलग-अलग बने हैं। उन्हीं के सत्व, रज और तमोगुण वृद्धि के ऊपर ज्ञान का विकास निर्भर है। ज्ञान से ही महानन्द पा सकता है।

भरत—हे मुनि ! "अपुत्रस्य गतिर्नास्ति" कहा गया है क्या यह ठीक है ?

वामदेव—भय्या ! इसमें कुछ भेद है। केवल पुत्रोत्पत्ति से ही परिस्ना नहीं मिल जाता ! यह बात शश-श्रृंगवाद के समान है। लोग घमण्ड के साथ कहते हैं कि मुझे तीन पुत्र और चार पुत्री है। मुझे क्या कमी है ! अर्थात् वे आशा रखते हैं कि वे सब स्वर्ग पा जायँगे। लेकिन उनका ऐसा सोचना गलत है। असल में तो मनुष्य अपने धार्मिक प्रवर्तन से भले या बुरे फल पाता है। जैसे—

श्लो०—धर्मोहितेपामधिको विशेषो ।
धर्मेणहीनाः पशुभिः समानः ॥

पिछले पुण्य पापों का नतीजा कोष्ठ के मुताबिक हरेक को भोगना पड़ता है। इस लिये जन्म सार्थक करने के लिये इस जन्म में तप और दान करना जरूरी है (जैसे सम संतान) लेकिन पूँजीवान जप-तप से मोक्ष नहीं पा सकता जब तक कि वह दान न करे। जैसे...

चौ०—पैसा पैसा करते रहते। जोड़ जोड़ धन धरते॥
खाते नहीं पेट भर कबहूँ। दाने बिना तरसते॥
दान पुण्य से कोसों भागे। अन्त नरक में पड़ते॥
पैसा पैसा करते रहते। जोड़ जोड़ धन धरते॥

इसके अलावा एक बात और है। एक ही के औलाद में अपने अपने तकदीर के मुताबिक एक फ़कीर तो एक अमीर, एक सुखी तो एक दुःखी एक गृहस्थ और दूसरा ब्रह्मचारी होता है! सब एक सा नहीं रहते।

संसार में जो मनुष्य विषयों को छोड़कर बेखटके विचरता है उसीका जीवन सुख से व्यतीत होता है और जो विषयों में फँसा रहता है उसे जन्म मरण का दुःख भोगना पड़ता है! हमेशा अपनी पेटकी चिन्ता में फिरते रहते हुये कीड़े और चिऊँटी आदि भी मरते खपते रहते हैं। अतएव संसार में विषयों से मुक्तिपाना ही मनुष्यों के लिये यथार्थ सुख है। ब्रह्मचर्याश्रम से गृहस्थाश्रम बेहतर है! पर मेरे न रहने पर मेरे कुटुम्बी लोग किस तरह निर्वाह करेंगे! यह चिन्ता निस्तार चाहने वाला व्यक्ति न करे। अपने कर्मों से जीव खुद पैदा होता, बढ़ता, सुख दुःख भोगता और मरता है। कर्मों के तेज से ही वह माता पिता के संग्रह किये हुये अथवा अपने उपार्जित धन से अपना निर्वाह करता है। पूर्व संभव में जिसने जैसा कर्म किया है उसी ढङ्ग से विधाता उसकी जीविका निर्दिष्ट कर देता है, अतः सबका निर्वाह अपने अपने कर्म के मार्फ़त होता रहता है। मनुष्य जब खुद मिट्टी के पिण्ड के समान और पराधीन है तब उसे कुटुम्बियों के पालन करने की चिन्ता करना बेकार है। जब तुम अपने कुटुम्ब की रक्षा करते रहते हो और बीच में कुटुम्बियों की मृत्यु हो जाती है, जब तुम परिवार का भरण पोषण पूरे तौर से नहीं कर पाते बीच में ही उनको छोड़कर संसार से चले जाते हो, कुटुम्बियों के मर जाने पर जब तुम उनका दुःख सुख भोगते रहते हो; तब उनके सुख दुःख को उनके भाग्य के अधीन समझकर अपने कल्याण की चिन्ता करो। संसार में कोई किसी का नहीं है। इसको अच्छी तरह ध्यान में रख कर मोक्ष प्राप्त करने की तरकीब करना चाहिये। जब तक मनुष्य

अपने कुटुम्बियों का भरण पोषण कर सकता है तभी तक उसके मित्र, जातिवाले, पुत्र, स्त्री, और सेवक आदि उसके अनुगत रहते हैं, अतएव योग का मार्ग छोड़कर परिवार के पालन करने की चिन्ता करना अकारथ है। माता पिता से परलोक का कोई काम नहीं निकलता। मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार ही फल भोगता है। डाँवरा, भाई, जोरू और दोस्त आदि सब सोने की रेखा के बराबर देखने में तो सुडौल हैं। किन्तु उनके जरिए परलोक में आराम मिलने की कोई संभावना नहीं है। पूर्व जन्म के शुभ-अशुभ कर्म रूह के साथ रहते हैं। आत्मा कर्मों के अनुसार फल भोगने के लिये बुद्धि को अनेक कर्मों में लगाती है। जो मनुष्य सहायवान और कर्मशूर हो कर काम करता है उसका कोई काम बेकार नहीं होता। जैसे किरणें सूर्य से और आशा मनुष्य से कभी अलग नहीं होती वैसे ही सफलता एकाग्र चित्त, उद्योगी व धैर्यवानों को नहीं त्यागती। आस्तिकता, उद्योग, गर्व, उपाय और अक्ल इनके जरिये जो काम किये जाते हैं वे कभी नष्ट नहीं होते। गर्भ में जाते ही अपने पूर्व जन्म के शुभाशुभ कर्म प्राणी के साथ हो लेते हैं। जब पृथ्वी में फिर पैदा होता है उसके पूर्व ही पहले जन्म का वृत्तान्त भूल जाता है। जैसे हवा लकड़ी के बुरादे को उड़ा ले जाती है वैसे ही अनिवार्य काल जीवन को दूसरे लोक पहुँचा देता है। मनुष्यों को पूर्व जन्म के शुभाशुभ कर्मों द्वारा रूप ऐश्वर्य, विद्या पुत्र, पौत्र आदि प्राप्त होते हैं।

श्लोक—"वजस्तिष्ठन्यदैकेन गच्छति ॥" यथा तृणजलूकै वंदेही कर्मगतिंगतः। स्वप्ने यथा पश्यति देहमीदृशं, मनो रञ्जेनाऽभि निविष्टचेतनः॥

जैसे-तृण-जलौका नामक कीट दूसरे तृणकों पकड़ कर पहले तृण को छोड़ता है अथवा चलते समय मनुष्य एक पैर को पृथ्वी पर रखे रहता है और दूसरे से आगे बढ़ता है उसी प्रकार जीव कर्मों द्वारा

प्राप्त देह को स्वीकार करता है। जाग्रदवस्था में मनुष्य जिन वस्तुओं को देखता अथवा सुनता है वेही वस्तुयें उसके मनमें जम जाती हैं, जिससे स्वप्न में उसे उसी प्रकार का शरीर दीख पड़ता है और यह जान पड़ने लगता है कि यथार्थ में मैं ऐसा ही हूँ; परन्तु जागने पर वह सब भूल जाता है। इसी प्रकार एक भाई रङ्क होने पर भी दूसरे की पूँजी से निकाल कर अपने भाई के भरण-पोषण के लिये धन देने का मन नहीं करता क्योंकि पहले जन्म में वह एक डाँगर था! और यह तो एक कीड़ा। परस्पर प्रिय भाव इसी से स्थिर नहीं हो सकता। यही दशा जीव की भिन्नभिन्न शरीरों में होती है।

यही उपदेश धर्म के जानकारों में श्रेष्ठ राजा जनक पञ्चमुख से सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ।

भरत—तो मरते ही लोग क्या वन जाते हैं? मरते ही उन्हें लोग यहाँ क्षार कर देते हैं स्वाह गारों में गाड़ देते है। ऐसी हालत में ऐश वा दुःख भोगने वाले कौन हैं? ये भोंटिग कौन हैं? यहाँ पितृ श्राद्ध करने से उनको क्या मिलता है?

वामदेव—हे बेटा! तुमने गुप्तभरा सवाल पूछा। इसी के बारे में मातलिने मुद्गल ऋषि के पूछने पर यों कह सुनाया कि इन्द्रपुर और नरक में जाने वाले अपने-अपने कर्म के मुताबिक यातना-शरीर से सुख और दुःख भोगते हैं। और उसके बाद भूतल में दैनंदिन जन्म लेते हैं। कुछ काफ़िरों का मत है कि पृथिवी, आप, तेज, वायु और आकाश के द्वारा पाचों प्राण याने प्राण, अपान, व्यान, उदान, समानासप्राण एक शरीर में प्रवेश करते हैं जो किसी एक नाम पर अपनी जिन्दगी बिताता है। फिर मरने पर वे प्राण उन्हीं पंचभूतों में मिल जाते हैं। असली बात यही सच है कि जीव बारम्बार जन्म लेता है, पुण्य और पाप कमाता है तथा उन्हें भोगता है! हरएक को श्राद्धादि कर्म शास्त्र विदित जरूरी है जिसका फल पञ्चभूतों के जरिये

पितृलोक में पितृ-देवताओं को उनके खानदान के नाम पर मिलता है और उनको तृप्त करता है। इसीसे उनसे आशीष भी मिलता है।

देखो ये भूत, प्रेत, पिशाच इसलिये पैदा होते हैं कि जब मरते समय अपने परिवार पर या पूँजी पर इच्छा रहते हुए जीव का अन्त हो तो उसे इस चोली में जन्म लेना पड़ता है। और वह कामरूप पाकर अपने घरके या किसी व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। उसको जब यहाँ के मोह माया से विराग होता है तब वह परलोक सिधारता है। लेकिन ब्रह्मा जीव को पैदा करते ही उसका भाग उसके कर्मानुसार लिख देता है।

भरत—हे विज्ञानी! इस जहान में जन्म लेना ही गुनाह है। अदने को भी इस कर्म भूमि से छुटकारा होकर अजन्मा होने का कोई चारा है तो बताइये।

वामदेव—क्यों नहीं? कलियुग में आइन्दा मानवों के मुमुक्षु प्राप्ति के लिये भागीरथ ने बड़ी मेहनत व तकलीफ उठाकर सुरसरि को पृथ्वी पर लाया और बताया कि इसमें जो स्नान करेगा उसका पाप घट जायगा। और त्रिशूल-स्थित काशीपुरी में कोई मौत पावे तो वह कितना ही गुनहगार हो, मोक्ष पायेगा। यही शिवजी का वरदान है। काशीपुरी पञ्चक्रोश आवरण के बीच स्थित है। उसमें तेंतीस करोड़ देवता, ब्रह्मा और विष्णु के साथ, निवास करते हैं। वहाँ के निवासी पुण्यात्मा होते हैं। पूजापाठ या गंगा जी में नहाते वक्त इस पवित्र पुरी का संकल्प भी इस प्रकार करते हैं, "असीवरुणयोर्मध्ये, आनन्दवने, महास्मशाने, गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते, भागीरथ्याः पश्चिमेतीरे, उत्तरवाहिन्यां, ब्रह्मनालयोर्मध्ये विश्वेश्वरादि त्रयत्रिंश-त्कोटि देवताः गोब्राह्मण हरि, हर गुरु चरण सन्निधौ।" इससे यह स्पष्ट है कि काशीपुरी की महिमा अपरंपार है। शिवजी ने कहा है, "काश्याम् मरणान्मुक्तिः।" दूसरी जगह शरीर छोड़ने वाला, सिवाय

रामेश्वर के, उस पद को नहीं पा सकता जो यहाँ मृत्यु पाने वाला पाता है। इस वास्ते प्रत्येक आदमी को वहाँ जाकर पवित्र गंगा में स्नान करके अपने जन्म को सार्थक बनाना चाहिये। दूसरी जगहों में स्थाई धर्म कार्य जैसे सराय, कुआँ, प्याऊ, पाथेय, मन्दिर और वृक्ष आदि की स्थापना करने से भी मनुष्य को परमार्थसिद्धि मिल सकती है।

श्रीराम—हे मुनिश्रेष्ठ! अब तो संग्राम से विमुख होना चाहता हूँ। क्योंकि जी आजिज्ञ आ गया है। मेरे मन में समत्वभाव की वृद्धि हो रही है और अभिचार से मन दूर हटता जा रहा है। निस्पृह रहने की अभिलाषा जोर पकड़ रही है।

वशिष्ठ—हे सूर्यकुलतिलक माधो! तुम्हारा विराग कालोचित ही जान पड़ता है। जर्रे जर्रे में सर्व-व्यापक परमात्मा का अनुरूप पाया जाता है! योगाभ्यास से उसकी साधना सुगम है और ऐसी इच्छा होना भी उत्तम काल के सुख-संचय का द्योतक है।

राम—हे निर्लिप्त! आप की आज्ञा हो तो योगाभ्यास करते हुये समाविस्त होऊँ।

दर्बान—(आकर झुक के दंडवत करता है) हे प्रभो! हस्तिनापुर से सुमुख नामक बसीठ आया है। क्या आज्ञा है?

लक्ष्मण—(रामकी ओर देखकर उनका संकीर्ण-संकेत पाकर) उसे समाह्वान करो।

दर्बान— जो आज्ञा! (झुक कर प्रणाम करता है और जाकर बसीठ के साथ प्रवेश करता है।)

सुमुख—(आतेही) हे महाराजाधिराज! हे गुरुदेव और मुसा-हबों! हमारी वन्दना स्वीकार हो।

लक्ष्मण—आओ, उस आसन को ग्रहण करो और अपने आने का मन्तव्य सुनाओ।

सुमुख—हे राजन ! मैं हस्तिनापुरवासी शाहनशाह नल का सफ़ीर बनकर आया हूँ। मेरे शाह क्रौंचद्वीप से लेकर जम्बू तक सातों द्वीपों में भूलोक पुरन्दर बन, अब तक कोशल को छोड़, सारे अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, काश्मीर, काँभोज, सौवीर, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, मगध, मालव, नेपाल, भूपाल, पांचाल, गौलमलयाल, सिंहल, द्रविड़, द्राविड़, नाट, कर्नाट, कर्वाट, मर्वाट, पानाट, पांड्य, पुलिन्द, कुक्कुर, कुरुगांधार, हूण, दशार्णव, सूर, सेन, टंकण, कोंकण, मत्स्य, मद्र, पार्श्व, घूर्जर, यावन, आन्ध्र, जाल, विदर्भ, विदेह, वाह्लीक, बर्बर, केकय, कुंतल, किरात आदि देशों पर अधिकार जमाके राज्य कर रहे हैं। उन्होंने एक मकसद से मुझे आपके पास भेजा है।

श्रीराम—क्या वे कुशल मङ्गल तो हैं? उनके विशाल यश का हाल मैंने भी सुना है। कहो, कैसे याद किया?

सुमुख—आपकी मेहरबानी से सब दुरुस्त हैं। मेरे शाहने हुजूर की ख़ैरियत तलब की। और आपके आलीशान सवाब की तवारीख सुन आपके पास एक छोटा सा सन्देशा भेजा है जिसे अर्ज करूँ तो आपको कोई उज्र न होगा।

श्रीराम—ठीक है कहो क्या बात है?

सुमुख—हमारे यशस्वी बादशाह ने आपको यह इत्तला भेजी है कि उन्होंने ब्रह्मास्त्र से भी कजा न पाने का वरदान हासिल किया है और उसके जोर से सात द्वीपों पर फ़तहयाब होकर सब से कर वसूल कर रहे हैं! इस लिये उनका लोहामान लिया जाय और आप भी उनको महसूल अदा करने की मंजूरी दें नहीं तो वे लेही लेंगे। आप लोग इस पर ग़ौर फ़रमाकर माकूल उत्तर देंगे।

श्रीराम—अच्छा !! ऐसी बात है !! (स्वप्न को याद करते हुये कुछ सोच में पढ़ते हैं)

लक्ष्मण—(आश्चर्य प्रकट करते हुए) हे गुरुवर ! यह शाह ! यह कहाँ का ! हमारे अश्वमेध याग के वक्त यह कहाँ था ?

वशिष्ट—हे लखन ! उतावले मत होओ । उस समय यह उत्तर में भिल्लुराज और दस्युओं को जीतने गया था ।

शत्रुघ्न—अहहा ! ये नल महाराज कौन है ? कृतयुग का राजा नल तो नहीं है ? अगर वही है तो क्या अभी तक सच-मुच जिन्दा है ?

वशिष्ट—यह नल भी उसी तन्तु का है । लेकिन सतयुग के निषिधाधिपति नहीं है । वह तो वीरसेन का बेटा सोमवंश का उत्कृष्ट रतन है । चिरन्तन परम साध्वी सती दमयन्ती का स्वामी है । यह राजा नल पुरुकुत्स खानदान का अपत्य है परम पतिव्रता सुरुचि का प्राणेश है । इसने दुश्मनों से निर्भयता की वरोपपत्ति ब्रह्मा से पाई है । और ब्रह्मास्त्र से भी इसको मृत्यु नहो है । इसने सातों द्वीपों को जीता और एक बलशाली राजा बन गया है ।

श्रीराम—(सुमुख से) हमारे पूर्वजों ने कभी भी महसूल नहीं चुकाया । अब खामखाह हमको देने की क्या पड़ी है ?

लक्ष्मण—हे सुमुख ! देवदेव सहस्राक्षको जो लोक कण्टक दशानन और उसके भाई और डांवरे इन्द्रजीत व सिपहसालार अतिकाय महाकाय ने बारंबार पराजित किया था, ऐसे कुल असुरों को उनके लश्कर सहित श्रीराम चन्द्रजीने नाश किया । अब यह नल प्रतापी राम से दुस्मनी करना चाहता है ! उसे नहीं मालूम कि जो उसके पास है उससे भी हाथ धो बैठना पड़ेगा । क्या वह इतना ख्याल नहीं कर सक्ता कि उसके पुरखों ने हमारे पूर्वजों के हाथ शिकस्त होकर बेकार की कोशिश क्यों तज दिया ?

भरत—हाँ सही है ! यह तो उसके लिये ग़ौर करने की बात है कि मौजूदा ऐश को खतरे में डाल कर बेकार की उम्मीद में अपने काल को बुला रहा है ।

शत्रुघ्न—यह यों ही जान पड़ता है जैसे चोर उलटा कोतवाल को डाँटे। अब तक हम लोगों को माल गुजारी न देकर हमही से उलटा कर माँगने चला।

सुमुख—हे उत्कृष्ट प्रभु ! ब्रह्मदत्त वर की जोर से सब टापू को फ़तह कर हमारे शाहमशाह अब युद्ध से निवृत्त हो सम्राट बन गया। उनका सामना किसी ने नहीं किया; अगर किया भी तो पराजित हुआ। अकारथ गारत के नतीजों से बचकर समर्थता से निस्पृह हो सब राजा हमारे बादशाह को बराबर कर अदा कर रहे हैं। वे तो दुश्मनों से अड़ कर भिड़ने वाले हैं। उनसे मुख़ालफ़त करने में आपकी सलामत नहीं। आप तो शरीफ़ हैं। हमारे राजा भी ज्यादा कर न लेने की वजह से सब लोग उनका दुलार करते हैं। इसलिये मेरी मंशा है कि आपस के आदमियों को नुकसान न पहुंचे।

कुश—(क्रोध से लाल होकर) हे अनाड़ी सुमुख ! अब गोलमाल की बातें मत करो और अपनी तकरीर बन्द करो। तुम तो निरे हर-कारा हो न कि हम लोगों का राजधर या सलाहकार। सीधे तुम कान दबाकर बैठो। अपना बुरा भला हम खुद सोच सकते हैं।

सुमुख—टीकैत जी ! आप लोगों को राय देने की मुझे क्या ताक़त है ? मैंने तो गुजारिश की है आप की राय अगर खिलाफ़ हुई तो दुनिया में ऊधम मच जायगा और सब गरीबों की मुफ्त में तबाही हो जायगी। मैं तो एलची हूँ। दोनों तरफ़ के भलाई का रास्ता सुझाना सौर आइन्दे की जहमतों की ताकीद करना मेरा फ़र्ज है (राम से) हुजूर ! क्या परवानगी है ?

लव—यह बात है भय्या बशीठ! मैं तो और कुछ समझ रहा था। बस तवारीख बन्द करो। काफ़ी सीट चुके। यह सब चौपट होने के लिए शुरू हुआ है। अगर तुम्हारा राजा ढप्पू बाहादुर है तो यहाँ भी कोई कम नहीं है। हम लोगों के पास भी काफ़ी, माकूल और आतिस

औजार मौजूद हैं। तुम्हारे बादशाह और उनके कुल शेखीले लश्कर के छक्के छुड़ाने में तनिक भी देर न लगेगी। याद रखो अयोध्या के राजाधिराज के बाहुबल को अभी मोर्चा नहीं लगा है। तुम्हारे राजा की चतुराई समझ लिया गया! अब तुम अपने राजा से कहो कि यह कफ़स में बन्धे हुए केसरी के बच्चों के अयाल खरोंच के दरवाजा खोल कर भागना कोई लड़क-खेल नहीं है। हमलोगों को छेड़ना नागिन की दुम कुचल कर भागना है!

वशिष्ट—हे चार श्रेष्ठ! तुमने जो उल्लेख किया वाजिब है पर जो जिन्स अपना नहीं उसके लिये लालच करना चटोरपन है। तुम्हारे राव ने सात टापुओं को फ़तह किया यदि कोशल बच गया तो उसके बिना उनका कोई हर्ज भी नहीं है। उससे उनके कमाये हुए खितावों में कोई कमी न होगी। तुम्हारे राव को यह अतितृष्णा क्यों हो रही? अपने सल्तनत के परिवृत्त राज्यों से कर लेकर परितोष नहीं होता। इन्होंने कभी तुम लोगों के काम में परिवारण नहीं किया। इन लोगों में यह सिफ़त है कि निरे दुर्मतियों का संहार करके सन्तों की हिफाजत करते हैं। तुम्हारे सल्तनत से इन्होंने शुल्क तो तलब नहीं किया। यह निर्द्वन्दी राम औरों के प्रयोजन में खलल डालने वाला नहीं है। ऐसे राम से दोस्ती की गोटी बैठाकर तुम्हारा राव नफ़ीस गुजारा कर सकता था। लेकिन खिलाफ़ इसके सोये हुए शेर को जगाकर अपने सिर बला मोल लिया है।

कुश—(घिन दिखलाते हुये) ऐसे कम्बख्त राव से दोस्ती करना नीच कुक्कुर को तख्तेताऊस पर बिठाना है। यह वीर हम लोगों से लोहा लेगा? खैर उसकी कुव्वत देखी जायगी। उसकी महात्वाकांक्षा उसके पतन का द्योतक है। हे सुमुख सुनो! करदेना तो दूर रहा इस प्रस्ताव ही से हमें घृणा हो रही है। हम भी एक बार यह देखना

चाहते हैं कि तुम्हारा राजा कैसे 'कर' लेगा। हम गाफिल नहीं है जो होगा देख लेंगे। अब तुम तसरीफ ले जा सकते हो।

सुमुख—हे हुजूर आला! मैं सच कहता हूँ कि दर-असल हम लोगोंने अपनी हुरमत के लिये हरचन्द हिकमतों से अपने राव को समझाया बुझाया पर उन्होंने एक न मानी! मैं तो मुलाजिम हूँ। उनके हुक्म की तामीली करने आया हूं! जङ्ग की बरबादी मुझे पसन्द नहीं। और मैं डाम भी नहीं हूँ! चुनांचे मैं और वजीर आलम सर्वार्थदर्शी अपने ओहदों से इस्तीफा देना चाहा। पर एहसान—फ़रामोशी के लिए परवरदिगार के वास्ते अपनी जान गँवाने पर तैय्यार हुये।

वशिष्ट—सर्वशास्त्रपारङ्गत, त्रिलोक पराक्रम, गतागतज्ञानी, रण-घाय हनुमान की क्या राय होगी!

श्रीराम—हाँ! हाँ! (हनुमान को याद करते हैं और इतने में "हरे! हरे!" कहते हुए हनुमान का हाजिर होना और रामजी का पैर पकड़ना।)

वशिष्ट—हे दक्ष हनुमान! आज सप्तद्वीप विजई नल के पास से हमें कर अदा करने की माँग है। वरन् जङ्ग की तयारी की इत्तिला लेकर यह दूत आया है। श्रीराम तो रण विमुख हैं! अब क्या करना चाहिये! तुम माकूल मशविरा देने में माहिर हो।

हनुमान—(मुस्कुराकर) पूर्वापर ज्ञानी, आपके अभिज्ञता के सामने मेरे जैसे कुन्द मिजाज बानर क्या अर्ज कर सकता है? मैं हुजूर का खिदमतगार हूँ। प्रभु की आज्ञा हो तो एक बूँद लोहू नीचे गिरे बिना मुखालिफ को लाकर आपके पग पर रख सकता हूँ!

श्रीराम—(विहँस कर) हे अञ्जनी-सुत तुम्हारी! सच्ची बहादुरी हम भूले नहीं हैं। तुम न होते तो हम लोग कभी के मरे होते। अब इस मौके पर नीके विचार बताने में तुम सयाने हो।

हनुमान—(सिर खुजलाता हुआ सोचता है) हाँ प्रभो ! पेंच सुलझ गया । सब काज का भार कुमारों के हाथ में है । अतः उन्हीं के ख्याल के अनुसार अमल-दरामद किया जाय । आप का निरीह रहना ही बेहतर है ।

वशिष्ठ—(कह कहा लगाकर हँसते हैं) हे वायु-पुत्र ! तुमने अच्छी मशविरा दी । हे कुश ! बताओ तुम्हारी तजवीज़ क्या है ?

कुश—गुरुवर ! यदि मरियल भी कर माँगे तो क्या पराभूत होकर कर देना होगा? यदि देना भी चाहें तो क्या हमारी कुल मर्यादा में आप जैसे बुजुर्ग उचित समझेंगे ? क्या हम उसके कब्जे में होकर अपने खानदान की इज्जत में बट्टा लगावेंगे ? हम तो खुदमुख्तार रहना चाहते हैं । हम इतने अक्षम नहीं हैं ।

लव—हे त्यागी पुरुष ! (नाक भौं चढ़ाके) मैं बन्धु के कहे का ताईद करता हूँ । उस वर के घमण्ड से आगा-पीछा बिना सोचे ऐसा आदेश भेजता है ? (क्रोध से लाल होकर और खाप से चम चमाती तलवार झट खींचकर) इतना रश्क ! इतना अभिमान ! क्या वह हमारे बाहुबल को अभी तक नहीं पहचाना ? दिखादेंगे बचा को उसका वर और उसकी मरदानगी । मोर्चे में पल भर भी न टिक सकेगा । देखेंगे कि वह वृकोदर, जिसके वरदान की शेखी पर इतना अन्धा हो गया है, कहाँ तक उसका बचाव करेगा ! हमारा एकबाल उसकी अकड़-तकड़ को चूर चूर कर देगा ? इसके सिर पर झोंटिग सवार हैं । उस शैतान को मेरी तलवार एक ही वार में साफ़ कर देगा । हमें रत्ती भर भी हिचक नहीं है । जाकर राजा से कहो कि अब बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी ? बेहतर होगा कि वह दुम दबाकर भाग जाय । मैं एकाधिपत्य ही पसन्द करता हूँ ।

तक्ष—वह शायद ख्याल करता है कि उसका खबर पाकर हम लोग अजोध्या छोड़कर भाग जायँगे । जिस प्रकार अपने अपने नाश

के लिये ही बिच्छी गाभिन होती है, ईख और केला फरने लगते हैं वैसे ही उसके नाश के लिये ही तुम्हारे राव के दिमाग में यह फितूर पैदा हुआ।

पुष्कर—(भौं टेढ़ी करके उछल कर) भय्यो ! बेशक हम बच्चे ही इस राव की धज्जियाँ उड़ा देंगे उस मतवाले कम्बख्त के लिये हमारा कुठार काफी है। अभी सामने होता तो उसके धर्रे उड़ जाते; बड़ा पराक्रमी बनकर आया है ! लल्लो-चप्पो बात करने के लिये बड़ा भारी दूत को भेजा है। वह नहीं जानता कि प्रचण्ड पराक्रमी होने पर भी कोई सूर्यवंशी कभी उसको महसूल न देगा ? हम तो कर मांगने वाले की मूँछ उखाड़ कर रख देंगे। देना तो दूर रहा, अब उसी से लिया जायगा।

अङ्गद—अहो ! एक ब्रह्मास्त्र की धौंस से हमको डराना चाहता है ! यह ठीक ऐसा ही है जैसा कि उकाब को रूकके बच्चों से डराना है। इसके इफ्तखार को अपने शरों से चूर-चूर कर दूँगा।

चित्रकेतु—मेरे ताऊजी और चाचा को भी घर बिठाये हम बच्चे इसे दोजख भेजकर जहान को और चतुरानन को हमारा मजा दिखाएँगे। मालूम होता है कि उसका रग-रग मेरे हाथ में चूर होना चाहता है।

सुबाहु—बड़े बिरादर ! इन बातों से क्या नफा है ? काम कर दिखाना ही उमदा होगा। हमसे 'कर' लेने के बजाय उसे नाक रगड़ना पड़ेगा। उसका नतीजा यही होगा कि एक चिऊँटी के डसने से नेस्तनाबूद हो जायगा।

शत्रुघाति—दादा ! दस दिन से मेरे दक्षिणांक फड़क रहे हैं। मैंने भी सोचा कि किसी त्यौहार का बुलावा आनेवाला है। आज अच्छी खबर मिली। मेरे शरासन में मोर्चा लग रहा था, निषङ्ग में अकारण खड़खड़ाहट मच रही थी और अपने आप शर बाहर उछल

उछल कर निकल रहे हैं। मैदान में आने पर उस राव को ताव-भाव मालूम होगा। अभी तो वह घर बैठे हवाई किले बाँध रहा है। उसको मालूम न होगा कि सूर्यवंशी क्षत्रिय, आग, सर्प और ब्राह्मण में छोटे बड़े का फ़र्क नहीं है।

यूपकेतु—नाहक ऊँच नीच की तफ़रीक न मानकर सोमवंशज सौरों से बेगारी लेना चाहता है? आजादी या फ़ौत यही दो बातें सूर्यवंशी जानते हैं। महसूल किसी हालत में नहीं दे सकते। चाहे उसके लिये बातों बात में अपनी जिन्दगी उत्सर्ग करना पड़े। रे सुमुख! चाहे पृथ्वी फटकर उलट-पलट हो जाय, चाहे दिग्गजों के दाँत टूट जाँय, अनंत का दिमाग नरम हो जाय, पर आहव के लिये मजबूर करने से तुम्हारे राव को मारे बिना नहीं छोड़ा जायगा और नाहक अपने करतूत का नतीजा उसे भुगतना होगा।

श्रीराम—हे कुशल बुद्धि सुमुख! तुमने तो यहाँ का सब हाल देख लिया है न? मैं तो निष्काम हूँ और इन सब झमेलों में पड़ना नहीं चाहता। सारा अहवाल तुम अपने बादशाह को जाकर सुनाना और कह देना कि जङ्ग बेकार है।

लव—(नजदीक जाकर सुमुख की दाढ़ी ऊपर उठाते हुये) देखो! तुम्हारे बाल कितने सफेद हो गये हैं! पर अक्ल तो कम हो गई है। देखो! मेरे पिता जी की दरियादिली! कितनी सांत्व भावना है! उसका गांभीर्य्य समझो! महामना वाल्मीकि ने हमको भी समान अस्त्र-शस्त्र प्रदान किया है। हमारे ओर से तो अकेला वीरहनुमान ही काफी है। उसकी शक्ति सबको विदित है। हमारी ओर से किसी की भी खातमा नहीं हो सकेगी। इसलिये अपने राजा से आगा-पीछा सोचकर अमल करने को कहो। ब्रह्मदत्त वर पर इतराना फ़जूल है।

कुश—(आवेश से मुँह बनाकर) अजी बूढ़े सुमुखजी सब बातें कान पर रखना, रास्ते में भूल न जाना। यदि तुम्हारे राजा लव से

रण में आवेगा तो शेखी भुला दी जायगी। हम रण-रङ्ग में उतरेंगे तो तीनों लोक में उथल-पुथल मचा देंगे। यह अदने-अदने भूपतियों को जीतना नहीं है। दांत खट्टे हो जायँगे। मजे में मुँह की खानी पड़ेगी। इसलिये देखना कि तुम्हारा नल कहीं बोदापन न कर बैठे।

सुमुख—शाहजादे! जनाब से बहस करने की ताकत मुझमें नहीं है। आपके अल्फाज़ हू-ब-हू जाकर सुना दूँगा भवितव्य को कौन जानता है? आप चाहे जैसा कहें, किस्मत में जो बदा है वही होगा। खैर मुझे इजाजत दीजिये। (सुमुख आदाब करके चला जाता है)

श्रीराम—हे गुरुदेव! आगे अब क्या कारवाई की जाय बताइये। जङ्ग तो बेकार है न? मैं निर्द्वन्द्व रहना चाहता हूँ। उपाय बताइये।

वशिष्ट—हे राम! तुम्हारे दुःस्वप्न के फलस्वरूप में यही आरम्भ दिखाई पड़ता है।

लक्ष्मण—ओ मुरसिद जी! इस ख्वाब से बहुतेरे खराबियाँ दिखाई देती हैं। इसी से भय्या जङ्ग से विमुख होना चाहते हैं। लेकिन दुध-मुँहे, नादान बच्चे जङ्ग के लिये तैयार हैं। इससे किसी तरह सुलह की कोशिश की जाय तो?

वशिष्ट—(अपाङ्ग अट्टहास करके) हे वत्स उग्र लक्ष्मण! तुम्हारे भाव तो आज रहम भरे और हैरत-अंगेज हैं। तो भी नल को समझाने-बुझाने के लिये किसी चर को भेजना युक्ति सङ्गत होगा।

भरत—इस वक्त वातात्मज से बढ़कर निपुण कौन है? जो कारज सिद्धि कर सके? वह तो वाग्मी और पराक्रमी भी है?

श्रीराम—एवमस्तु। हे मारुती! पहले भी सीता वियोग के समय सुग्रीव से मित्रता कराके तुम्हीं ने प्रणइनी को खोज निकाला था। उसी ढब से आज भी जाकर राजा नल को सही रास्ते पर लाने की कोशिश करना।

हनुमान—उतनी ताक़त मुझमें नहीं है जितनी कि आप बयान करते

हैं। जो कुछ करता हूँ वह सब आपकी नज़रें इनायत से करता हूँ। आपकी आज्ञा सिर-माथे पर है। नल अगर बेवकूफी से मेरी बात न माने तब? आगा-पीछा बिला,सोचे हुजूर के कदमों में हाज़िर कर दूँ?

लक्ष्मण—(खुशी से कह कहा लगाकर हँसता है) हे हनुमान! तुम्हारा भरम जा है। तुम्हारी मिजाज़! देख आने को भेजें तो जला-कर आओगे। इसलिये जाकर जो फ़र्ज हो अदा करके आना। तुम्हें नर्मीहत क्या दिया जाय! तुम उसे कुछ न करना।

श्रीराम—हे वफ़ादार वातात्मज! वे न सुने तो लौट आना। हमारे वाजिब काम तुम्हीं मत कर डालना जैसे लंका में किया था।

हनुमान—हे निर्विशेष! हुकुम की तामीली सही करूँगा (वन्दना करके लोम फुलका कर फुरफुर करके नभ स्थल में उड़ जाता है)

वशिष्ट—सुमुख मञ्जिल तय करके नल के पास पहुँचने के पहले ही आपकी आज्ञानुसार सब हाल सुनाकर और सुलह प्रस्ताव पेश करके हनुमान आ पहुँचेगा।

यूपकेतु—मुनिवर! अगर सुलह न भी होतो कोई दिक्कत नहीं। सुलह का मतलब क्या है? सुलह काहे का है? सुलह का अर्थ उनके काबू में रहना है? कभी ऐसा नहीं हो सकता। आपके अशीस से हम भाइयों को त्रिमूर्ति भी नहीं जीत सकते। जङ्ग ठानने के बाद डिगने वाले भीरु हम नहीं है।

श्रीराम—(भाइयों से) इस मारकाट से हम लोगों का सरोकार नहीं। अब कुमार-गण ही राज-काज की व्यवस्था करेंगे। (आपव से) आज परिषद् स्थगित किया जाय।

वशिष्ट—(ठीक है हम भी अब चलें। आप लोग आगे की तयारी में लग जाइये।)

[सब कोई वशिष्ट और वामदेव को प्रणाम करते हैं। सबका निष्क्रमण]

[पटपरिवर्तन]

दूसरा—दृश्य

हस्तिनापुर में कादर साहब का घर

कादर—(डगमगाता हुआ कुर्सी पर बैठ जाता है और गिर पड़ता है) हां!···हां!···मु···झे···भी···ख···ब···र···भे···जा···।

बीबी—क्या ख़ाविन्द ! क्या हुआ ? क्या ख़बर ? कौन ? कहाँ से आई ?

कादर—नल···राजा···से···जुद्ध···की···ख···बर।

बीबी—तो इतना डर काहे का है ? तू क्या अभी तक राजा से तनख्वाह लेता है, न ?

कादर—(बीबी के पैर पकड़ कर) अम्मी !···मुझे···ब···चा। राम···से···लड़ा···ई (गला भर आता है रोता है)

बीबी—क्या मर जाय तो दुनिया को क्या कमी है ? जा। क्या तू क्षत्री नहीं ?

कादर—(बीबी की मुँह बन्द करके) कड़ी आवाज़ से मत बोल। मेरी किसी तरह हिफ़ाजत कर।

बीबी—क्या जबरदस्ती ले जायँगे ?

कादर—हाँ हाँ ! वही शर्त है ! मुर्दों को भी ले जायँगे। मुझे बचा···म-म···।

बीबी—अच्छा। रोओ मत। मैं बचाती हूँ। पर मेरे कहे के मुताबिक चलो।

कादर—म-(फिर माथा रगड़ता हुआ) बचा···बचा···किसी··· तरह···बचा।

बीबी—अच्छा, चलो, तुम्हें तय्यार करती हूँ।

[राजभट आते हैं और रोने का शब्द सुनते हैं]

पहला—अरे भय्या ! यह काहे की आवाज़ है ?

दूसरा—अरे ! यह आवाज तो हमारे सरदार कादर साहबजी के घर से ही है !

तीसरा—जाकर देखें कि क्यों रोते हैं।

पहला—(आँगन में प्रवेश कर) सरदार माँ यह क्या ?! सरदार साहब मर गये ? कब ? किस लिये ?

बीबी—[सिर पीटती और पैर पकड़ कर रेलती हुई सरदार के मुँह पर सर पटकती है]

तीसरा—बताओ सरदार माँ ! किस तरह प्राण पखेरू उड़ गया ? फिर तुम्हें देखना नहीं चाहता ?

बीबी—भाई सुनो ! तड़के उठकर बादशाह सलामत के पास आने को थे सब, पोशाक पहन कर निकलते ही अचानक पेट में दर्द निकल कर मर गया (फिर खतरनाक आवाज से रोने लगती है)

पहला—(उस आवाज से भ्रम में पड़कर) तो कफ़न इस पर किसने डाला ?

बीबी—भाई ! अड़ोस-पड़ोस ने इसके पहले खरीद कर रखा था। धोबी और हज्जाम बाजार में सामान लेने गये हैं बाबा।

पहला—(आपस में) अब हम यहाँ से खिसक चलें।

दूसरा—अच्छा चलो चलें (तीनों चले जाते हैं)

बीबी—(आँख पोंछकर, दरवाजे में से सड़क के अन्त तक झाँकती है और उन सबके जाने पर कादर के कान में कहती है) अब उठकर कोठरी में घुसो अब परवाह नहीं।

कादर—(झट उठकर अन्दर घुसता है)।

बीबी—तुम यहीं रहो मैं अभी आती हूं। (दहरी में ताला बन्द करके लड़के का भेस बदलकर घूमने चली गई। और शाम तक इधर-उधर टहलकर घर पहुँचती है)

कादर—(धीरे से) कौन ?

बीबी—मैं हूँ। अब परवाह नहीं! वे सब युद्ध को चले गये।

कादर—(खुश होकर) क्या चले गये? सच?

बीबी—सचमुच।

कादर—(एक लम्बी साँस लेकर) तुम्हारा एहसान। पहले तो मैंने धोखा खाया। सिपाहियों की धूम-धाम पोशाक देखकर मन चल गया और उनकी बातों में बह गया। अब तेरे पैर पकड़ता हूँ। अब अकल आई (पैर पकड़ता है)

बीबी—चलो अब हम यहाँ से अयोध्या बदले हुए शकल में भाग जायँ नहीं तो पकड़ जायँगे।

कादर—अच्छा। रामजी रहमदिल हैं। चलो चलें।

[परदा बदलता है]

तीसरा—दृश्य

अयोध्या के एक गली में घर के अन्दर।

भीरुराज—एं! वे तो मुझे भूल गये। कुशलव मुझे खबर भेजे बिना ही जङ्ग को चले गये। अब जान की कोई परवाह नहीं। अच्छा हुआ।

राज्ञी—छिः तुम्हारा मुँह देखनेवाले को पाप लगता है। तुम तो क्षत्रिय खानदान में पैदा होकर जान बचाने की कोशिश कर रहे हो। छिः छिः।

भीरु—इसी से तो मैं सबमें यही प्रचार करता हूँ कि निकाह मत करो। हम लोग किस तरह शादी करके दिक्कत में पड़ गये देखो।

राज्ञी—(दो झाड़ू हाथों में लेकर मारती है और भीरुराज चिल्ला चिल्लाकर कहता है।)

भीरु—तुम्हें इतना न मारूँ तो तुम नहीं सुनोगी। (बाहर आकर फिर कहता है) अन्दर आऊँ तो फिर मारूँगा। (चला जाता है)

राज्ञी—भूल गई कि झाडुओं की कीमत न माँगी। कल मारने को झाड़ू कहाँ से आयेंगे।

भीरुराज—(इधर-उधर टहल कर बाहर चबूतरे पर आकर पैठ जाता है)

राज्ञी—(किवाड़ की आड़ से) महाराज ! राजाधिराज ! सरदार साहब जी अन्दर आइये जनाब।

भीरु—मुझे बहुत भूख लगी है।

राज्ञी—हाँ ! सच है कि निकम्मे लोगों को भूख ज्यादह लगती है। हुजूर ! आपके लिये परोस रखी हूँ आइये।

भीरु—तुम फिर मारोगी तो तब ?

राज्ञी—नहीं जनाब ! अब मेरे पास झाड़ू खरीदने को पैसा नहीं है हाथ में पैसा दो और आकर खाओ।

भीरु—पैसा दूँ तो नहीं मारोगी न ?

राज्ञी—कसम खाती हूं। नहीं मारूँगी।

भीरु—तो अठन्नी लो। (देता है)

राज्ञी—(आड़ से बाहर आकर) हाथ पकड़ के भीतर ले जाती है और पीठ पर हाथ फेरकर पुचकारती है।

भीरु—(भोजन करके बाहर जाने लगता है इतने में ढकारी की तरह, दोनों हाथों से दो झाड़ू पकड़ कर एकदम दड़बिड़ शब्द करती हुई पीटती है। और भीरु बाहर को कहता है) तुम्हें हरदिन मारने पर भी अक्ल नहीं। अक्ल अब आई है न ? [भीरुराज फिर भागने की कोशिश करता है]

राज्ञी—(भागने वाले भीरुराज के जूरे पकड़ कर बिठाई) महाराज ! आप इस तरह इधर-उधर गप-शप शामतक मारकर घर पहुँचते

हैं तो घर का काम-काज कैसे चलेगा? मैं तो रनिवासी हूं कुल के इज्जत के लिये अन्दर ही सड़ी रहती हूँ। तुम्हें देखूँ तो क्षत्रिय हो। मूँछ देखूँ तो तीव्र को टहराते हो। जङ्ग की बात सुनो तो दस्त ही दस्त होने लगता है! क्या कहूं तुम्हारी शबाशी व बहादुरी।

भीरु—तुम्हारी बातें सब सच हैं, पर एक बात पूछता हूं मारे बिना उत्तर दो। इस तरह कोई औरत अपने पति को मारती है? पति, देव के समान कहते हैं न?

राज्ञी—अरे मन्दबुद्धि! तुम अभी नहीं जानते कि हर घर में इसी तरह मारते ही हैं। पर तुम्हें मैं हरदिन मारती हूँ। वे तो कभी-कभी साल भर के लिये मारती हैं। हर अफ़सर के घर में देखो! चुपचाप मार खाकर पड़े रहते हैं। पर तुम तो राज सरदार हो इस वास्ते धोखेबाजी की चिल्लाहट मचाते रहते हो। अरे सुस्त! तुम्हारे ऐसे लोगों को औरतें कभी खुदा मानकर नहीं पूजतीं, जानते हो? सुनो बेवकूफ़। जिसको पुरुषत्व है, जिसको बहादुरी है, जो औरत को सब तरह से अफ़र कर सकता है उसी को स्त्री खुदा मानती है। और अपने पति के मारने पर भी मार खाती है। अरे तुम्हारे ऐसे (हाथ उठाती है)

भीरु—अरी! तुम मुझे मत मारो! मुझे अभी बहादुरी आ जाती है।

राज्ञी—तुम्हें मर्दानगी? छिः। लाज नहीं? बच्चे कुशलव को देखो और उनका पैर पकड़ो। तब कुछ बहादुरी की हवा लगेगी।

[दर्वाजे पर कोई पुकारता है]

[भीरु डरकर अन्दर घुसता है और राज्ञी पूछती है "तुम कौन हो"?]

*कादर—मैं कादर हूं। मांजी! भीरुराज जी घर पर हैं?

राज्ञी—(सम्हल कर दरवाजा खोलती है) बैठिये, आते हैं।

कादर—अच्छा। [बैठते ही भीरुराज आता है, कादर सलाम करता है भीरु आशीस देता है।]

भीरु—आपका कहाँ से आना हुआ ? सब कुशल तो हैं न ? आप नल के साथ जङ्ग में क्यों नहीं गये ? इस्तीफ़ा तो नहीं दिया ?

कादर—इस्तीफ़ा ! हाँ ! हाँ ! चुप ! धीरे से बोलना। किसी तरह बचाकर यहाँ भाग आया हूं। और आपने अपने को किस तरह बचाया ?

भीरु—यही अचरज की बात है कि मेरी जान कैसे बची। तुम्हारी जान ?

कादर—सुनिये। मेरी औरत बहुत अक्लमन्द है। उसने मुझे मुर्दे की नाईं स्वांग रचकर बचा लिया ! आप कैसे बचे ? आप भी सरदार हैं न ?

भीरु—हाँ ! मैं तो बिलकुल सरदार और बहादुर हूँ। लेकिन तुम्हारे राजा ने अचानक अयोध्या को घेर लिया। हमारे राजा मुझे भूल कर युद्ध में चले गये। किसी तरह बच जाना क्या अक्लमन्दी की बात नहीं ?

कादर—सरदार जी ! मैं भी यही बात कहता हूँ कि किसी न किसी तरह जान बचाना ही उमदा है।

राज्ञी—(भीरुराज को अन्दर बुलाती है और वह जाकर पैर पकड़ता है और प्रार्थना करता है) अरे यह मेरे प्राण भक्त दोस्त है। मेरा पाहुना बना है। इस वास्ते आज मुझे मारो मत। मैं तुम्हे कुछ डाँटूँ-व-डपटूँ तो भी तू सुनी-अनसुनी करके माफ़ करना।

राज्ञी—क्या तुम गालियाँ देने पर भी मैं चुप रहूं ? ऐसा कभी नहीं हो सकता।

भीरु—सिर्फ़ दस बार ही माफ़ करो। इससे ज्यादा गालियाँ दूँ तो तुम मार सकती हो।

राज्ञी—अच्छा याद रखो ज्यादह हो तो खबरदार।

भीरु—बस उतना ही काफ़ी है। (कादर के पास आकर) साहब जी उठो खा-पी-लो !

कादर—सरदार जी मैं तो वीवी के साथ आकर अयोध्या में हूँ। मैं घर अब जाऊँगा माफ़ कीजिये।

भीरु—नहीं नहीं। मेरे घर में एकबार खा लीजिये। इसे अपना घर समझिये।

कादर—(अपने में इसके स्त्री की चाल-चलन भी देखना मुनासिब है) अच्छा आपकी बात मानना भी कायदा है क्योंकि आप सरदार साहब भी हैं।

भीरु—हाँ, हाँ ! मैं सरदार जरूर हूँ। चलो खाने को। (दोनों जाते हैं)

राज्ञी—पधारिये। (सब कुछ परोसती है, दोनों बैठ जाते हैं)

भीरु—ऐ दोगली ! इतनी देर क्यों हुई ?

राज्ञी—(चुप होकर एक कंकड़ लेकर एक लोटे में डालती है)

भीरु—क्यों बदमाश। बड़े नहीं पकाये ?

राज्ञी—(दूसरा पत्थर फिर लोटे में डालती है)

भीरु—ऐ ! अदनी ! उत्तर क्यों नहीं देती ?

राज्ञी—(फिर पत्थर डालकर। जल्दी-जल्दी गुस्से से भरे, भात, तरकारी, खीर, पापड़, बड़ी, नारियल की चटनी, कढ़ी, इमली का रस आदि होशियारी से परोसती रही। लेकिन भीरुराज गालियाँ देने में कसर नहीं करते)

कादर—(अपने मन में कहने लगा कि इसकी औरत तो बड़ी योग्य जान पड़ती है। मेरी औरत तो। राम राम।)

राज्ञी—(जिस समय ग्यारह गालियाँ पूरे हो गये उस समय इमली का रसा परोसती थी। झट गरमा-गरम रसे का घड़ा सिर पर

पटक देती है और एक घुड़कान देती है कि) घड़े का दाम पहले देकर तब भागो।

भीम—(सारा बदन जलने के कारण चिल्लाता हुआ भागता है।)

कादर—(भाग कर सड़क पर खड़ा होता है) अरे! बाप रे! इसका डौल-डौल बदन! इस औरत से मेरी स्त्री कई गुने अच्छी है। पर यहाँ बच गया तो घर पर आज जरूर मार पड़ेगा। भीमराज जी! मैं बिदा लेता हूँ। फिर मुलाकात होगी। (चला जाता है)

[पटपरिवर्तन]

चौथा—दृश्य

[वशिष्ठकी झोंपड़ी, कुशलव बातें कर रहे हैं]

कुश—विज्ञानी गुरुदेव! आपके कहे मुताबिक नल महाराज जङ्ग के लिये आही गये। आज अमावास का दिन है। अब हमें क्या करना चाहिये?

वशिष्ठ—(कुछ सोचकर) वे इस समय दक्षिण दिशा में हैं न?

लव—जी हाँ! शहर के बाहर लग-भग तीस मील की दूरी पर परिवेष्टन किया है।

वशिष्ठ—ठीक है मन्थिकों का कहना है कि—

श्लोक—उदया दुत्तरम् गच्छेत् ❀ त्यायाह्ने दक्षिणे तथा।
मध्याह्ने पूर्व यात्रेच ❀ निशीथे पश्चिमे तथा॥
न तिथिः न च नक्षत्रं ❀ न लग्नं न च वासरम्।
वज्र योग प्रयाणेन ❀ कार्य सिद्धिः फलं लभेत्॥

बेटे अब देर न करो दस बजे के अन्दर आज ही युद्ध यात्रा करो वही अच्छी सायत है।

कुश—जैसी आज्ञा। (कुश और लव बन्दना करके विदाई लेते हैं)

[पट परिवर्तन]

पाँचवाँ–दृश्य

[युद्धरङ्ग में सुषेण और ऋच्छपति पैठते हैं]

सुषेण—बड़े लम्बे अर्से के बाद मुलाकात हुई। खैरियत है न ?

जाम्बवान—प्रिय मुसाहब ! राम जी की इनायत से सब राजी खुशी हैं। श्रीमन्नारायणावतार श्री रामचन्द्र जी की अरहवना से सुग्रीव अंगद और सारा लश्कर पहुँच गया। लेकिन मालूम नहीं क्या बात है ? हम लोगों की बुलाहट क्यों हुई ?

सुषेण—दूतकारज से लौटते वक्त हनुमान ने प्रभु की आज्ञा की खबर दी।

जाम्बवान—(अचरज से) कौन दूत कारज ! कैसी प्रभु की आज्ञा ?

सुषेण—हस्तिनापुर के राजा नल ने श्रीराम को खबर भेजी कि या तो उसे महसूल दें नहीं तो संग्राम की तयारी करें। उस पर रामजी ने हनुमान जी को दूत बनाकर भेजा ताकि समझौता हो जाय, बेकार जङ्ग न करना पड़े। जङ्ग अनिवार्य जानकर उसने आते वक्त हम लोगों को बुलाया।

जाम्बवान—वह तो बड़ा चलता पुरजा जीव है। एक काम से भेजें तो और भी चार हरकतें करके आयगा। इस जङ्ग के वास्ते इतनी तयारी की क्या जरूरत ? हनुमान तो नीति शास्त्र परांगत है, सका दूतकारज फजूल गया ? उस नल के हमराही और फौजें कितनी होंगी ?

सुषेण—यही बातें मुझे भी निराली ज्ञात होती हैं। हनुमान ने कहा था कि रामजी उलझन में नहीं पड़ना चाहते ! पर ये कोका बेली डाँवरे हरगिज मानने वाले नहीं है। दुश्मन की टोली तो तायदाद में तकरीबन पचहत्तर करोड़ से ज्यादा न होगी।

जाम्बवान–तो फिर क्या हुआ ? हमारी फौज भी तो कुछ कम नहीं हैं। फिलहाल करीब करीब एक निखर्व है, जो देखो ठमाठम खड़े हैं।

सुषेण–कुशने मुझे बुलाकर कहा कि हे सुषेण ! तुम तो पूज्य और जानकार हो। पहले भी मेरे पिताजी की निहायत मदद की थी। इस रण में भी अपने दल-बल सहित हम कुमारों की आकृति बढ़ाकर इमदाद करना और फतह हासिल करना।

जाम्बवान–उनकी नम्रता काबिले तारीफ है। अपने पिता से भी बढ़कर पराक्रमी और अपराजित बच्चे अबकी दाई कैसे सहारा माँग रहे हैं। अचरज की बात है।

सुषेण—उसके उपरान्त यह भी कहा कि राजा नल दीवार-ब-दीवार लश्कर लेकर इधर आ गया तुम चुप्पे-चुप्पे सेना सहित हस्तिनापुर जाकर उसके मवास और शहर को घेर के अपने कब्जे में कर लो। अगल-बगल से मोर्चा बन्दी कर रखो। हम इधर से नल को परास्त करके भगाते हैं। तब वह दोनों तरफ से हाथ धो बैठेगा और बोरिया बिस्तर ले भागेगा।

जाम्बवान—अहा ! उसके बुद्धिमत्ता की कितनी तारीफ करें। इसमें इस हनुमान की भी राय तो होगी।

सुषेण—हो सकता है। अब हमें इजाजत दो। प्रभु के कारज में हम भी पूरा-पूरा हाथ लगावें।

जाम्बवान—नफीस। अरे वह देखो यह कौन ? खतरनाक निशाचर भगदड़ में से मुँह फैलाये इधर ही अवरिकाटता हुआ आ रहा है। शायद यह नक्कंजा कुम्भकर्ण का बेटा तो नहीं है ? इसकी चीख-चिल्लाहट और विक्षेप चेष्टा उसी की तरह है। हमारी फौज उसे देख क्यों बेहताश शोर मचाती हुई दुपट्टा हिला रही है ? भय्या सुषेण ! अब हम चलें फिर बाद में मुलाकात होगी।

सुषेण—यही मुनासिब है। (सुषेण जाता है)

जाम्बवान—(अपने में :—"यह जघन्य कुम्भकर्ण हो या रावण ! तुम्हें कोई डर नहीं") (कालाग्नि का प्रवेश)

कालाग्नि—रे मूर्ख तू कौन है ? सामने क्यों खड़ा है ? (अंगड़ाई के साथ उवासी लेता है दाढ़ सँवारता हुआ अपने में कहता है) हाय ! यह मर्ज तो मुझे बुरी तरह सताता है ! नर, वानर और रीछों को देखते ही जम्हाई के साथ-साथ जीभ भी तलुवे से लप-लपाती दस गज लम्बी बाहर निकल कर उछल पड़ती है। और मुँह में पानी भर आता है। (प्रकाश) अरे कहो ! तेरा नाम क्या है खलीफा ?

जाम्बवान—अरे ! इतना भारी शरीर लेकर भी मुझे नहीं पहचाना ? तेरा दिमाग भी है ? फेर नाम पूछ कर क्या करोगे ? (इतना कहकर ऋक्षपति एक गरु सखुआ को उखाड़ कर मारना चाहा। इतने में कालाग्नि ने तीखी तोमर हाथों में ले उसके जिगर में भोंका। वह भाला टूक-टूक होकर गिर पड़ा। फौरन ही उसने जाम्बवान को दरख्त के साथ ग्रसकर दूर क्षेप दिया। और हँसकर दिल्लगी उड़ाने लगा। नील (वन्दर) उसको हँसते देख खिन्न हो, क्रोध से भभक कर कालाग्नि के मुँह पर एक टहोका जमाया। कालाग्नि आँखें तरेरता हुआ नील को झपट लिया। इतने में जाम्बवान एक भारी शैल को ले ठेस मारा। लेकिन फुरती से वह नील को ढमला कर गायब हो गया और नील भी उस आघात से अपने को बचा लिया।)

अरे ! यह शोहदा, तमार मचानेवाला बचकर कहाँ भाग गया ? बड़ा होशियार मालूम होता है ! खैर जाने दो। (अपने में) ओह कोई शाहजादा चतुरङ्गिणी सेना को उकसाता हुआ ला रहा है। हमारे लश्कर को चौपट करना चाहता है इधर जाना जरूरी है।

[जाता है]

नद्युक–(विकट हँसी से) अह हा ! यह निकृष्ट मर्कट गण

कितनी तिड़ी-विड़ी कर रहे हैं। पानी के बुल-बुलों की तरह इन बन्दरों की इन्तहा नहीं। ये हढ़ाङ्ग हमारे बहादुरों को लँगूर से लपेट लपेट कर दे मारते हैं और तितर-बितर कर रहे हैं। एक भी तीर लगने के पहले ही अदीह हो जाते या उछल जाते हैं। कभी-कभी बिजली सा कड़क कर डुक देके गुम हो जाते हैं। जान पड़ता है कि ये बन्दर अणिमा, गरिमादि आठों सिद्धियों को मश्क किये हैं। इनको तो मैंने कायर कहकर चिढ़ाया था पर वे हमें शृङ्गाल बना रहे हैं। (दूसरी ओर देखकर) अरे ! खानखान बवण्डर तो बन्धुवा हो सुग्रीव से मार खाकर बदहोश हो गया। जिससे सारी फ़ौज पर उसकी धाक जम गई। अब इधर हल्ला मचाते हुए भागे आ रहे हैं। कहीं पैर तो नहीं उखड़ गया ! अब मुझे जाकर उनका ढाढ़स बाँधना है। मेरे प्रचण्ड आतसी तीरों के आतङ्क से दुश्मन की फ़ौज को हताश कर कामयाबी हासिल करूँगा।

[जाता है]

जाम्बवान—मेरे शेरदिल वीरों के मार की कसक बरदाश्त न होने से राजा नल की नाजूक फ़ौज मृगी के समान भागी जा रही है। अहा इधर देखो, वही टीकैत जङ्ग कलँगी और केयूरादि पहिने तन्दही के साथ अपनी फरार टोली को रोक कर अपने वीरोक्तियों से उसका कर लौटा ला रहा है ! उसकी कैसी कुशलता है ! अहा ! अपनी सारी घायल फ़ौज को फिर से रणोन्मुख कर दिया। यह अवश्य कोई राजकुमार जान पड़ता है। उसके सामने हमारी सेना नहीं टिक रही है। [दूसरी ओर देखता है कि बन्दर और भालू परेशान होकर भाग खड़े हुए। उनकी इमदाद के लिये एक जबरदस्त ढोहा को लेकर नल (बन्दर) आकर पहुँचा] अब कोई हर्ज नहीं है। अब मैं दूसरी ओर जाऊँ।

[जाना चाहता है]

कालाग्नि—(जाम्बवान को ठेलकर घूरता हुआ) अरे कमीने ! अब खड़ा रह ! कहां जाता है ? बड़े नौजवान, बहादुर की भाँति जङ्ग में आया है ? देख ! तेरे कल्ले तो बैठ गये हैं, कमर तो निहुर गई है, सीने पर लोम पक गये, बत्तीसी नदारत हो गई. अरे सठिया बौला ! मुझ जैसे काल से भिड़ने की विसात ही क्या है ? बेहतर होता बर्जाक्का लेके घर बैठता।

जाम्बावन—(फटकारता हुआ) अरे खल ! बदमाश ! देवारि ! तुम जैसे बहादुर हो तुम्हारे चेहरे पर जाहिरा है। अरे पाटा। गाल न बजा। होश सम्हाल कर बात कर। तेरी संचित चर्बी आज मेरे प्रखर मार की आहुति बन जायगी। अभी इसका मजा तुझे चखाता हूं। ले ! (पकड़ने दौड़ता है)।

कालाग्नि—(भँवर काटता हुआ इसके पकड़ में नहीं आता) अरे डूकरवा, तू मेरा क्या करेगा ? मेरा खातमा देवता भी नहीं कर सकते, तू अदना रोछ क्या करेगा ? मैं तो तुझको मुरब्बे की तरह चट कर जाऊँगा। (ऋच्छपति के ऊपर झपटता है)।

जाम्बवान—बेशक ! तेरा कहना दुरुस्त है। मैं देवता तो नहीं बल्कि एक छोटा भालू जरूर हूँ। रे शोहदा ! अपनी कुव्वत दिखा। बेहयाई की बातें छोड़ दे। (कालाग्नि के वार से बचकर अपनी जवानी दिखाने के लिये दम लगाकर कालाग्नि को पकड़ता है और मल्ल-जुद्ध में बाहुपाश, उरोहस्त, पूर्णकुम्भ, मुक्का-मुक्की और कमर पेट पकड़कर पसली खींचता और उठा के पटकने लगता है। कभी उसे हिलाते हुये पीछे हटाकर कभी सिमटकर झपटकर ताल ठोंक के अतिक्रान्त, मर्यादा, पृष्ठ भङ्ग, संपूर्ण मूर्छा, तृणपीड़, पूर्ण योग, मुष्टिक, मसमुन्द आदि शास्त्रोचित युद्ध कौशल दिखाने लगा। दोनों पक्ष के वीर इन बहादुरों की धमा-चौकड़ी देखते हुये खड़े होते हैं। ऊपर से देवगण भी पुकार कर कहने लगे कि हे वीर भालूराज ! देखो यह हमें

माया रूप से आकर मारता है। इसे पकड़कर खातमा कर दो। यह लोक कण्टक महलोगों से नहीं मरेगा जाम्ववान ऊपर की तरफ देखकर हँसता है और कालाग्नि से कहता है—अरे निशाचर! अब तेरा काल तुझे याद कर रहा है। जैसे बिल्ली चूहे को नचा-नचाकर मारती है वैसे ही मैं तुझे खिला-खिलाकर मारूँगा (इतना कहकर जाम्बवान कालाग्नि की घांटी और थूथन पकड़ घोंटने लगा फिर ऊपर उठाकर मोड़-मरोड़कर दे मारा। वह निशाचर अपने गर्जन से दिशाओं को कँपाता हुआ आसमान तक उछल के औन्धे मुँह नीचे गिरा और कलेजा फटने से कराहकर मर गया। उसके गिरने पर उसके विशाल काया के तले दोनों तरफ के कई नरेश योद्धा भालू और बन्दर चिकनाचूर होकर मर गये। उस वक्त जाम्बवान की भुजायें कुर-कुरी आवाज़ करते हुये बेलन जैसा फूलकर जवानी के बुत का नमूना दे रहे थे। देवता उसकी प्रखर मूर्ति को देखकर सराहते हुये पुष्प वर्षा करने लगे। कुछ लोग सहमकर नौ दो ग्यारह हो गये। और कुछ खुशी से कूजने लगे।)

[पट परिवर्तन]

छठवाँ—दृश्य

[कादर का मकान]

बीबी—(अपने पति को चबूतरे पर बैठे देख) अन्दर आइये। आपके लिये अभी तक इन्तजार में हूँ। क्या खाना नहीं खायेंगे?

कादर—आज भूख नहीं, तुम खालो। मुझे अन्दर आने दो बस।

बीबी—क्या मैं अन्दर आने में रोकती हूँ? आओ आओ मेरे प्यारे पतिदेव आओ आओ प्यारे, ऐ मेरे जान! (गाती है)

✻ गाना ✻

आओ पिया, आओ पिया
मेरे दिल की आग बुझा॥
मन-मन्दिर में तुम्हें बिठाऊँ
फूलों की एक सेज बनाऊँ।
नभके तारे चुन कर लाऊँ
माला रसिक सजाऊँ॥ आओ पिया० ॥
जनम मरण के साथी हैं, जो
निशिदिन नहीं बिसराऊँ।
पलक पांवड़े बिछे हुए हैं,
साजन गले लगा जा॥ आओ पिया० ॥

कादर—क्या मुझे मारने के वास्ते दोनों हाथों से झाड़ू लेकर नाचती है तुम अब मुझे काली की तब जान पड़ती हो। मेरा मन तुझे देखने पर आदाब करना चाहता है। आहा! कैसी मूर्ति है एक हाथ में झाड़ू और दूसरे हाथमें मूसल! अरे बाप रे!

बीबी—अरे कहाँ भागोगे? आज क्या तुम्हें डर लगता है? बीस बरस से कितने झाड़ू तुम्हारे पीठ पर टूक-टूक हो गये? एक ही जगह मार के पड़ते-पड़ते तुम्हें भी लोहे के बराबर हड्डे पड़ गये हैं। अब डर काहे का है? तुम्हारी तनख्वाह झाडुओं के लिये काफी है। सरदार साहब! आदत पड़ने पर तुम कैसे रह सकते हो? आओ अन्दर! आओ नजदीक! दो बज गया। देर हो रही है।

कादर—(यह जरूर मारेगी। इसके लिये एक तरकीब है कि झाड़ू और कुछ खाने-पीने का इन्तजाम करके ला दूँ तो दो तीन झाड़ू मार कर बन्द कर देगी। क्या लाऊँ,) (जाता है और झाड़ू आदि लाकर बीबी को बुलाकर देहली पर रखता है।)

बीबी—(झटका देकर अन्दर खींचती है और तीन चार झाड़ुओं के मारकी आवाज सुन पड़ती है) इतनी देरतक कहाँ गप-शप मारता रहा ? सच बता ?

कादर—ए···ए···क···दो···स्त···मिला।

बीबी—(और एक लगाकर) अरे बदमाश! खाविन्द जी ? इस शहर में कौन दोस्त नहीं ? इस शहर के चिरकारी और बेकार लोग सभी तुम्हारे प्राण प्रिय हैं। जहाँ कोई एक कप चाय देगा तो शाम तक वहीं गप्प से सरदार बन बैठता है। क्या तुझे अक्ल नहीं हमारे राजा आजादी के लिये टीकैत के मरने पर भी लड़ते रहेंगे। तुम अपना नीच प्राण लेकर इधर-उधर कितने दिन तक छिपता फिरेगा। छिः (दिल्लगी में मूँछ खींचती और गाली-गुफ्ता देती है]

कादर—(हाँपता है) मुझे माफ कर। मेरी एक प्रार्थना है सुनो! यहाँ मुझे एक दोस्त है जो पहले कह चुका कि वे भी तो मेरे जैसे सरदार हैं। हम दोनों बचपन के सहपाठी हैं। वे कल यहाँ आयेंगे और हमारे यहाँ भोजन करेंगे। तुम कल मेरे लिये त्योहार समझ न मारना। तुम्हें मेरी इज्जत बढ़ाना है। क्या कहती हो ?

बीबी—सामान घर पर हैं ? क्या लाओगे ?

कादर—हाँ लाऊँगा! क्या लाऊँ ?

बीबी—लिखो, कहती हूं।

कादर—अच्छा लिखता हूँ, कहो।

बीबी—चावल अढाई सेर, घी डेढ़, बेसन एक सेर, पिसान एक सेर, उड़द का दाल आधा सेर, मूँग का दाल आधा सेर चने का दाल पावभर, चीनी एक सेर, मिश्री पाव भर, मलाई आधा सेर, मक्खन पाव भर, निमक आधा, आलू आधा, भँटे, तरोई, चचेंडा, आधा आधा सेर लाओगे ? हाँ भूल गया ? गोस्त डेढ़ सेर और खोवा डेढ़ सेर।

कादर—बेशक ! अभी लाता हूं। (जाता है)

(भीरुराज का प्रवेश)

भीरु—(पुकारता है) कादर साहब जी ! कादर साहब जी ?

बीबी—कौन ?

भीरु—मैं हूं सरदार भीरुराज। माँ ! क्या घरमें नहीं है ?

बीबी—(दरवाजा खोलकर) अभी आयेंगे बैठ जाइये। बाजार से अभी आयेंगे।

भीरु—अच्छा ! (चबूतरे पर बैठकर सोचता है कि इसकी औरत मेरी औरत से अच्छी आदत की होगी, नहीं तो मुझे भोजन के लिये क्यों बुलाना ! अच्छा देखूँ।

कादर—(आकर) जनाब ! सरदार साहब जी आगये ? माफ करना कि मैं बाजार में कुछ सामान के वास्ते गया। भीतर आकर यहां कुर्सीपर बैठ जाइये।

भीरु—सही, बैठता हूं (भीतर जाकर बैठता है)

कादर—(अन्दर जाकर धीरे से) पहले की तरह मुझे न मारना कुछ इज्जत से पेश आना। क्या कहती हो।

बीबी—मैं पहले की तरह न मारूँगी। (चली रसोई बनाती है)

कादर—(भीरु राज से) आज आप का मेरे घर पर आना खुशी की बात है। हम बचपन में किस तरह पढ़े और किस तरह उस्ताद के पास कवायद सीखें याद है ?

भीरु—हाँ हाँ ! याद है। देखो ख्याल करो हमारे उस्ताद, कोई लड़का दर्जे में शोर मचाता तो पीटते थे।

कादर—हाँ ठीक ! क्या वह पागल था ? मेरे एक बार पूछने पर क्या उत्तर दिया याद है ?

भीरु—याद है कि तुमने पूछा था—क्यों मास्टर जी ! रामने शोर मचाया तो बेगुनाह हमें क्यों मारते हैं ? मास्टर ने उत्तर दिया—"अ

तुम लोगों को शोर मचाते समय मैं क्या बार बार यातायात करूँगा ? क्या मेरा यही काम है ?"

कादर—वह बात अभी तक दिमाग में नाचती है (कह कहा कर हँसता है)

भीरु—अरे ! इसी तरह सहकर पढ़ने के कारण ही हम सरदार बन सके। अजी ! जङ्ग का हाल क्या कुछ तुमने सुना ?

कादर—जी हाँ सुना। अचरज की बात है कि कालाग्नि मारा गया ?

भीरु—अहा हा ! मर गया ? बाप रे ! वह एक छोटा-मोटा पहाड़ जैसा था। क्या वह मारा गया ?

कादर—वह किसी से मरने वाला न था। उसे सब वन्दर और भालुओं ने मिलकर मारना चाहा, पर न मरा। उसे यह वर भी था कि नर, वानर और देवताओं के हाथ से नहीं मरेगा।

भीरु—तब कैसे मरा ?

कादर—वह तो ब्रह्मा से वर पाकर देवताओं को मारने लगा। देवता लोग उसे देखते ही भाग खड़े होते थे। वैसा बलवान कुम्भकर्ण के बराबर चीत्कार करनेवाला और वैसाही भीषण वदनवाला था ! आखिर भालूराज को पछाड़ा तो वह गुस्से में भर कर आसमान तक बढ़ गयाऔर जैसे बाघ मृग को पकड़ता है वैसे उसे जकड़कर गला घोंट के तुरन्त नीचे पटक दिया जिससे वह मर गया।

भीरु—अहा ! कितना वीर है वह भालूराज !

कादर—क्या भालूराज बुड्ढा है न ? उसे तो मैं एक चुटकी में गिरा दूँ। अब कहने से क्या फ़ायदा ?

भीरु—मैं क्या उस राक्षस को "उफ़" कहकर रुई-सा नहीं उड़ा सकता ? सुनो, हर एक काम पहले आसानी से दीखता है, पर करते समय सब मालूम होता है कि कितना कठिन है। यदि हमारे ताक़त के बाहर की बात है तो क्या करना चाहिये जानते हो ?

कादर—सरदारजी ! उसके बारे में जानकार मुझसे बढ़कर और कोई नहीं है। आप भी उसके बारे में मुझसे बराबरी नहीं कर सकते।

भीरु—क्या वह तरीका है बताओ, सुनूँ ।

कादर—सुनेंगे ? तो सुन लीजिये (कान में) मरे आदमी की तरह दम बन्द करके पड़े रहना ही है, जिसे भालू भी नहीं छूता ।

भीरु—उससे भी कुछ आसान बात है सुनो। जब हम कभी हमले में बन्दी किये जायँ तो पैर पड़ना। हो सके तो जङ्गल में दुम दबाकर भाग जाना। क्या ये दोनों कम अक्ल तरीके हैं ?

कादर—हाँ हाँ, ये भी तो बचाने के अच्छे तदबीर हैं।

बीबी—(ये सब बातें सुनती-सुनती जल गई। अपने लम्बे बाल खोल कर नीचे लटका दी और दोनों हाथों से दो जलती हुई लाल-लाल लोहे की कुदालियाँ लाकर दोनों कुर्सियों को लात मारी, और गिरनेवालों के पीठ पर दाग दी। दरवाजा बन्द करके आँगन के अन्दर उनको इधर-उधर घुमाती हुई कहने लगी)—"अरे बदमाश ! सर-दारों ! तुम दोनों अपने को अब बचा नहीं सकते। देखो ! आजादी के लिये राम के बच्चे जान पर खेलते हुये लड़ रहे हैं ! तुम लोग तनख्वाह लेकर छिपने और जंग के वक्त भाग जाते हो। देखूँ, तुम्हें कौन बचाता है ? मैं ही तुम दोनों को मारूँगी। (आगे बढ़ती है)

कादर—(हाथ जोड़कर) अम्मी रक्षा करो।

भीरु—माई मुझे बचाओ ! मेरी रानी मेरी मुन्तजिर होगी। हमारी बातों को माफ़ करो। माँ तुम्हें लाखों आदाब हैं (हाँपता है)

बीबी—क्या सरदार साहबजी, एक और शिवांकित लगाने दो (आगे बढ़ती है। वे दोनों इर्द-गिर्द भागते हैं)

कादर—हमें जाने दो माँ, हम दोनों जंग में जाकर लड़ेंगे और मरेंगे किसी के सामने इस तरह के गप-शप नहीं मारेंगे।

बीबी—(एक-एक और दाग देकर छोड़ देती है)

भौरू—(बाहर भाग आकर) हे कादर साहबजी! आपकी औरत से मेरी ही औरत अच्छी है। हमें राजदण्ड से भी कड़ी सजा दी। क्या करूँ। दोनों को बिना पक्षपात बराबर-बराबर बाँट दी। किसी तरह जान बचाकर निभगये, बस। हम दोनों पुरुष-मुख स्त्री हैं, वे दोनों स्त्री-मुख पुरुष हैं। अब हम घर नहीं जा सकते हैं चलो युद्ध रङ्ग देखें।

(यवनिका पतन) [दोनों जाते हैं]

अङ्क—तीसरा

पहला—दृश्य

[युद्ध रङ्ग]

[युद्ध रंग में एक तरफ़ नद्युक जंगी पोशाक और ज़िरह-बख्तर पहिने तीर कमान ले रथ पर सवार होकर अपनी सेना को उसकाता हुआ आवेश से प्रवेश करता है और नल नामक बन्दर को आगे बढ़ने से रोकता है]

नद्युक—अरे वानर तू कौन है ? ठहर जा तेरा नाम क्या है ?

नल—आपकी तारीफ़ ? आप कहाँ से टपक पड़े ? मैं तो मशहूर सुग्रीव का वज़ीर और श्रीराम का सेवक नल हूँ।

नद्युक—अरे ! मुझे भी नहीं पहचानता ? शृष्टिकर्ता वृकोदर से वर प्राप्त सप्तद्वीप विजेता श्री महाराजाधिराज राजा नल का छावा मैं नद्युक हूँ। मेरे सामने तू नहीं ठहर सकता, अब घर का रास्ता ले।

नल—ऐ छोटा ! पुरन्दर को भी फ़नेयाब्द किये हुये अनेक योद्धाओं को मैंने सहज ही में रगड़ दिया। शायद तुम्हें नहीं मालूम कि मैंने असुरों को मार भगाया और शतयोजन-विस्तीर्ण समुन्दर पर अपने हाथों से आर-पार पुल बान्धा था, जिस पर से रामजी की अनगिनित सेना पार हुई थी। मैं तो विश्वकर्मा का पुत्र हूँ मेरे लिये तुम्हारे ऐसों की क्या गिनती। तुम्हें अलक-लडैता जानकर मैं सीख देता हूँ कि तुम मेरे सामने से हटकर जेबी चिल्हवाड़ों से भिड़ो, मुझसे द्वन्द्व जुद्ध न कर सकोगे।

नद्युक—हे वानर ! क्या आँय-बाँय बक रहे हो ? तुम्हारी कला और तुम्हारा प्रताप तुम्हारे बातों से झलक रहे हैं और क्या कहूँ।

मैं भी ऐसा भगोड़ा नहीं हूं कि तुम्हारे बातों ही से मेरा भग बन्द हो जाय। मुझे भी कई शरों का तोड़ मालूम है तुम्हें एक ही पल में गिरा सकता हूं। (इठलाकर) अभी तुम मुझे नहीं जानते।

नल—शबास ! अगर तेरा यही इरादा है तो देखें तेरी औकात। ढोंग से क्यों दहशत दिलाना चाहता है ? कुछ करके दिखा।

नघुक—(कुढ़कर) बचा अपने को (भाथे में से वायव्यास्त्र निकाल कर छोड़ता है)

नल—(अपने में) हे वायुदेव ! मैं विश्वकर्मा की औलाद हूं। और तेरे पुत्र हनुमान का जिगरा दोस्त हूँ। मुझे दुःख न देना। (तीर बेकार होता है)

नघुक—(दूसरा शरलेकर तुरन्त) रे ! उससे बच गया ! ले यह धूमकेतु है। हे बदशकली ! अब अपने को बचा।

नल—(अपने में) हे ज्वालेश्वर ! तेरे बेटे स्कन्ध का मैं जानिसार हूं और रामजी का टहलुवा भी हूं : तू मेरी हिफाजत कर। (तीर बेकार जाता है)

नघुक—(नल को अमिट समझ क्रोध से ब्रह्मास्त्र लेकर) हे नल तेरा रोब तो अच्छा जमा। इतने अव्यर्थ शरों को भी तुमने दमा-दम बेकार कर दिया। जाने दो। मेरी खानदान परम्परा जिस ब्रह्मा की अर्चना और दयानतदारी से सेवा करती चली आ रही है और जिसके वरों की कुव्वत पर मेरे पूर्वजों ने भूपालों को परास्त किया उसी ब्रह्मास्त्र से आज मैं तेरा मस्तक उड़ा दूंगा। तुझे जीता नहीं छोडूँगा। देखें तेरे वरहरिया कौन है ! (शरतानकर छोड़ता है और इसके फौज में जोभोले शङ्ख दुंदुभी, नगारे, तुड़िया, वीणा, बाँसुरी, मृदङ्ग, आदि बाजे बजने लगे।)

नल—(संभ्रम से) हे जगदम्बे ! हे रघवीर ! त्राहि ! त्राहि (शर का तेज लगते ही हक्का-बक्का हो जाता है)

लव—(अचानक उधर पहुंचकर) यह किसकी आवाज है ? यह मेरे पिताजी को क्यों याद कर रहा है ? (नल को देख) अहा ! इस खतरनाक ब्रह्मास्त्र को इस्तेमाल करनेवाला कौन है ? और यह भी नल के ऊपर ? ऐ टीका ! समझ गया मैं इसे अपने तीर से टूक-टूक कर दूंगा (तीर चलाता है दोनों अस्त्र गरगराहट के शब्द से टकराकर जुदा-जुदा गिरते हैं)

नघुक—(अचरज से) हे नन्हें वीर ! डिम्भक, तुम्हारा नाम क्या है ? तुम कहां के देवान्तक नरान्तक तो नहीं हो ? जिस तीर का तुम पर प्रयोग नहीं किया गया उसे बे-असर कर देना तुम्हारे लिये कहाँ तक मुनासिब है ?

लव—हे शूरवीर ! तुमने अभी फख्र व शान से कहा था कि अपने इष्टदेव को याद कर ले। मैंने नल की पुकार सुनी और उसे बचाया। मैं श्रीराम का लल्ला हूं। कहिये आपकी तारीफ ?

नल—(लव को प्रणाम करते हुये) कुमार की जय हो आपकी दया से मैं इस खतरे से जान बचाकर निभ गया।

लव—(नल से) हे पूज्य ! अभी तू दूसरी जगह हट बढ़ जा।

नघुक—(तपाक से) मैं नल का छावा नघुक हूँ। तुम्हारा जोर तुम्हारे नाम से ही प्रकट है। मेरे मुकाबले तुम खड़े नहीं हो सकते। भाग जाओ नहीं तो अभी तुम्हारा काम तमाम हो जायगा।

लव—(दुतकारता हुआ) हे राजकुमार ! तू मुझसे उम्र में बड़े हो लेकिन अक्ल तो वही बच्चे-सी है। तुम्हारा ताव और तजुर्बा इसी से जाहिर होता है कि एक बन्दर को जीतने के लिये ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। झेंपने के बजाय अपनी तारीफ सुनाने चले हो। तुम्हें मलामत है। मेरा ओज और बल देखोगे तो ताज्जुब में पड़ जाओगे। तुम्हें अगर अपनी जान प्यारी है तो दूर होकर सामने से हटकर तमाशा देखो। मैं जितने भी तीर चाहूँ उनका इस्तेमाल कर सकता

हूँ। उनका कभी खातमा नहीं होता। तेरे लिये एक ही तीर काफ़ी है। फ़रार हो जा।

नघुक—ऐ लव कुमार! तेरी गुफ़्तगू समयोचित है। तेरी यह गुस्ताखी है और तुझे इस बात का गुमान है कि तूने अपने बाप को आसानी से हराया। उस वक्त तेरे वालिद तुझ पर तरस दिखा-कर तुझे बख्श दिया था। क्या सही तौर पर कोई जङ्ग किया था? उनको जीतना क्या तेरा मजाल? तुझे मैं एक ही खग से चुटकी में गिरा सकता हूं।

लव—खैर! मेरे पिताजी ने रहम से छोड़ दिया तो तू वेरहमी के साथ मर्दानगी दिखा। मैं ताकीद करता हूँ अभागे! एक ही शर से मारकर जहन्नुम पहुँचा दिया जायगा।

नघुक—कदी होकर बच रह। यह पर्जन्यास्त्र तेरे ऊपर छोड़ता हूँ। देखूँ तेरे पास कौन खग है! जो इसका विमोचन करे।

लव—(अपने शर से उसे शान्त करता है) बस हो गया! गरूर दिखा चुके अरे विलल्ला! क्या ऐसे ही तीर के बल पर भू को दरिया में घोलकर पानी छानना चाहता है?

नघुक—अब तक मैं तुझे छोड़ता आया। अब की बार यह कुलिश तेरा अंत करके छोड़ेगा। अपना उद्धार कर।

लव—मुँहफट मुग़र! तू घुचेत बहेलियों की भाँति लघ्वी शरों का प्रयोग कर मुझे अपनी बहादुरी का सबूत देता है? लाज नहीं आती? अण्ट-सण्ट बक कर फ़स् करता है? मालूम होता है कि तेरा अव-सान काल निकट आया है। याद रखो मैं तो सिर्फ़ मारना जानता हूँ जिलाना नहीं। पर मेरे अस्त्र का मजाल गौरप्या जैसा तुझे क्या मालूम होगा? ले अब कचग्रहक्षेप से बच अपने खुदा का ख्याल कर (कचग्रहक्षेप का प्रयोग करता है जो फुफकार मारता हुआ जाता है)

नद्युक—(सिटपिटाता हुआ) स्तब्ध होकर अपने रथ से सौ गज दूर जाकर गिरता है और उसका होश उड़ जाता है)

लव—(स्वगत) अब तो यह कम्बख्त मर गया। तभी कहा था कि इसकी फौत आ गई (दूसरी ओर सुग्रीव को धन्नई चट्टान ढहाकर वीरसेनादि से टण्टा करता हुआ देख) आह ! इतेक राजपूतों का अनुपात हुआ। इस पहाड़ के तले अपरिमेय लश्कर की खून खराबी हुई। मुझे उधर जाने की जरूरत नहीं। अगाड़ी राजा नल खुद रव करता हुआ बढ़ रहा है। वह देखो बन्दर और भालू गलगंजते हुये भाग खड़े हुए। उधर जाकर उनकी हिफ़ाजत करना जरूरी है। अहा ! हमुमान आगया अब कोई परवाह नहीं। हनुमान न जाने क्यों उस उजीर को मारे बिना लँगूल से उठाकर दूर छोड़ आया है ! नल के निकट ही आ पहुँचा है। अब यहाँ सब ठीक मालूम होता है। मैं दूसरी ओर चलूं। मेरे छोटे भाई राजपूतों पर तीरों की झड़ी बरसाकर फ़त्तकें फ़ाँकों की तरह बिखरा रहे हैं ! अब उधर चलूँ। (जाता है)

[पट परिवर्तन]

दूसरा-दृश्य

—युद्ध रङ्ग के एक ओर—

हनुमान—(ताल ठोंक कर झिड़कता हुआ) अहो भय्यों ! भालू-वीर, लंगूर और वानरवीरों ! भभरो मत। लो, मैं आगया। उस नल को देखकर गलगंज मचाते हुये क्यों भागते हो ? अब तो काफ़ी मौका मिला। पहले के रावण, कुम्भकर्ण, इन्द्रदमन, अतिकाय, महाकायादि से भी यह राव खतरनाक नहीं हैं। तुम्हारे आगे वे डरावने असुर भी भाग गये थे, अब इनकी क्या गिनती है ? कुछ

अर्से तक ठहर जाओ मैं अभी इसका काम तमाम किये देता हूँ। मेरे कठोर मुष्टिघात के सामने यह क्या ठहरेगा? मेरे लँगूर से उठाकर उसको ऊपर फेंक दूँ तो आसमान चूमकर आएगा? तुम लोग इसको खिलौने की तरह नचा सकते हो। भागना तुम्हारा काम नहीं है। देखो वह वेदर्द नल नशे से भरे इधर ही आ रहा है जैसे पतङ्ग आग की ओर आता हो। बड़ा माकूल वक्त है। वसीठी के वक्त मुझे कुछ भी बहादुरी दिखाने का हुकुम नहीं मिला था। वह घमण्डी नल मेरी सीख मुअतबर न माना और अपने मुअजिज्ज वजीर की बातपर कान न दिया। मेरा मुक्का खाकर दशानन भी दसों मुँह से खून उगलता हुआ केले के खंभे की भाँति देखते देखते जमीन पर लोट गया। मेरा नाम सुनते ही लंकेश और इन्द्रजीत भी सामना करने के डर से कनखी काट कर हट जाते थे। अब नल महाराज की क्या औकात?

(जंगी पोशाक तनकर मुस्तैदी से नल महाराज का पैठना और बन्दरों की टोली के सामने)

नल—हे भद्दे! कामचोर बन्दरों! नारा बुलन्द करते हो? फिर सहम कर क्यों भागते हो? निशाचर राजा बहुबाहु की भाँति मुझ को भी समझ रखा है क्या? मैं तो चन्द्रवंश का राणा हूँ। ब्रह्मास्त्र से भी न मरने का वर मुझे हासिल है। सारा भूमण्डल और सातों द्वीप मेरे हाथ में हैं मेरी टोली भी इतनी है कि भू सह नहीं सकती इधर देखो इस अनगिनती लश्कर को, और उन सामन्त बीरों को। नाहक मेरे हाथ में न मरो। अपने गपोड़ा बहादुर हनुमान या जाम्बवान को मेरे आगे करो। ताकि वह मेरे शर सेज पर आराम से सोवें।

हनुमान—(वेग से नगीच आकर चस्के के साथ ताल बजाता हुआ मुँह की तरफ झाँक कर कठोर स्वर से) ऐ नल! इधर परख?

इन लोगों के सामने क्या सांटते हो ? मैं श्रीराम का मुलाजिम और सुग्रीव का सचिव हूं । मेरा ही नाम हनुमान है, समझे ?

नल—(हनुमान का नाम सुनते ही झिझक कर कान पकड़ता है) अहो ! तुम्हीं वह सन्देशी हो, जो राम के पास से नल का संदेशा लाये थे ? खाम-ख्याली तुम इस बहस में क्यों आये ? भूले-भटके यहाँ पर घूमने से तुम्हें आक्रान्त होकर मरना पड़ेगा । तुम जङ्ग रङ्ग से सचेत भाग जाओ, अठखेलियाँ मत समझो । यह गाल-माल युद्ध-रङ्ग में काम नहीं देता ।

हनुमान—(कुछ रोष दिखाकर) हे नल ! अपनी बातों का वेग बन्द करो । मैं कामचर हूं । बात में हरकारा ही नहीं बल्कि रण में दुश्मन को तिल-तिलाकर खदेड़नेवाला योद्धा भी हूँ । लङ्का में तनहा जाकर सब के घमण्ड को चकना-चूर कर दिया और ललकार कर कहा कि कोई भी योद्धा हो तो लड़कर देख ले । लेकिन कोई भी मेरे सामने चूँ तक नहीं कर सका । बातों बात में सारे लङ्का को फूँक कर राख कर दिया । अरे प्रज्ञाचक्षु ! उन जबरदस्त दैत्यों के मुकाबले तुम तो एक कीटवत् हो । लङ्का की यह बात रामजी से बिना पूछे मैंने नहीं कही पर अब तेरे सामने कहता हूं इसका मतलब समझो । इस साके के नायक कामद और शरण्य श्रीरामचन्द्र जी नहीं हैं, परन्तु कुश-लव हैं । हाँ ! ये भी तो दीनबन्धु हैं । पर तीर तरकस से निकल जाने के पहले उनके पैर पकड़ कर माफी मांग लो । तभी तुम्हारी रक्षा होने की उम्मीद है । वरना बाद में पछताना पड़ेगा ।

नल—हे खिसियाने ! वलीमुख ! क्या बकता है ? देखना है कि तेरा प्रलाप और प्रताप कहाँ तक सही है । मामूली दैत्यों को मारने ही से तुम शूरमा हो सकते हो ? बड़े आयुध न होने से वानर और रीछों की मदद पाकर पेड़ पहाड़, नख और चट्टानों के सहारे टण्टा करने वाले बन्दरों को लाज कहाँ ? तुम्हारे एकबाल को मैं बखूबी जानता हूं ।

मालिक के सामने शरम छोड़ स्वाँग खेलना तुम्हारे लिये अनोखी बात नहीं। जा! स्वकुच-मर्दन से कोई नफ़ा नहीं। तुम्हारे रावमर्त्य हैं तो मैं भी एक शख्स हूँ अलावा इसके मेरी तो ब्रह्मास्त्र से भी मौत न होगी सुनो—

छन्द—मम उपदेश पै विश्व जो चलै न रहै कलेश।
सदा स्वतन्त्र विराजिहैं जाय स्वर्ग के देश॥
मृत्यु नहीं मेरी कभी मैं काल का भी काल हूँ।
अपने शत्रु को सताने के लिये भौंचाल हूं॥
मैं इन्द्र हूं चन्द्र हूं सूर्य हूं मैं शूर हूं।
मैं मेरु हूं सुमेरु हूं और दिगपालों का दिगपाल हूँ॥

हनुमान—(यों राम की निन्दा सुनते ही कान में उँगली देकर केले के पत्ते के समान काँपता हुआ :—)

चौ०—हरिहर निन्दा सुनइ जो काना। होहि पाप गो-घात समाना॥

(हनुमान ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर सोचा कि इसको शिक्षा देकर मेरा मजा चखाना चाहिये। चारों रीति से समझाना भी एक कायदा है) (प्रकाश) अरे जाहिल पहले तू मेरी सीख सुनले :—

चौ०—राम नाम बिनु गिरा न सोहा। देख बिचारि त्यागि मद मोहा।
वसनहीन नहिं सोह सुरारी। सब भूषण भूषित बर नारी॥

फ़िर भी ऐ अन्धे और बहिरे सुन :—

चौ०—सहसबाहु भुज गहन अपारा। दहन अनल समजासु कुठारा॥
जासु परसु सागर खर धारा। बूड़े नृप अगनित बहु बारा॥
जासु गर्व जेहि देखत भागा। सो नर किमि नल राव अभागा॥
राम मनुज कसरे सठ बंगा। धन्वी काम नदी पुनि गङ्गा॥
पशु सुरधेनु कल्पतरु रूखा। अन्नदान अरु रस कि पियूखा॥
वैनतेय खग अहि सहसानन। चिन्तामणि पुनि उपल खरानन॥
सुनु मति मन्द लोक वैकुण्ठा। लाभु कि रघुपति भगति अकुण्ठा॥

सेन सहित तिन मानमथि । बन उजारि पुर जारि ॥
कसरे सठ हनुमान कपि । गयउ जो तिन सुतमारि ॥
सुनु सुरख परिहरि चतुराई । भजसि न कृपासिन्धु रघुराई ॥
जो खल भयसि राम कर द्रोही । ब्रह्म रुद्र सक राखिन तोही ॥

नल—(क्रोध में छाती फुलाते हुये और जोर-जोर से सांस लेते हुये) अरे बांके बन्दर तुम्हारी मांग बहुत सराहनीय है। पर मुझे एक शङ्का है बता कि श्रीराम महाविष्णु का अवतार हैं न ?

हनुमान—सच-मुच, बेशक।

नल—सुना है एक महाविष्णु दुन्धु दैत्य से मार खाकर भाग गया और एक जिष्णु दक्षयाग में वीरभद्र से डरकर भाग गया, एक चक्रा-युध गरुड़ से सहम कर उससे मैत्री करके दो वरदान लिया। अब बता उन तीनों में से यह राम कौन था ? देख, मेरे सामने ज्यादे गाल न बजा। मुझे तेरी कारवाइयां भली-भांति मालूम हैं। जबान सम्हाल कर बोल। दूत कारज के समय मन्त्री की बात पर तुझे मारना अच्छा न समझ कर छोड़ दिया। तेरे सर की गर्मी को एक ही बार में ठंडा कर दूँगा। अब क्या दाँत किट-किटाता है ? अब मरने को संसिद्ध हो जा।

हनुमान—(विकट हँसी हँसकर) हे राव ! गाल बजाना तो मुझे तेरे ही पास सीखना पड़ेगा। तेरे किस्मत की रफ्तार में क्या बदा है ! जान गया ! हार बाकी है।

नल—रे विकट बन्दर ! अण्ट-सण्ट से क्या फ़ायदा है ? इठलाता क्यों है ? जानता नहीं कि मैं कौन हूँ।

हनुमान—तो क्या ? तू अपने अपजस को झट-पट देखना चाहता है ?

नल—अपजस ! किसको है तू स्थिर कर सकता है ?

हनुमान—हाँ ! ठीक है। तेरा काला आनन देखते ही मैंने भांप लिया। तेरा अनिष्ट सिर पर नाच रहा है देखो ?

चौ०—काल दण्ड गहि काहुन मारा। हरइ धर्म बल-बुद्धि विचारा॥
निकट काल जेहि आवत साईं। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं॥

मैं क्या करूँ? तुझे काल सत्कार पूर्वक गले लगाना चाहता है और तू भी मुस्तैदी से लैस है।

नल—(रुष्ट होकर) अरे! छोटी मुँह बड़ी बात! तू व-खूबी नहीं जानता। मैंने सात टापुओं को जीता है, एक ही शराग्नि में तुझे टिड्डी की नाईं झुलसा दूँगा। मेरे सामने से हट जा।

हनुमान—मुझे उतनी देर की जरूरत नहीं। मेरी पूँछ से रथ सहित उमेठ कर तुझे फल की भांति कृतांत के हाथ सौंप देता हूँ। रहम खाकर तुझे पुनि ताकीद करता हूँ। तू तो कजे के पंजे में फँस गया। अब मैं कुमारों की हुक्म के बगैर नहीं छोड़ूँगा। यदि जीना चाहते हो तो अभी मेरा मुक्का खाने के पहले स्वस्ति कहकर श्रीरामचन्द्रजी और कुश-लव के चरणों में जाकर पनाह माँग। फरायज से अभी जहन्नुम रसीद होगा। और सुनो :—

चौ०—जिन हरि भक्ति हृदय नहिं आनी। जीवत शव सम तेई प्रानी॥
जे नहिं करहिं राम गुन गाना। जीह सो दादुर जीहसमाना॥

नल—(हँसकर) मिला हमहिं कपि गुरु बड़ ज्ञानी। खुराफाती? लबार! सख्त बातें करनेवाले वकी! राम के स्तावक! जलील बन्दर! अलीक प्रलापी! तू कुश कुश निकालना कई बार बोल रहा है। वह तो मेरे लिये कुश-तृण के बराबर है। इन बातों को छोड़। दमभर में तुझे मठिया मेट कर दूँगा। पहले अपनी देख उसके बाद कुश की बारी आयगी।

हनुमान—जाने दो मैं भी कसदन शिकस्त चाहता हूँ क्यों कि मैं तो जानबाज लोकघट हूं।

नल—(ललकार कर) खड़ारह! (दसवाण एक बार छोड़ता है)

हनुमान—नफीस! नाहक छोड़ दिया! (वार से बच कर) वाण

कहाँ गये ? फ़रमाइये। आप की तीरन्दाजी काबिले तारीफ़ है। देखिये सितारे गिर रहे हैं।

नल—(ऐंठ से, फुप्फुस में हवा खींचकर अचरज से) अब देख ! कैसे बचता है ? (सौ बाण एक साथ छोड़ता है)

हनुमान—(बाणों से बचकर हँसता है) आप की फुर्ती और निशानों का मैं कहाँ तक बखान करूँ ? श्रीराम जी आप के पास रहकर चन्द अर्से तक शागिर्दी करें तो अच्छा होता। दुबारा कोशिश कीजिये।

नल—(क्रोध से तमतमाते हुये) हे आग्नेय बाण ! जाकर इस बानर को जलाकर राख कर दो (अग्नि-बान छोड़ता है)

हनुमान—हे पावक ! चेत। मेरी लाज बचा। अगर पास आयगा तो पकड़ कर दरिया में डुबो कर नाश कर दूँगा। खबरदार ! (बाण शांत हो जाता है।)

नल—(पर्जन्यास्त्र का प्रयोग करता है)

हनुमान—हे पर्जन्य ! देखो, मैं हनुमान हूँ (बाण बेमसरफ़ का होता है)

नल—(दाँत पीसकर ओंठ चबाता हुआ) अब ठहर ! इस हथियार से मरेगा (ऐन्द्रास्त्र छोड़ता है)

हनुमान—हे सुरेश ! मैं तेरे लिये ही सुग्रीव व श्रीराम में दोस्ती कराई और राम का दूत बनकर लंका जाते वक्त सुरसा को अघाया। इसको मत भूल (बाण बेकार जाता है)

नल—(हैरान होकर प्रश्वापास्त्र निकाल कर छोड़ता हुआ) जा तू अब इससे नहीं बच सकेगा। (देवता लोग ऊपर से चिल्लाते हैं।

"हे राजन् ! इसे इस्तेमाल मत करो।" नल उनकी बात अनसुनी करके सायक अमल में लाता है)

हनुमान—(जानकर) अहा ! यह अस्त्र इसके पास है ! हा ! अहं ! हमको क्या भूल गया ? (बाण लगते ही गिर जाता है)

नल—(खुश होकर कहकहा लगाकर हँसता है) अरे बन्दर अभी तक मेरे ऊपर रोब गालिब करता रहा ! अब कहाँ गया ? कहाँ गया रे ? तेरे राम और तेरे कुश ? (देवता लोग राम राम कहकर भाग जाते हैं)

हनुमान—(उठकर फ़िर से डट जाता है) अरे बेवकूफ़ ? मैं तो यहीं हूँ, देखता नहीं ?

चौ०—जो अस करउँ न तदपि बड़ाई । मुयेन्हि बधे कछु नहिं मनुसाई ॥
कौल काम बस कृपनि विमूढ़ा । अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ॥
सदा रोग वस संतत क्रोधी । विष्णुविमुख श्रुतिसंत विरोधी ॥
तनु पोषक निन्दक अघखानी । जीवत शव सम चौदह प्रानी ॥

(मनमें):—अब तो मजबूरन इसके ऊपर वारकरना पड़ेगा) रे घमण्डी ! मैं तो गिरा भी नहीं मरा भी नहीं । मेरे गुरु व पिता शिव जी की इज्जत में प्रणाम करता रहा । अब मेरा मजा चख (कहता हुआ झपट कर नल का सिर मरोड़ एक मुक्का जमाया । उसकी जरब से नल चीखता हुआ ताल्हे पर लोट गया और बद-होश हो गया ।

हनुमान कान लगाकर दूसरी ओर से "बचाव बचाव", "हे अङ्गद, हनुमान, जाम्बवान, नल और नील ! हमें इस रोले से बचाव ।" की पुकार सुनकर तुरन्त वहाँ से दौड़ पड़ा ।)

[परदा गिरता है]

तीसरा-दृश्य

रानी—(अपने पति को खोजती-खोजती बीबी के घर पहुँची और पूछती है) बहिन ! मेरे पतिदेव आपके घर आये थे ?

बीबी—हाँ बहिन ! आये थे। आओ (हाथ पकड़ कर हँसती गले लगाती है और सब हाल सुनाकर बिठाती है)

रानी—(कह कहा लगाकर हँसती है) बहिन ! तुमने तो अच्छा काम किया। उतनी तरकीब और आदत मुझमें नहीं, धन्यवाद। हम दोनों जरूर बहिने हैं जैसे वे दोनों दोस्त हैं। ऐसी ही एक कहानी है सुनो। "एक कंजूस के पास एक लड़का था और एक मक्खीचूस के पास एक लड़की थी। वे दोनों दुलहिन और दूल्हा के खोज में अपने-अपने गाँव से निकले। सब देश घूम-घामकर परेशान हो गये। पर अपने-अपने आदत वाले कंजूस न मिले। एक दिन वे दोनों जलपान करने एक कंभाल चेरु नामक तालाब पर पहुँचे। कंजूस अपनी घी की घड़िया अपने सामने कुछ दूर पर रखकर रोटी का टुकड़ा तोड़ा और उसे घड़िये की ओर दिखाकर खाने लगा। इतने में मक्खी चूस वहाँ पहुँच गया और कंजूस पर नजर देकर घृणा से कहने लगा जनाब ! आपका कहाँ से आना हुआ ?

कंजूस—महाराज मैं देहली का वासिन्दा हूं। मेरे लड़के की शादी तय करने की खोज में निकला हूँ।

मक्खीचूस—(विकट हँसी से) तुम्हारे लड़के को कौन देगा ? मेरे पास भी एक लड़की है।

कंजूस—क्यों नहीं देगा ?

मक्खी०—फिर पूछते हैं ? इस तरह बेकार घी खर्च करनेवाले का घर बढ़ता है ?

कंजूस—हाँ ! जरूर।

मक्खी—(रोटी की गठरी खोला और उसमें से रोटियाँ, एक खूँटी और एक घी की घड़िया निकाला। वह खूँटी लेकर पत्थर से एक पेड़ के ठूठ में चुभाया और घड़िया रस्सी से लटकाया। आप रोटियों के

टुकड़े करके पेड़ के उलटे मुँह बैठा और रोटी का टुकड़ा सिर पर से उस घड़िये की ओर दिखाकर खाने लगा।

कंजूस—(अपने में सोचा कि यह मुझसे भी बढ़कर वायु भक्षक परम भक्षक मालूम होता है। तुरन्त मक्खीचूस के पैर पकड़ प्रार्थना की कि आपकी लड़की से मेरे लड़के की शादी कीजिये। आज से आपको मैं समधी समझता हूँ।)

मक्खी—(अपने में "इससे बढ़कर और कोई नहीं मिलेगा") अच्छा, एक शर्त पर दूँगा कि तुम भी मेरे जैसे करो। इस प्रकार खर्च करोगे तो गिरस्ती कुछ ही दिनों में बरबाद हो जायगी। मैं भी उसी सूबे का हूँ।

कंजूस—आपके सीख के मुताबिक चलूँगा। आपकी बेटी को मेरी बहू बना दो।

मक्खी—(लाचार समझ, झट समधी को गले लगा लिया) अच्छा चलो चलें। (दोनों चले गये)

रानी—बहिन ! उसी तरह हम दोनों आज बहिनें बनी। उन दोनों बेवकूफों को खूब-मार-पीटकर ही हम ठीक करती हैं। बहिन देखो ! नल और कुश-लव में जो लड़ाई पैदा हुई उसमें आजादी के लिये जंग में न जाकर दोनों मर्द मरी औरत की तरह कोठरी में बैठे सिट्टी मारते थे क्या यह ठीक है बहिन !

बीबी—पगली ! तुम कुछ भी कायदा नहीं जानती बहिन ! पहले हमारे अक्लमन्द और विद्याधर लोगों ने सात निकाह तक करने का हक दिया। यह भी नहीं जानती ?

रानी—यह मुनासिब है ? दूसरा व्याह ! वह कैसा ?

बीबी—तुम और भी पीछे हो। आगे कलियुग में पाप बढ़ाने के नियम हैं। इस वास्ते हमारे बूढ़ों ने इस कायदे को अभी से लिख छोड़ा।

रानी—सच है ? तो ये गधे घर न आवें तो भी हमें कोई कमी नहीं। अच्छा! मैं कल कलेवा करके आऊँगी, अभी छुट्टी दो।

बीबी—जरूर आना बहिन। हाँ हाँ याद आती है और एक बात सुनो। पर यह गुप्त बातें किसी से न कहना।

रानी—कहो कहो क्या बात है ?

बीबी—कुछ ही युग के बाद मर्दों के मूँछ निकाल कर कलि-पुरुष हमें लगावेंगे और बच्चे मर्दों के पेट से ही पैदा होने वाले हैं।

रानी—अच्छी बात है ! यों खुदा हम पर कृपा करें तो क्या कहने की बात है ? मर्दों से ही खाना पकवावेंगी। घर का काम-काज कराकर हम कोट पतलून पहनकर वजीर आदि का काम नहीं कर सकती ? क्यों बहिन ? हम नहीं कर सकतीं ?

बीबी—बेशक-लाकलाम। मैं इसके पहले से ही कोट-पतलून पहनती हूँ। देखो बहिन ! और एक इल्जाम है सुनो। हमें तो बच्चों को पैदा करके पालन-पोशन याने मल-मूत्र आदि उठाकर फेंकना है। हमें ही पकाना है। उन्हें तो पहले-पहल खिलाकर बची-खुची जूटन हमें खाना है। क्या यह मुमकिन है। मुझे कितना कुढ़ पैदा होता है ! तुझे क्या ज्ञात है ? देखो ! बिस्तरा सब-कुछ हमें सजाना है पहले-पहल उन्हें उस पर पधारना है ! वे तो धोती पहनते हैं हमें तो साड़ी पहनना है। वे उद्योग कर सकते हैं पर हमें तो घर पर ही मढ़े रहना है। वे तो दुनिया भर घूम सकते हैं पर हमें तो अड़ोस-पड़ोस भी जाना मना है। उनके कपड़े हमें धोना है हमारे कपड़े वे नहीं धोते ! उनके बाल तो हमें सँवारना है वे हमें नहीं सँवारते। उन्हें हमें जी ! जनाब कहकर बुलाना है वे तो हमें ओ० सी० ए० ए० कहकर नीच लौण्डी की तरह बुला सकते हैं। क्या नाम लेकर बुलाने से उनका जीभ कट जाता है ? कहो बहिन ? आखिर को हम एक हो जावें तो जहान पल भर में मिट्टी में मिल जायगी न ? मुझे सिर से पग तक जल रहा

है वहिन ! आखिर को इन मर्दों से सरोकार रखना ही बहुत दूभर जान पड़ता है देखती हो ये दोनों को ? ऐसे बेकार मर्दों से हमारा क्या काम चलेगा ? क्या कहोगी ? वहिन ?

राज्ञी—(अपनी पति को यादकर गहरी साँस लेती है) हकीक़त में मुझे एक शंका है सुनो । हम बुर्क़ा डालकर कहीं यदि जायँ तो लँपट लोग क्यों पीछे लगते हैं ?

बीबी—यही अचरज की बात है कि जब बुरखा निकाल फेंककर सीधे जावेंगी तो कोई पीछा नहीं करेगा । जब हममें ऐब हैं तब वे कुत्तों के बराबर हमें नहीं छोड़ेंगे । देखो ! ये मर्द लोगों को एक ही नजर से गिरा सकते हैं । देखो हमारे बेचारे सरदारों को ।

राज्ञी—तुम्हारी बात सच है तो हमारा समाज आगे सुख पायेगा । बहिन ! मैं कल कलेआ करके या व्यालू करते ही आ जाऊँगी । कुछ देर और भी खुशी मनावेंगी ।

बीबी—जरूर आना । (राज्ञी चली जाती है)

[पट परिवर्तन]

चौथा-दृश्य

नल—(बदहोशी से उठकर दिग्भ्रम हो तसबीस के साथ अपने में सोचने लगा) यह कैसी जिल्लत ? बन्दर से परास्त हुआ ! छिः मुझे लानत है । मैंने सोचा था कि हनुमान मारा गया और मैं जीत गया । पर उलटा हो रहा है । उसका एकबाल बुलन्द है । मेरे तमाम अमोघास्त्रों को बरबाद कर दिया ! अब जीना भी बेकार है । उसे मारे बगैर जिन्दगी विफल होगी । लोग देखकर मेरी मसखरी कर रहे हैं । अहा ! कमर में दर्द हो रहा है ! क्या जबरदस्त मुक्का है ! मेरे हाथ में भी ब्रह्मास्त्र है इससे अभी उसका खातमा करूँगा । क्या अमोघास्त्र से न मरनेवाला ब्रह्मास्त्र से मरेगा ! देखूँ । (उठके गर्द

ऐंछकर हनुमान को खोजने लगता है) (प्रकाश) रे बन्दर ! कहाँ गया ? कहाँ गया रे ? किधर है ? कहाँ छिपा है ? कहाँ भागता है ? आ मेरे सामने मारे बिना न छोड़ूँगा ?

अंगद—(तेजी से नल के समक्ष होकर) हे नल ! क्या बात है ? इतना श्रान्त मालूम होते हो और बौखलाये से किधर कूचकर रहे हो ? क्या कुछ खतरा है ? क्या आपात से तो नहीं आ रहे हो ? तेरा तलुवा सूख रहा है ? किसी के मार का असर तो नहीं है ? क्यों डोलते नहीं बनता ?

नल—हे सिगूफ़ा ! क्या बकता है ? (अपने में) एक बन्दर ने मुझे मार गिराया। अब यह वली मुख कौन हाजिर हुआ है ? उससे भी कुछ मोटा-ताजा और लाल मुँह देख पड़ता है ! क्या कुलमीजान की पड़ताल करने पर यही रक़म देख पड़ता है ! अब देर करना ठीक नहीं (तवज्जुह के साथ ब्रह्मास्त्र निकाल कर छोड़ता है) (प्रकाश) अरे घुड़मुँह ! अभी यह तेरा मुँह बन्द करके छक्के छुड़ा देगा।

अंगद—(तीर लगते ही गफ़लत में कराहकर) हा राम ! आपका काम पूरा किये बगैर ही बेदम हो रहा हूँ (मूर्छित होकर जान छोड़ देता है चारों ओर हाहाकार मच जाता है। सब चिल्लाते हैं "शाह-ज़ादा मर गये" ! यह शोर चारों ओर फैल जाती है। इसकी भनक पाकर हनुमज्जाम्बवान वहाँ घर घराहट का शब्द करते हुए तपक कर आ पहुँचते हैं।)

हनुमान—(अफ़सोस करते हुए अङ्गद को छाती से लगाकर विलाप करता है) ओ टीका ! अख़ीर कारज में रावण संहार के वक्त पहले-पहल नरान्तक ने जिस पैर को उठाया था उसी पैर को तूने पकड़ कर उसको पछाड़ मारा। शुरू से आखिर तक कन्धे से कन्धा लगाकर भिड़ते रहे। रावण का इख्तयार कुचलकर नाम पाया। वह रोशनी कहाँ गई ? बरबस यहाँ काल ने तुझे ग्रसा ? हे भय्या ! वह

मनहूस नल तुम्हारा काम तमाम कर दिया? वानर राज सुग्रीव मुझे क्या कहेंगे? मैं कितना बेवकूफ हूँ! तुझे अकेला छोड़ दूसरे ठौर क्यों गया? यह भावी सोचा होता तो तुम्हें बुलाता ही नहीं। यों नल को पहले ही मार डाला होता! आह! ऐसा शाहजादा और ऐसा दोस्त कहाँ मिलेगा? यदि पत्नी मरे तो कई उससे अच्छी मिल सकती हैं। पर ऐसा ईमानदार और पराक्रमी मित्र नहीं मिलेगा? जब मैं तुम्हें आपत्काल में नहीं बचा सका तब मैं पापी ही हूं। क्या मैं आपका मित्र हूं! नहीं बिलकुल शत्रु हूँ। हा राम (आँखें मींचकर रोता बिल-खता अङ्गद को बारबार गले से लगाकर) हाय! रामजी से जाकर कहो कि अङ्गद और हनुमान मर गये। हे जाम्बवान! अङ्गद इस लोक में न रहा तो मैं भी नहीं रहूँगा। (रोने लगता है। सिगरा के सिगरा भालू और बन्दर उसका मुँह-ताकते सिसक-सिसक कर रोने लगते हैं)

जाम्बवान—(अङ्गद को उठाकर अपने गोद में लिटा के हनुमान से) हे सर्वज्ञ पवनकुमार! यह तुम क्या कर रहे हो? क्या बावला बन गये? अफसोस मत करो। क्या अपने आपको भूल गये? खुदखुशी मुनासिब है? बच्चों की नाईं सिटपिटाकर घबरा रहे हो? इसका क्या माने? आगे की करतूत सोचो। सुनो। कुशकुमार इस जल्लाद नल से समझता रहेगा तब तक हम दोनों इसको शफ़ाखाने ले चलें। हे हनुमान! उद्विग्न क्यों होते हो? जीवंजीवक और विशल्यकरणि से जैसे लक्ष्मण को जिलाया था वैसे ही इसको भी जिलाओ। मेधावी होकर भी निठल्लू क्यों बनते हो?

हनुमान—(कुछ सम्हल कर चौंक के) आर्य सर्वज्ञ! आपने अच्छी हिक्मत याद कराई। आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। याद आया कि पहले ही कुश लव के इशारे पर इस जङ्ग के वास्ते सारी जड़ी बूटियाँ इकट्ठी की गई हैं। देर न करो इसे ले चलें। चलो।

कुश—हम इस बदमाश से भिड़ने रहेंगे। आप लोग बेफिक्र जाओ। क्या यह मुझसे लड़ेगा? लड़े तो बहुत अच्छा होगा।

[अङ्गद को उठाकर हनुमान और जाम्बवान का जाना]

नल—अरे! तुम लोग जाते हो? तुम लोगों का काम तमाम हो गया? अब मुझ से कौन लड़ेगा? इस बच्चे को अकेला मेरे सामने क्यों छोड़ जाते हो? बेचारा यह कौन है?

कुश—(झल्लाकर) हे राजन्! आप जानते होंगे कि आग, नाग, ब्राह्मण और क्षत्रिय इन चारों में छोटे बड़े का अन्तर नहीं होता। आपने बेकार जङ्ग के वास्ते इश्तहार जारी किया है। फ़ायदा तो कुछ हासिल होना नहीं। इस अन-बन से आपको चारों तरफ से आफ़त ही आफ़त है। "बिना विचारे जो करे सो आगे पछताय" यही सीख आप को मिलेगी। खामोसी से वापस चले जाने में ही आपकी खैरियत है।

नल—(हँसते हुए) अरे बाँवला! तुम जैसे छोटे बच्चे हो वैसे ही तेरी अक्ल भी है। तुम लोगों पर फतह पाना ही हमारा मकसद है। यह बात तेरी समझ में नहीं आयगी।

कुश—अच्छा! यह तो बताइये कि आपने किस किसको जङ्गमें परास्त किया?

नल—परास्त हुआ कौन नहीं?

कुश—क्या पवन-सुत हनुमान परास्त हुआ? ऋच्छपति, मेरा भाई लव? मेरे चचेरे बिरादरों की बहादुरी आपने देखी है?

नल—अरे मुतफ़न्नी? तू बात बढ़ाता है? देख! ये सब नये योद्धा नहीं है। छोटे छोटे पैदलों से हाथा-पाई करनेवाले और कठ-जीव हैं। खैर जाने दो। तुम्हारे वालिद राम और चाचे लखन वगैरह कहाँ हैं? तुम तो अभी नादान बच्चे हो। जङ्ग में क्यों आये? यह तमाशा देखने की जगह नहीं है।

लव—(नल को ढूँढ़ता हुआ पहुँचता है) क्या तेरे लिये उनका भी दरकार है ? क्या हम लोग काफी नहीं हैं ? रे उन्मत्त ! मैं ही लव हूँ जिसने तेरे एकलौते को दोजख पहुँचा दिया। अब तुम्हें भी रवाना करने के लिये खोज रहा हूँ। पहले मुझसे लड़ ले तब पीछे वे भी आयेंगे (कुश को हाथ से हटाते हुए) बड़े बिरादर ! इससे मुझे लड़ने दो।

कुश—(लव को हार्दिकता से नगीचे खींचकर) क्या कह रहे हो ? भय्ये ! हमारे रहते हुये तुम्हारी आवश्यकता बिल-कुल नहीं। यह शिकार मेरे खालिक का है। इसके अलावा तुम थके-माँदे मालूम होते हो। तुम वालिद । के पास जाकर यहाँ का हाल सुनाओ और सुस्ताओ। इसे मैंने अपने हिस्से में चुन लिया है और इसे मैं ही मारूँगा।

लव—मैं तो श्रान्त नहीं हूं। मुझे भी लड़ने की खुशी बढ़ रही है। भय्या तुम देखते रहो। इसे अपने बेटे के पास गले लगाने भेज दूँगा। वहाँ जाकर अपने बेटे से कहेगा कि जिसने तुम्हें दोजख भेजा वही मुझे भी तुमको छाती से लगाने भेजा है।

कुश—बन्धु ! न मानोगे ?

लव—भाई की मन्शा ऐसी ही है तो मैं जाता हूं।

[प्रणाम करके जाता है]

कुश—हे राजन ! मैंने पहले ही हनुमान को सुलह के लिये तुम्हारे पास भेजा था। लेकिन तुमने एलची की बात किसी ढब से न मानी। बेकार जङ्ग ठानकर बेकसूर गरीब जीवल की खून खराबी कराने आये। बन्दर और भालू तुम्हारी फौज की कुर्बानी में खुशी मना रहे हैं। और तेरे कितेक जवानों को मिस्ले-गुल नोंचकर गुम-कर रहे हैं। मेहरबानी करके मेरी बात मानिये, घर लौट जाइये। कसदन आफ़ात क्यों मोल लेते हैं ?

नल—हे कुश कुमार ! तुम्हारी मन्शा क्या है ? क्या कामयाबी योंही तुम्हें दे दूँ ? सातों नडाओं को खेल ही खेल में जीत कर बादशाह बन गया। मुझे ऐसे-ऐसे वर हासिल हैं कि पुरन्दर भी मेरे सामने मात खा जायगा।

कुश—क्या हवाई किले बान्ध कर खुद बादशाह बन गये हो ? नदी का तिभाग तैरकर किनारे पर पहुँचते पहुँचते जान खोना पड़ा, वैसे ही तुम्हारी हालत है। आपने परशुराम जी को भी हराया न ?

नल—उससे तो भेंट ही नहीं हुई।

कुश—अहो ! अब पता लगा। पगडण्डी से आप भाग गये होंगे ? पता चलना तो भृगुनाथ तुम्हें राजा कहलाने पर कसूरवार समझ कहीं छिपने पर भी उच्छेद कर डालता। तुमने मजबूर होकर अपनी मीठी जान बचाई। खैर यह बुरा काम तो नहीं है ?

नल—(टीसकर व्याकुल हो अपने में :—यह क्या ! यह दाग इसे कैसे ज्ञान हुआ ! यह भारी छिद्रान्वेषी मालूम होता है) (प्रकट) मैं तो उस वक्त द्वीपों को जीतने गया था। मेरे लौटने तक वह इत्तिफ़ाक से तुम्हारे बाप के हाथ हार खा चुका था।

कुश—मेरे वालिद के अश्वमेध यजन के समय यायावर के साथ मेरा चाचा पृथ्वी मण्डल घूमकर जीता। तब शायद श्रीमान जी कहीं और गये होंगे।

नल—मैं उस वक्त भी किले पर न था। जब से मुझे यह मालूम हुआ तब से आप लोगों को गिरफ़्तार करने की ताक में हूँ।

कुश—अच्छी रही। यह भी तो निरे चण्डूखाने की गप मालूम होती है। इसी आदत से तो हार खाने को नौबत भी न पड़ी। द्वीपों में भी कोई खटका न रहा होगा ! सलाम महाराज ! सलाम। तुम अब तक ऐसे बचते आये हो जैसे बत्तीसी में जीभ या गूलर में कीड़े।

नल—बतक्कड़ ! अलीक प्रलापी, गरूरी, हमेवी तू शाहजादा

होकर माकूल कलमा भी नहीं बोल सकता। तू लम्बी चौड़ी बातें क्यों हाँकता है? मुझे ताली बजाता है? अण्ड-बण्ड बकने से क्या फ़ायदा?

कुश—सच बोलने से खानगी को भी बुरा लगता है वरन् तू क्यों इतना खफ़ा होता है? खालिस अनिवार्य है? अब तू मेरे बाणों के नज़र होने को तयार हो जा।

नल—(क्रुद्ध से) अरे अनभ्र! क्या तू मेरे फ़ौज से भिड़ चुका?

कुश—नहीं, नहीं, बादशाह जी! मैंने तो आप ही को निशाना बनाया है। गजारि कभी सियार को नहीं मारता। आपके बल का बखान ऐसा जान पड़ता है जैसे कि कोई नामी मक्खीचूस या शौंडिक अपने दान का गुणगान करता हो। आप अपने परिवार से विदाई तो लेही आये होंगे।

नल—अरे घमण्डी! तेरी बातों को बच्चा समझ कर माफ़ कर दिया। देखो, अब नहीं सह सकता।

कुश—हाँ! हाँ! तुम्हारी क्षमता सराहनीय है। तुम्हारे बच्चे के मारनेवाले को तुमने क्षमा कर दिया! और तुझे घूँसा लगाकर रथ से गर्द में गिरानेवाले को भी माफ़ कर दिया!! अब कसूरवार समझ तयार न रहनेवाले अङ्गद पर ब्रह्मास्त्र छोड़कर मार गिराया। अरे तुझे अक़्ल है? सुनो—'हितमत तोहि न लागत कैसे। काल विवश कहुँ भेषज जैसे।'

नल—(भड़क कर) ऐ डिंभक? अच्छा, तेरी तनज्जुली भी अङ्गद के समान नगीच आ पहुँची है। तेरे बातों पर मैं सहम जाऊँगा? वाहरे! अब अपने को बचा, नहीं तो मेरे वार से तेरा सिर सौ टूक हो जायगा। मैं तेरी कुछ भी बरदास्त नहीं कर सकता! सावधान होजा। (वार करता है)

कुश—अहा! बराबर आपकी तीरन्दाजी अचूक और सराहनीय

हो रही है। अबकी बार सीस दो सौ टूक होकर गिर पड़ेगा। (नल के वार को बारबार काटना है)

नल—(क्रोधावेश में) अबकी बार इस प्रखर बाण को रोक ले तो जानूँगा। (बाण सौ चलाता है)

कुश—(वार को रोककर बगल हटता है) बेहया! सच-मुच तू लाजवाब तीरन्दाज है। अबकी कोशिश निर्विघ्न होगी। फिर कोशिश करो।

नल—(फौलाद से बनी हुई तीखी शक्ति को उतावलेपन से तरकस से निकाल कर इस्तेमाल करता है) अरे कमअकल उठल्लू इससे मर।

कुश—(शिलीमुख शक्ति से उसे भेदकर हव्यवाह शर से वह्नि बरसाता है)

नल—(अत्यमर्ष से वारुणास्त्र छोड़ पानी बरसाकर उसे शान्त करता है और हेकड़ी के साथ) अरे बेवकूफ! यह मेरा क्या करेगा? इतमीनान रखो मुझे ब्रह्मास्त्र से भी कजा नहीं। तेरे करिश्मे मेरे पास चलने पावेंगे? सुनो—

छं०—शर शक्ति से काल अकाल करौं

नभ वारिधि बोरि बघार बनाऊँ।

अलक्ष्य को लक्ष्य करौं छिन में

भुइँ विवन मेटि बयार उडाऊँ॥

ईश महेश सुरेश लखैं, पद

चाँपि सन्धान पताल पठाऊँ।

लोकप कोटिन काटि भरौं रन—

रङ्ग के थाल, बहार मनाऊँ॥ १॥

अलक-लडैता अल्हड़ जान

अबै अवलम्ब है विधि समझाऊँ।

कुशल नहीं कुश वास समान
तैं कोप कृशान में जारि वहाऊँ ॥
चतुरानन के वरदानन तें
सातहुँ द्वीपन राज चलाऊँ ।
शशि-वंश के अंशुन में विचरे
अकलंक महा नल-हंस कहाऊँ ॥२॥

कुश—छं०—तव अभिमान हरौं अवहीं
कवहूँ न तजौं सुन आन यही ।
तिहुँ लोक पुरन्दर शंकर भी
नहिं वार सकैं शरघात सही ॥
रघुवंश के अंश रहै जव लौं
केहि राज करै, मतिमन्द ! मही ।
वरवंक के शंक नहीं हमहीं
शशिवंश-कलंक ! दहौं छिनहीं ॥

(हंलव करके) अच्छा ! ब्रह्मास्त्र से भी तेरी तनज्जुली नहीं होगी ? मैं यह वात विलकुल भूल गया ! तुझ जैसे खराव व खावड़ों को वर देनेवाले ब्रह्मा भी दिखावें कि उनकी क्या मर्दानगी है ? ऐसे शक्स को वर देकर वेजाकाम करनेवाले भी उसका नतीजा समझ लें । मैं उसी ब्रह्मास्त्र से तेरा इफ्तखार कूटकर दोजख भेजूँगा । (ब्रह्मास्त्र को कमान पर चढ़ाके आसमान की ओर ताककर दुहाई करता है) ऐ वृकोदर ! यदि मेरे वालिदैन सच्चे सीताराम जिष्णु और त्रिवली के अवतार हों तो और शरणागत रक्षक, सत्य वचन वोलनेवाले हों तो, मेरी माता सती साध्वी शिरोमणि हो तो और मैं वाल्मीकि के सच्चे साऊँ हों तो, हे विधाता ! यह शर जाके इसकी जान लेने में कामयाव होवे (वाण चलाने को तयार होता है)

ब्रह्मा—(इतने ही में ब्रह्मा खुद आकर घवड़ाहट के साथ) ठहरो !

ठहरो ! ठहरो कुश ! (कहकर कलाई पकड़ लेता है और बाण चलाने से बाज रखता है)

कुश—(अचम्भे में) यों मेरे धन्धे में अटकनेवाले आप कौन हैं ?

ब्रह्मा—हे वत्स ! जिस तीर को तू छोड़ रहा है उसीका मैं आदि देव ब्रह्मा हूँ।

कुश—हे सतदेव ! प्रणाम। आपको इसके अमल में क्या व्याघात हुआ ? आपका मतलब क्या है ?

ब्रह्मा—इससे इसकी मौत नहीं हो सकती।

कुश—(तअस्सुब से) क्यों नहीं ?

ब्रह्मा—(कुश की ठुड्डी पकड़ कर मनाते हुए) हे बच्चा ! मैंने वरदान दिया है कि ब्रह्मास्त्र से इसकी मौत न हो। इसलिये तू मेरी बात मानकर इस अस्त्र का प्रयोग न कर।

कुश—अगर आपने वर दिया है तो उसकी हिफ़ाजत कीजिये। मैं तो इससे काम लिये बिना न रहूँगा।

ब्रह्मा—(घबड़ाकर आत्मगत) हा देव ! मुझे संकट में डाल दिया है ! मैंने तो वर दिया था कि ब्रह्मास्त्र से इसकी मौत न होगी परन्तु यह कुश तो बड़ी ओरि से ढिठाई कर रहा है। जिद पकड़ कर उसकी जान लेने पर तुला हुआ है। यह मेरी कही तो नहीं मानता। क्या करूँ ! हे देव ! इसे समझाइये ! कोई तदबीर बताइये। (प्रकाश) हे कुमार ! जरा ठहरो, मैं तेरे पिता से मिलकर अभी आऊँगा, जरा मुहलत दो मेरी आबरू बचा। इतना जरा मान जा।

कुश—मुझे कोई सरोकार नहीं। आपने बिना सोचे विचारे ऐसे शक्स को वर देने का गुनाह किया है तो उसका नतीजा और कौन भोगेगा ? इसे आपही बचाइये। मुझे क्यों मना करते हैं ? (चट हाथ खींच लेता है। ललक से फ़ौज में शोर मच जाती है और चारों ओर कोलाहल होने लगता है। "कुश महाराज की जय, कुश महाराज

की जय। इसकी जान बिना सोचे विचारे ले लो" की शोर गूँज उठती है।)

ब्रह्मा—हे कुश बाबा! मैं सारे खलखत का स्वामी और आजा हूं। मेरी आबरू तनिक रखो। जरा कहना मानो।

कुश—इस बेरहमी के लिये? आप पितामह हों ख्वाह प्रपितामह। इससे मेरा क्या लगाव? नहीं ऐसा मुझसे न होगा। यदि आपका कुछ मजाल हो तो उसके हाफिज्ज हो जाइये। (आगे बढ़ता है। ब्रह्मा आगे खड़े होकर रोकता है)

ब्रह्मा—(विह्वल हो माथे पर हाथ ठोंक के सोचता है) मेरी बदनसीबी। क्या किसी दूसरे को वहाँ भेजकर दिखवाऊँ! यदि मैं राम के पास जाऊँ तो इसी बीच में इसे मार डालेगा। (प्रकाश) अरे लल्ला! थोड़ी देर फुरसत दो जरा ठहर जाओ। इतने में जो मुनासिब होगा करूँगा।

कुश—याद रखिये अब यह कदम बोसी भी करें तो मैं मानने वाला नहीं। इसलिये पैरवी करना फजूल है। कायल तो मैं किसी हालत में नहीं हो सकता।

ब्रह्मा—(मानसिक रूप से भव के चरणों में माथा रगड़ता है। रोशनी की झलक दिखाई देती है। उसमें से शङ्कर भगवान प्रवेश होते हैं)

कुश—हे कैलाश पति! शंकर भगवान के चरणों पर सेवक सिर नवाता है दण्डवत स्वीकार हो। हे मङ्गलकारी महान ठाकुर! मैं सीताराम का जेठा कुमार हूँ।

शङ्कर—हे वत्स! मनोवांछाफलसिद्धिरस्तु।

ब्रह्मा—(सिहरता हुआ झुक कर शिर नवाता है। शिर लटका कर) हे ध्येय! इस राजा नल को मैंने वर दिया था कि ब्रह्मास्त्र से भी मौत का डर न होगा पर कुश कुमार ने इसे उसी ब्रह्मास्त्र से कत्ल

करने का पन किया है। यह कुमार जरा ठहरने को कहने पर भी मेरा कहना नहीं मानता। इसने हेतु आपका ख्याल किया कि आप श्रीरामचन्द्रजी को खबर देकर इस जवाल में से मुझे उबारेंगे।

शङ्कर—हे वृकोदर! तुमसे क्या करने को कहते हो? साफ-साफ कहो।

ब्रह्मा—(डर से कांपता हुआ) आप जरा रामजी के पास जाकर कोई तदबीर सोचकर मुझे इस सङ्कट से उबारिये।

शङ्कर—अच्छी बात है। वहाँ जाकर देखूँगा। जहाँ तक मुझसे बन पड़ेगा करूँगा (शङ्कर भगवान जाते हैं)

[पट परिवर्तन]

पाँचवाँ दृश्य

– युद्धरङ्ग में सुरुचि का खेमा –

(सुरुचि अकेली बैठी अपने मनमें कह रही है)

सुरुचि—अरे! यह क्यों मेरे दिल में वीरा पी हुई वीराङ्गना की भाँति उन्माद उठ रहा है। पूर्णिमा के त्योहार के दिन बढ़ती दरिया की नाई अचाका मुझमें आज वीरता जृम्भा के साथ उमड़ रही है। हैं! यह देखो! कोई राजा मालूम पड़ता है। अरे! वह तो इधर ही आ रहा है! वह कौन है? (ध्यान लगाकर देखती है और भगवान का स्मरण करती है)

द्विविद—(प्रवेश करके अपने में) अहा! यह गाभी जैसी राज-किशोरी और यहाँ? इस खतरनाक जङ्ग-रङ्ग में क्यों आई! चलकर पूछूँ तो सही (प्रकाश) हे प्यारी चन्द्रमुखी! तुम कौन हो? देव कन्या से भी अधिक सुडौल जान पड़ती हो! तुमने मेरा दिल चुटकी

में रीझ लिया। जब से मैंने तुम्हें देखा दूसरी सुन्दरियाँ सब बन्दरियाँ जैसी मालूम पड़ती हैं। तुम्हारी एक नजर ने मेरे मन को खींच लिया। झट-पट बता! तुम सच-मुच मानुषी हो या महामाया मूढ़ा ?

सुरुचि—(मनमें ध्यान करके समझ जाती है कि यह द्विविद नामक बन्दर है और कामरूपी होने के लागि ऐसा राजा का भेष बदले इधर आया है। खैर! इन बन्दरों के सामने इसे अच्छी तालीम देनी होगी) हे द्विविद बन्दर मैं अकेली होने के कारण तुमसे बोल नहीं सकती। तुम मेरा पाहुन, चाहो तो, बन सकते हो। मैं तो कायदे में निरत पतिव्रता और वीर पत्नी हूँ, पर किशोरी नहीं। मेरी टहलनी विशेष कारण से कहीं गई है। अकेले में तुमसे बात-चीत करना मुनासिब नहीं।

द्विविद—(आशिक होकर) हे शबाबी ? अब नहीं ठहर सकता। ऐर-गैर बातों से मतलब कोई नहीं (मुड़हर हटाने को आगे बढ़ता है)

सुरुचि—(पीछे हटकर) अरे लम्पट! यह हाल मेरे खाविन्द सुनेंगे तो तुझे एक ही तीर से मार डालेंगे। खबदार आगे बढ़ा तो ?

द्विविद—अरे, मुझे मारनेवाले अभी पैदा नहीं हुए (यों कहता हुआ उपर्णा पकड़ लिया पर सुरुचि उसे छुड़ाकर एक झटका देती है जिससे वह मदान्ध द्विविद कटे हुए शालवृक्ष की तरह जमीन पर चारों खाने चित गिर पड़ा। फ़िर गुस्सा और लज्जा के मारे द्विविद उठकर फ़िर सुरुचि को पकड़ना चाहा, इतने में सुरुचि ने म्यान से अपनी भारी तलवार खैंचकर एक ही वार में द्विविद के दो टूककर डाला। यह देख वन्दरों के झुण्ड के झुण्ड आकर सुरुचि पर टूट पड़े)

सुरुचि—हे बानरों! तुम लोग बेजा तौर से मेरे ऊपर धावा करते हो। तेरे नायक की भाँति हमला करके क्यों अपनी जान गँवाते हो ? मेरी जैसी वीर पत्नी अपनी सतीत्व की रक्षा और आबरू के लिए अपनी जान जूझ में मूँजी के समान गँवा सकती है। मैं तुम

लोगों से डरनेवाली नहीं। जैसे कि नहानेवाला बारिश से, तैराकी पानी की गहराई से और लड़ाका जङ्ग से कभी नहीं डरती। देखो हथनी, भैंस, गाय और स्त्री ये चारों, घर में अपने कायदे के मुताबिक चलें तो कोई आफत नहीं आती है लेकिन स्त्री को छेड़-छाड़ करने से वह आफत मचाये बिना नहीं मानती। और जान पर खेल जाती है। यदि कभी गुस्से में भर जाय तो सोचे बिना अपने पति या पुत्र को भी तृण के बराबर मारकर आप भी मर सकती है। तब भी उसका गुस्सा बाकी रह जाता है। उसमें पतिव्रता! चाहे तो वह सारे जहान को डांवाडोल कर सकती है। तुम्हें साहस हो तो एक बार देख लो। हे बदकार! लड़ो और मरो। (यह कहकर जिरही पहन रानी सुरुचि ताँडव-नृत्य करती हुई हाथ में ढाल-तलवार ले काली की भाँति वन्दरों के झुण्ड के झुण्ड को मोचे की नाईं कतल करने लगी।)

[जाँबवान पहुँचकर यह हाल देख चकराता है]

जांबवान—रे वन्दरों! क्या हो रहा है! ठहरो ठहरो! क्या बात है?

[जांबवान अचरज से रानी सुरुचि को देख खड़ा हो जाता है और सब बन्दर हाँपते हुए उसके पीछे दुम दबाकर खड़े हो जाते हैं]

सुरुचि—क्यों भाई! तुम भी आशिक बन गये?

जांबवान—नहीं मा जी! आप क्या कह रही हैं? आप कौन हैं? क्यों अकारण इतने बहादुरों की जबरन कत्ल करके खून की प्यासी बन रही हैं? हजारों वन्दरों की जान आपने मुफ्त में ले लिया। सच बताइये? आप काली या चर्चा देवी तो नहीं हैं? आप ढकारी नहीं हैं तो इतने बहादुरों को कैसे मारा?

सुरुचि—(अपने मुँह पर का खून पोंछकर) तुम मेरे देव ब्रह्मा जी के कृती पुत्र जांबवान हो न? मुझे यों ही ख्याल पड़ता है। तुझे आदाब है। मैं काली या और कोई देवी नहीं हूँ।

जांबवान—(अचरज से) हे माँ ! आपने मुझे कैसे जाना ? इस झगड़े का मतलब क्या है ? मेहरवानी करके वताइये ।

सुरुचि—पूज्य ! मैं साध्वी और नियन्ती होने के कारण आपको जान सकी । इन वन्दरों की बुरी चाल पर इतना करना पड़ा ।

जांववान—माता जी ! इनके करतूत पर मुझे अफ़सोस है । अब आप वेखटके रहें (सुरुचि की रखवाली के लिये विश्वस्त गवय, गवाक्ष और भालुओं को छोड़ दूसरी तरफ से भालू नायकों की पुकार सुन बाकी वन्दरों को वहाँ से डाँट-डपट कर अपने साथ लेकर चला गया)

सुरुचि—(दालान में बख्तर खोलकर पछताती हुई बैठी है और अपने में) हे लम्पट मर्दों ? तुम लोग पराई स्त्री पर नजर पड़ते ही बुरी ख्यालात अपने मन में क्यों उगने देते हो ? उन्हें अपनी माँ, वहन, या वेटी क्यों नहीं समझते ? क्या वह जा है ? (इस तरह निर्विशेष सोचती हुई वीती वातों पर पछताती है और इष्टदेव ब्रह्मा का ध्यान करने लगी) (प्रकाश) हे वृकोदर ! जहान में इस तरह के बुरे छली जिनाकार पैदा न होवें । अबलाओं पर मर्द इस तरह कुदृष्टि डालकर न सताने पावें । लोगों की प्रवृत्ति धर्म में बढ़े, ऐसा उपाय कीजिये । हे भगवान ! आपको कोटिशः प्रणाम (यवनिका पतन)

[पट परिवर्तन]

अङ्क-चौथा

पहला-दृश्य

स्थान

[अयोध्या नगरी में विश्राम चौपाल पर श्रीराम अपने भाई भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न और सुमन्त्रि आदि दर्बार में बैठते हैं]

श्रीराम—हे भाई अनंत ! मारकाट की खबर कुछ तफ़सील वार मालूम नहीं हुई।

लक्ष्मण—हाँ भय्या !

भरत—सुना है कि बड़े-बड़े नामी योद्धा द्वन्द्व युद्ध के वास्ते शहर से सरदारों को चुन-चुन बटोर कर ले गये हैं।

सुमन्त्रि—हे जहाँपनाह ! मैं तो वहीं से चला आ रहा हूं वहाँ का सारा जिक्र तफ़सील वार आपको सुनाता हूं कान देकर सुनिये।

श्रीराम—(बड़ी उत्सुकता से) कैफ़ियत कह डालिये न ?

सुमन्त्रि—पहले हमारे वीरश्रेष्ठ नल और राजकुमार नद्युक योधन कर रहे थे उसमें नद्युक ने किसी तरह अपना बस चलते न देख ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया जिससे नल अड़चन में पड़······।

श्रीराम—(बड़ी व्यग्रता से) क्या कहा—क्या नल मारा गया ? हा ! वह कितना बहादुर और परोपकारी था ! मेरी जानकी का दान उसी ने दिया। हा ! मेरे लिये उसने अपने जान गँवा दी ? मैं कितना ओछा हूँ (अत्यन्त दुःख प्रकट करता है)

सुमन्त्रि—हे ख्वाजा ! आप इतने उतावले मत होइये। शुरू से आखिर तक पूरा बयान गौर कीजिये। आप क्यों इतना पस्त होते हैं ?

हमारे चिरंजीवी युवराज लव ने ब्रह्मास्त्र के इस्तेमाल से उसकी हिफ़ाजत की।

श्रीराम—(खुश होकर) अब मेरे जी में जी आया।

सुमन्त्र—इतने ही में दल-बल सहित हमारी सेना भागने लगी।

शत्रुघ्न—हैं? क्या कहा? लव के रहते ही! हमारे फ़ौज के पैर उखड़ गये? बड़ी अफ़सोस की बात है! हमारे बाकी डाँवरे क्या कर रहे थे? बन्दर और भालू क्या मुँह ताकते थे?

सुमन्त्र—वे तो अपने फ़ौज का समर्थन करते ही आते रहे और दुश्मन की फ़ौज को नाकों चने चबाते रहे। वे राजकुमार स्यन्दन पर से कभी तीरों से और कभी ढाल तलवार लेकर लोहा लेने लगते थे। बचे-खुचे राजाओं को जत्रुदेश पर मार मारकर यान से नीचे गिरा के रण भूमि को पाटने लगे। बन्दर और रीछ छाँट छाँटकर मातङ्ग स्थित भूपतियों के जूडे पकड़ पकड़ कर दरिया में फेंक देते थे। कुछ तो उनकी दाढ़ी उखाड़ उखाड़कर दल-मल करने लगे। उनके साथ चन्द भालू गहरे गारें खोदकर उसमें कुछ को लथेड़ कर दफ़न करने लगे। यह देख दुश्मन की फ़ौज डाँवाडोल होने लगी उनका छक्का छूटने लगा। कुछ भालू और लंगूर मुर्दों को गले में झुलाकर ढोल बजाने लगे। कुछ नौजवान हिम्मत बाँधकर हमारे दल को सताने लगे। हमारी फ़ौज ने दुश्मन के गिरोह को घेर-घारकर मुक्का जमाने लगे जिससे कलेजा फटकर बेदम हो जाते थे। कुछ बन्दर और रीछों की कड़क से हड़बड़ाकर तलहटी की ओर ढुलक जाते थे। कुछ राणा लोग बन्दरों के सिलाघात से खून से तरबतर होकर गिरने और दस्त करने लगे। चन्द लोगों के तो उसी तरह दाँत खट्टे होने लगे। आह! कितना लोमहर्षण दृश्य था! आसमान की आड़ी फेंके गये राजपूतों के फ़र फ़रनाद से मुदिर तक आतिशबाजी के अनार की नाईं पहुँचकर हा हाकार मचाते हुए उलटे सर सागर और सरयू में

टपकने का दृश्य देखने लायक था। रथ से रथ टक्कर मारकर घड़घड़ाहट की आवाज कर टुकड़े-टुकड़े हो इधर-उधर चिटकते और उसमें के सवार लोहू से सराबोर हो नीचे गिरते व चूर-चूर हो जाते थे। मेरी आँखों के सामने वह नजार नाचना दिखाई देता है। आँखें सहम जाती हैं। अब बुखार सा मालूम होता है! क्या सुनाऊँ महाराज! दूसरे ठौर नल महाराज खुद ही अपने दल का अगुवा बन हमारी फौज को डराने लगा। इससे हमारी फौज हटने लगी। इतने ही में एकाएक हनुमान आकर उन लोगों की मदद की और राजा नल को द्वन्द्व जुद्ध में एक ही मुट्ठी के आघात से बेहवास कर दिया। दूसरी ओर से हमारी फौज में हल्ला सुन हनुमान वहाँ जा पहुँचा और जाते समय ऐसे आनक की भाँति गरजा कि सबके कानों की झिल्लियाँ फट गईं। कन्दरायें गूँज उठीं। दोनों तरफ की फौज तिल-मिलाने लगी। पर जङ्ग बड़े कायदे से चल रहा था। कहीं-कहीं टूटे हुये ढाल और बख्तर गिरे पड़े थे। कुछ लोग करारते हुए लुढ़कते थे। प्रभो! उनमें से कुछ बदशकल, नकटे, लूले, बहरे और अन्धे बन मतिमन्द हो रहे थे। कुछ हाथी डरकर ढाँड लगाते वीरों को रौंदते हुए भागने लगे।

श्रीराम—(मुस्कुराकर) कमाल! क्या जुरअत है! हनुमान तो ठीक मौके पर सरपट पहुँच जाता है।

लक्ष्मण—भाई! उसको किसी की परवाह है? घननाद के वध के वक्त बदली में उसका दबदबा देखने लायक था। यह तो इसके लिये एक खेल है। उसके सामने क्या किसी की दाल गल सकती है? हाँ सुमन्त्रि! क्या हुआ?

सुमन्त्रि—सुनिये! थोड़ी देर बाद नल के उठने के बाद गैरत से सामने हनुमान को न पाकर अङ्गद ही से जङ्ग करने लगा। अंगद की प्रगल्भता कुछ भी अर्से तक न सहने की वजह से उसने अपना अमोघास्त्र छोड़ दिया जिससे अंगद महानिद्रा…।

श्रीराम—(घबड़ाहट से खड़े होकर।) हाँ क्या हुआ ? कैसी सदमें की बात भई ? अफ़सोस। वह नल मामूली राव नहीं है। इसी से मैं पहले ही लड़ाई नामञ्जूर किया था। परन्तु मेरा कहना मानता कौन है ?

सुमन्त्रि—हे मौला! आप रञ्ज न होवें। हनुमान के रहते आपको किसी चीज की तङ्गी न होगी।

लक्ष्मण—उसने क्या किया ? साफ़-साफ़ कहो।

सुमन्त्रि—महायात्रा के समय अंगद हे राम! मैंने अपराध किया कि आपका काम पूरा किये बगैर वेदम हो गया माफ़ करना, कहता-कहता दम छोड़ दिया। उसकी हालत देख मेरा दिल पिघल गया।

श्रीराम—(तलमलाते हुये) अब मुझसे सहा नहीं जाता (ढ़हकते हुये) भया लक्ष्मण! उठो अब देर न करो आमादा हो जाओ। अपनी तीर कमान हाथ में लो। अंगद के जी का सुराग़ लेकर उसको लौटा लाना होगा। मेरी जानी दोस्त सुग्रीव को उसे तलाश कर सुपुर्द करना होगा। आखिरी वक्त मेरे नाम का तलफ़फुज़ करनेवाला मेरे धाम को पहुँचकर मेरे बराबर ऐश-आराम पायगा। उसका पुकार बेकार नहीं हो सकता।

लक्ष्मण—(तसवीस से) जिस समय आपकी अनुमति हो मैं तैयार हूँ।

सुमन्त्रि—हे गुसाई ! आप क्यों खामख्वाह परेशान होते हैं ? आगे सुनिये आपकी खानखाहत की कोई जरूरत नहीं। आपका खिदमतदार हनुमान हमलोगों को किसी भांति नहीं छोड़ सकता और उसके रहते किसी चीज की कमी नहीं रह सकती।

भरत—तब पवनसुत ने क्या किया ? आखिरी परिपाक क्या है जल्दी सुनाओ।

सुमन्त्रि—अंगद के आर्तनाद को सुनकर गनगन हो कुशकुमार,

हनुमान, जांववान और सब कोई हुमक कर वहाँ पहुँच गये। अंगद को मरा हुआ पाकर सब कोई निहायत सदमें से विलाप करने लगे। थोड़ी देर बाद बूढ़ा जाम्बवान ने सबको ढ़ाढस दिलाकर अंगद के जिलाने की हिक्मत बताई और हनुमान को जीवंजीवक लाने की बात याद कराई।

लक्ष्मण—(कृतज्ञता पूर्ण गहरी सांस छोड़कर) हनुमान तो विषयवासना से रहित परोपकारी है। उस दिलेर अञ्जनी पुत्र ने पहले मेरी जान की बख्शस दी थी।

सुमन्त्रि—उसके पहले ही से सुषेण के आदेशानुसार संजीवनी-बूटी ला रखा था उसी से इलाज करके जिलाने लगा।

श्रीराम—खैर जान तो बची! वाह रे! हनुमान! तू कितना खैर-ख्वाह है? अब मेरे जी में जी आया दिल में चैन हुआ। हनुमान का कर्जा हम कभी चुका नहीं सकते। इस वक्त हनुमान न होता तो क्षति ही क्षति मुतसौवर थी। बेचारा अंगद शरखाकर गिरते समय हमको याद किया था? यही बात हमारी दिल में टीस मार रही है। मरते वक्त मुझे याद करने वाले को हम कभी निराश नहीं करना चाहते।

लक्ष्मण—हाँ! मुझे जटायु से आपकी जो बातें हुई थी वह याद आती है कि—

❀ चौपाई ❀

कर सरोज सिर परशेउ। कृपा सिन्धु रघुबीर॥
निरखि राम छवि धाम मुख। बिगत भई सब पीर॥
तब कह गीध बचन धरि धीरा। सुनहु राम भञ्जन भव भीरा॥
नाथ दशानन यह गति कीन्ही। तेहि खल जनकसुता हरि लीन्ही॥
लेइ दच्छिनदिसि गयउ गोसाईं। बिलपति अति कुररी की नाईं॥
दरस लागि प्रभु राखेउ प्राना। चलन चहत अब कृपा निधाना॥
राम कहा तनु राखेउ ताता। मुख मुसुकाइ कही तेहि बाता॥

जाकर नाम मरत मुख आवा। अधमहु मुकुत होइ श्रुतिगावा ॥
सो मम लोचन गोचर आगे। राखउँ देह नाथ केहि लागे ॥
जल भरि नयन कहहिं रघुराई। तात करम निजते गति पाई ॥
परहित वस जिन्हके मन माहीं। तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
तनु तजि तात जाहु मम धामा। देउँ काह तुम्ह पूरन कामा ॥
दो०—सीता हरन तात जनि, कहेउ पितासन जाइ।
जौं मैं राम तौ कुल सहित, कहिहि दसानन आइ ॥
चौ०-गीध देह तजिधरि हरिरूपा। भूषन वहु पट पीत अनूपा ॥
श्यामगात बिसाल भुज चारी। अस्तुति करत नयन भरि बारी ॥

श्रीराम—हाँ लखन ! यह तो ठीक है पर सुनो—
गाना-तप देखकर न जगत पै धिक्कार देखकर।
देता हूँ अपने भक्त का दिल प्यार देखकर ॥
जो मुझको चाहता है, मैं हूँ उसको चाहता।
विक जाता हूं मैं खुद ही, खरीदार देखकर ॥ तप ॥

भरत—हाँ ! सुमन्त्रि आगे तो बता क्या हुआ ?

सुमन्त्रि—सुनिये साई तब युवा अंगद को हनुमान और ऋच्छ पति तबीबखाने में ले गये। और तनहा कुश ने राजा नल का सामना किया। इतने ही में कुमार लव भी वहाँ आ पहुँचा। कुश ने लव कुमार को माता सीताजी के छेलदारी की तरफ भेज दिया और खुद राजा नल से भिड़ गया। पर आते वक्त लव को कोरा बच्चा समझ कर कुछ राजपूतों ने घेर लिया और टिल्ला करने लगे। उसमें युजान मारा गया तब मैं ही वहाँ से उसको कुशल पूर्वक ले आया। घेरे हुये राजपूतों को देख लव कुमार हँसकर सम्मोहनास्त्र से सब बहादुरों को मुर्दा सा सुला दिया। राह में हनुमान का शोर-गुल सुनाई दिया कि अंगद जी उठा। योद्धाओं तरद्दुद में न पड़ो।

श्रीराम—हाँ ठीक है। वह अपने भाई पर यूँ ही निगरानी रखने

वाला है। पर सबसे यही बड़ी बात है कि अंगद फिर से जीता पाया गया।

सुमन्त्र—तदुपरान्त मैं लव के साथ हो लिया और यहाँ आ गया। आगे क्या हुआ अभी खबर नहीं। मैं तो पिछले कई बार दशरथजी के संग सहस्राक्ष को सहारा देने गया था पर यह युद्ध देवासुर संग्राम से भी भयानक मालूम पड़ा।

(इतने में अचाका अहका प्रकट होना)

श्रीराम—(सबका उठकर प्रणाम करना और आवभगत के साथ) हे शुभचिन्तक ! लोक गुरु, क्षेत्रज्ञ ! आपके पवित्र दर्शन से हम संतुष्ट हुये। आप इस आसन पर विराजिये। कैसे कष्ट करना हुआ ?

शङ्कर—(आशीर्वाद देकर बैठता है) सब विराजो (राम से) हे जानकी-पति ! मेरे आनेका प्रयोजन सुनो। पितामह ने नल को वर दिया था कि ब्रह्मास्त्र से भी उसे मौत का भय न होगा। पुराने जमाने में इस अमोघास्त्र को मैंने विश्वामित्र को दिया था। उनसे तुम्हें और तुम्हारे जरिये तुम्हारे औरसों को हासिल हुआ। तुम्हारा डाँवरा कुश उसी अस्त्र को कई प्रतिज्ञाओं के साथ पूर्ण कर नल के ऊपर प्रयोग कर रहा है। उस शर के आदि देव श्री ब्रह्मा हाजिर होकर उसे रोकने की कोशिस कर रहे हैं। लेकिन उनसे कुछ बनाते न बना। कुमार से इल्तजा की कि "मुझे महरुम न करो" परन्तु कुमार ब्रह्मा का कहना किसी ढङ्ग से न माना। ब्रह्मा वहाँ से हट भी नहीं सकते। इसी पशो-पेश में पड़कर पङ्कजगर्भ ने मुझे याद करके तुम्हारे पास भेजा है कि किसी तरह अपने बेटे को समझा-बुझा दो।

श्रीराम—हे जगत् पिता त्रिपुरारि ! आपको तो सब ज्ञात है। आप से क्या छिपा है ? आपही बताइये मैं क्या कर सकता हूँ ? मैं तो शस्त्रास्त्र से उपरत हो चुका। छोटों को सब तरह पहले ही मना किया था कि उलझे में न पड़ें ! परन्तु कोई भी तसलीम नहीं करता। इसके

अतिरिक्त उमर आने पर लड़कों को मित्रवत् देखना चाहिये जैसे नीति है कि "प्राप्ते षोड़शे वर्षे पुत्रंमित्रवदाचरेत"। कुश तो बालिग है। युवराज तो हो ही गया। अब करीब करीब राणा भी बन गया। आप मुझे क्षमा करेंगे मैं तो सब तरह से अशक्त हूँ।

लक्ष्मण—हे भाललोचन! आप स्वयं त्रिकालज्ञाता हैं! मेरे ज्येष्ठ के वचन सर्वथा सत्य हैं। कुश तो युक्तवयस्क होकर राज-काज का बागडोर अपने हाथ से स्वयं सम्हाल रहा है। इस अन-बन में हम लोगों का कुछ भी हाथ नहीं। आप ही कोई तदबीर निकाल कर सुधारने का रास्ता बताइये।

शङ्कर—सही बात है। तो यहाँ समय काटना बेकार है। विलम्ब होने से बड़ी जहमत की सम्भावना है। वहीं जाके खबर दूँगा। उनसे जो पड़ेगा वे ही करेंगे (शिवजी उठते हैं)

[उनके साथ साथ सबका उठना और प्रणाम करना]

[शङ्कर का गायब होनां]

दूसरा-दृश्य

स्थान युद्ध रङ्ग

[कुश कमान पर तीर चढ़ाकर वार के खातिर खड़ा है। उसके सामने विधाता और उनके पीछे नल खड़े हैं]

कुश—हे पंकजासन! आप विलम्ब क्यों करा रहे हैं? यदि आपको अटकाना है तो उन्हीं को बचाइये। मैं तो ब्रह्मास्त्र का प्रयोग जरूर करूँगा। मैं जिस तीर को तरकस से निकालता हूँ उसे फिर रख देना मेरे खानदानी रफ्तार के खिलाफ है।

ब्रह्मा—हे कुमार! ठहरो, ठहरो जरा और ठहरो बाबा! मेरे ऊपर इतनी मेहरबानी तो करो। यह गब्बर नल मेरे वर के भरोसे

सीढ़ीपर सीढी चढ़ना चाहता था। पर मेरे वर के जिम्मेवारों पर ऊपर के सीढ़ी से मेरे साथ नीचे गिरने की संभावना ला रखा है जैसे प्रतिभू।

शङ्कर—(पहुँचकर) हे विधि! श्रीरामने तो कोरा जवाब दिया। अब क्या करोगे ?

ब्रह्मा—(सदमें से आँख मलता हुआ) हा देव! अब मैं क्या करूँ! दोनों तरफ से मैं आफत में पड़ा हूँ। मेरी ज़िन्दगी अब खतम होना चाहती है। आँखों के आगे अँधेरा छाया है (स्तब्ध होता है)

नारद—(गाने को गूँज करता हुआ नारद का प्रवेश) अहं और विधि को वन्दगी करता हूँ।

शङ्कर—हे नारद! तू तो ऐन मौके पर आया है। यहाँ की कैफ़ियत मालूम हुई ?

नारद—हाँ जी सुना है।

ब्रह्मा—हे पुत्र नारद! मेरा जेहन खराब हो गया अक्ल काम नहीं करती। इस फ़जीहत का कोई चारा सोचके मेरी हिफ़ाजत करो। मैं काल के पञ्जे में फँसा हूँ।

नारद—(अपने मन में) यह क्या! यह आफत दूसरों पर गिराना चाहा तो घूमघाम कर मेरे पिताजी के सर घिसा रही है। (परिभू से काना कानी करके तसल्ली देता हुआ अहिस्ता अहिस्ता कहता है) हे देव! इसका दलील वाल्मीकि मुनिने पहले ही से लिख रखा है। नल महाराज की सलोनो दारा भी यहाँ खेल डाली है। और अपने बेटे के एकबाल की आभा देखने श्रीमती सीताजी भी अड्डा जमाये बैठी हैं। यदि राज्ञी सुरुचि जाकर सीताजी की वन्दना करें तो अवश्य वह आशीस देंगी कि तू दीर्घ सुहागिनी हो। ऐसा हो तो काम बन जायगा। वह अपने परजन्दों को समझा सकती हैं। इससे बढ़कर दूसरा ज़रिया नहीं है।

शंकर—हे पंकजासन ! एक तरकीब है। हम लोग उसे अजमाकर देखेंगे। कामयाब होता है कि नहीं। तुम यहीं ठहरो ! (कुश से) हे कुशकुमार तुम्हारे इस आहव के कायदे से मैं बड़ा प्रसन्न हूँ। हम लोग सहम गये हैं अतएव अति व्यग्र हैं। मुझेचन्द अर्से तक मुहलत दो। तुम तीर न चलाना।

कुश—हे सर्वतोभद्र ? आपके कहने पर मैं थोड़ी देर और ठहर सकता हूँ ! आप विलम्ब करेंगे तो सब तबाह हो जायगा और पीछे पछताना पड़ेगा। मेरी मुराद है कि देखूँ ब्रह्मास्त्र से यह नल मरता है कि नहीं।

शंकर—(नारद से वरूथ में) हे देवऋषि। इस महीप की पटरानी इस वक्त कहाँ है ? तुमको ही इस काम में मेहनत करना होगा। क्या मशविरा देते हो ?

नारद—(कानाफूँसी करके) आपके आदेश के मुताबिक ही मैं चलूँगा ! आप निश्चिन्त रहें। यह उलझन निहायत अजनबी जान पड़ती है। नल की मल्का भी अपनी अजीज बेटे की बहादुरी देखने आई है !

शंकर—ब्रह्मा तो बिना गौर किये वर दे दिया करता है जिससे इस तौर की मुशीबतें आ खड़ी होती हैं। (दिलमें) भस्मासुर की तवारीख को मैं अभी नहीं भूला (प्रकट) खैर, तुम तत्परता से जल्दी हो आओ।

नारद—(शंकर से फुस फुसाकर) हड़बड़ाने से हरकत बिगड़ जायगी। मैं मामला सीताजी के दरपेश कर सब ठीक कर दूँगा (जाता है)।

[पट परिवर्तन]

तीसरा—दृश्य

[रङ्गभूमि के किनारे एक तरफ चौपाल पर सीताजी का डेरा उसमें सीताजी, माँडवी, ऊर्मिला और श्रुतकीर्ति अपनी सहेलियों के साथ अपने अपने गद्दी पर बैठी हैं।]

ऊर्मिला—जीजी ! यह अचरज की बात है कि डावरे तो संग्राम के दुलारे और उनके जनक तो विरागी हो रहे हैं। यह गौर पर्की है ?

सीता—क्यों भला ? बहन ? तुरीय में क्या यह ठीक नहीं ? उदासीन मन से वीतराग होकर विषई भूतों से मोहलत ले लिया है इसमें क्या बुरा है ?

माँडवी—क्यों ऊर्मिला ? इस अपार दुनिया में ब्रह्मा की रचना का यही उद्देश्य है कि नर नारी एक दूसरे का सहारा लेकर किसी भाँति इस दूभर खुदाई दरिया को पार कर लें। आपस के चाव का फल स्वरूप संतानोत्पत्ति है। यदि पुत्र जौहर सा नेकनामी हो तो खुशी और ऐश का कौन ठिकाना है। बहन तो कुशलव को पाकर तर गई है। वे दोनों अपने चाचे और बाप को जीतकर निरुपम बहादुर हो गये हैं। देखता हो न ?

सीता—(हाथ हिलाकर) तुम्हारे लल्ले भी क्या मामूली बहादुर है ? सब बच्चे एक से बढ़कर एक ताकतवर हैं। माँडवी के दोनों बेटे तक्ष और पुष्कर गन्धर्वों को जीतकर उस लोक के इकराम और ओहदे क्या नहीं पाये ? हे श्रुत ! तुम्हारे तीनों ने क्या मधुरापुरी और विदेशों को नहीं फतह किया है ? हे ऊर्मिला ! चुप क्यों हो ? क्या तुम्हारे लाड़ले कई जगह बरसों में जाकर कई बहुओं को नहीं लाये ? इन सबकी बहादुरी को कौन कह सकते हैं ?

माँडवी—(श्रुतकीर्ति का आड़ा घूसकर) क्यों बहन ? क्या कहती हो ? जीजी की बातें एकदम दुरुस्त हैं।

श्रुत—(तपाक से मुस्कुराकर) वे भी तो उनके ताऊ के प्रताप के फल हैं। वरना क्या हमारे परजन्दों को दिव्यास्त्र संपन्न होने की संभावना है ? नामुमकिन है।

सीता—पगली कहीं की ! मेरे दइत ने विला तअस्सुब सब सुतों को एक सा मुहब्बत किया है। अपने पास के सारे हथियारों को बराबर बाँट दिया है याने ब्रह्मास्त्र और अक्षय तूणीर भी दे दिया है।

ऊर्मिला—(शाद से) हाँ ! हाँ ! जिहन में आता है कि उनके आगे जङ्ग में कोई टिक नहीं सकते।

श्रुत—(सीता से) जेठानी ! क्या तेरे अपत्य असमर्थ हैं ? वे तो हनुमान और ब्रह्मपुत्र ऋच्छ पति को भी जीत चुके हैं।

ऊर्मिला—(दस्त देकर हँसती है) क्या किसी दारोखे भालू और बन्दर को जीत लिया तो बड़प्पन हो गई ? शिकारी हरदिन कई बन्दर व भालुओं को मार गिराता है तो बहादुर कहलाता है ? बच्चा या बहेलिया कई बन्दरों को खेल ही खेल में मार भागता है तो क्या वह भी बहादुर है ?

सीता—(जोर से थपकी देकर) ऊर्मिले ! क्या कहती है ? क्या तुम्हें खाना-पीना छोड़कर सोना ही ज्ञात है ? बन्दर तो वही है न जिसने तुमको सोहाग और सिंगार का चिटक-मटक सौंपा था ? तुम्हारा माँग हमेशा के लिये भर दिया। और जिसको न किसी से सहम है और न कजा।

ऊर्मिला—(ताज्जुब से झेंपकर) क्या कहा ! तुम्हारे देवर ने तो इसे साफ साफ नहीं कहा। शायद इसमें अपना अयश समझ कर न बताया होगा।

सीता—हे मेधाविनी ! सो नहीं। अपने दोनों साजन उसके प्रति शुक्र गुजारी प्रकट कर रहे थे। उसके बादनी अदा करने के बाद किसी

से कहने की बात है इससे न बनाया होगा। कर्ज की व्यथा गैर को भी न हो।

ऊर्मिला—हम सब तो बाहरी व्यक्ति हैं न जो हम लोगों से छिपाया था ? हम तो अकृतज्ञ तथा बेपीर हैं ?

सीता—नहीं नहीं ! इसलिये नहीं ! उनको यकीन है कि योषितों के मन में भेद की बात छिपती नहीं, और कोई बात नहीं है। रीछों के राजा जाम्बवान ने सुधा पिया है। मौत का खौफ़ तो है ही नहीं। उसको भी कोई अस्त्र सता नहीं सकता। हमारे बच्चों ने बड़ी कठिनाई से अपने काबू में कर लिया है। हनुमान भी उनको मेरे हम शकल जान उन पर बड़ा फिदा है। अगर वे गैर होते तो क्या वह कब्जे में आता ?

माँडवी—(कुछ शान से) ऐसी ही बात है ?

ऊर्मिला—तो क्या ? हम लोग समीर सुत के उधारी हैं ? ठीक बताओ ?

सीता—याता ! हम व तुम्हीं नहीं बल्कि सभी लोग उनके कर्जदार हैं। मुझे आर्य से मिलानेवाला कौन था ?

श्रुत—खैर। अभी छोड़ो इस कहानी को। मौजूदा बखेड़ा भरपूर खतरनाक हो चला है। नया हाल कुछ मिला नहीं। उधर देखो लवकुमार तनहा इधर शामियाने में क्यों आ रहा है ? (सब झाँकते हैं)

लव—(पैठ कर) हे माँ और मासी ! सबको मेरा आदाब है।

सीता—ऐ ! मेरे दुध मुँह बच्चा तू चिरंजीवी होकर यशस्वी हो। इधर आकर मेरे गोद में बैठ। बेटा ! तू इधर अकेला क्यों आया ? और सब कहाँ हैं ? जङ्ग कैसे चल रहा है ? क्या तू सहम कर या अलसकर इधर चला आया है ? अब सब बन्धु कहाँ हैं ? सब कुशल हैं न ?

लव—हे वालिदा ! मैं क्या बताऊँ ! राजा नल तो बड़ा बहादुर

है। सारे जत्थों के नाक में दम करके खदेड़ रहा है। सब श्रेणियों को हताश कर रहा है। सात टापुओं के छरहरे भूपति उनके पहलू में रहकर अपनी-अपनी टोली के साथ जिरह और काँजी पहने आये हैं। और उठान पर लड़ाई लड़ रहे हैं। आराति का दल तो टिड्डी दल मालूम पड़ता है। इसका वयान मैं ही नहीं हजार मुँह वाला अनन्त भी नहीं कर सकता। महावत मातङ्गों पर हौदे कस-कस कर युद्ध क्षेत्र में आंकुश मार दौड़ाने लगे जिससे भू डोलने लगा। स्यन्दनों की सरपट चाल से उनमें लगी हुई फरहरे फर-फर की आवाज करने लगे मानों वे बेरोक जाने के लिए गौन माँगते हों। चाकों की चमक इन्द्र धनुप-सा और उनकी घर-घराहट बिजली की कड़क मालूम होती थी। घोटकों के खुरों का टक-टक नाद गाने में ताल के समान लगता था। पँखवाली तीरों की चाल केंचुली छोड़ी हुई नागिन की भांति और उससे निकली हुई रैं-रैं का नाद बीणा के तार की तरह गूँजता था। युयों की हिनहिनाहट, खर और खच्चरों की रेंक, जनता का भगदड़, मार-काट की तहलका, प्रेतों का झगड़ा आदि खौफ़नाक मरघट का मजमा-सा मालूम होता है। चाकों की तिल्लियाँ इतनी तेज चमकती थीं जिसे देख जी चञ्चल और निस्तब्ध हो जाता है। यह विवृत दृश्य देखकर डर के मारे कुछ लोग जान छोड़ देते थे! विशेष कर हनुमान का भयंकर गर्जन सुनकर घवड़ाहट के मारे चकाचौंध हो कानों की झिल्लियाँ और कलेजा फट फटकर जान छोड़ते थे। कुछ लोग कराहते कराहते हाँ में हाँ मिलाते हुये और "हा राम तेरे ही वजह से यह सब हुई" कहकर उलहना देते हुये प्राण त्याग करते थे और वीर गति को सिधारते थे। जिससे सूतगण और घुड़चढ़ा रास छोड़ चक्कर खाकर नीचे गिरते या भाग जाते थे। बेचारे उस्त्र बल-बलाते अश्वों की खुरजी पटक कर उलटे गिरते और चारों टाँग हिलाने लगते थे। इस किस्म से कुछ अपाहिज हो गये, कुछ के कान कटे, आँख फूटे और कतिपय

कूबड़ बनकर भाग गये। भालू और बन्दर युद्ध रङ्ग में आमिष के टूके गेंद की तरह बादलों में लात मारकर उछालते थे। कुछ वीर मरने के पहले मारू राग पर ताकत लाकर चिल्लाने लगे कि मारो-मारो, पीटो-पीटो। क्या बताऊँ माँ! एक कनारे पवनसुत और दूसरे ओर भग्ये लोग और कहीं जाम्बवान, अंगद, सुग्रीव और हमलोग डटकर समर करते रहे। तिस पर भी उनको पछाड़ना मुहाल होता गया। असि और तीरों के टक्करों से तड़ित निकल आसमान में आरसी की नाईं चमकती थी। धनुष्टंकार का तो कहना ही क्या है? थोड़ी देर हुई माँ! अक्षम अंगद का भी विसाल हो गया।

सीता—(घबड़ाहट से लव को दूर हटाकर) क्या कहा? अंगद! (आँखों में आँसू भरे) हाय! तारातनय! तुम हमसे बिछुड़ गये? हम लोगों के लिये जान छोड़ दी! तेरी कुदरत और काबिलीयत सराहनीय है। तू कितना योद्धा है? तू अपने पिता के निर्वासक की पावनी और जाम्बवान की बात पर यकीन कर खुदामान हमारा साथ दिया। हा ईश्वर! क्या हो गया! बेटा तुम लोग नाकाबिल बन गये? इसी से ऐसा हुआ। तुमने इसकी बहादुरी रामायण में बाँचा था। और यों ही इस वीर के देहपात होने पर चुप्पी साधे बैठे हो? यह कैसे और किससे मारा गया? पूरा-पूरा हाल सुनाओ। तुम्हारे पिता जी ने इसी लिए जङ्ग करने से मना किया था। अंगद मेरा दूसरा पुत्र और हनुमान पहला समझो।

लव—ठहरो माँ! पूरा हाल तरतीबवार सुनिये। पहले हमारी टोली को नल ने खदेड़ दिया। हनुमान उनको उकसा कर ज्वार की भांति लौटा लाये। और आप खुद उससे द्वन्द्व युद्ध करने लगे। हनुमान के साथ हमारे दल ने उनके दाँत खट्टे कर दिये। देखो माँ! हनुमान ने आते ही दुश्मन को चक्रवात की तरह दुरदुराकर नाक की सीध में मैदान खाली कर दिया।

सीता—हनुमान तो सर्वदा वक्त पर काम आता है पर अफ़सोस! अंगद की हिफ़ाजत न कर सका।

लव—माँ आप क्यों अधीर हो रही हैं सुनिये। उसके लात का एक बाल भी बाँका नहीं हुआ। सुनिये, तब हनुमान ने एक ही मुचिटी में नल को रथ से नीचे गर्द में लिटा दिया। फ़िर दूसरी जगह जाकर फ़ौज की हिफ़ाजत की।

श्रुत—वह बड़ा प्रतापी है और बहादुर की तरह काम किया।

सीता—(उछाह से) वह दिलेर कभी भी उसूल के खिलाफ़ नहीं करता। हाँ! बेटा आगे क्या हुआ?

लव—तदुपरान्त माँ, राजाने उठकर झाड़पोंछ के टीम-टाम से देखा! हनुमान को न पाया। क्रोध से लाल हो गया। सामने अंगद को देखा और मारुति के घूँसे को याद करके और अँगद को उससे भी मोटा-ताजा और लाल मुख देखकर बहुत घबरागया और रथ पर आरूढ़ हो तुरन्त ब्रह्मास्त्र दागकर अङ्गद को गिरा दिया।

उर्मिला—हाय! हाय! सर्वनाश करडाला। क्या तुम लोग वहाँ न थे? वह सुर्खरू लल्ला हमारे खातिर अपनी जान गँवादी?

लव—हम लोग रहते तो कभी ऐसा न होने पाता। इतने में भय्या रुष्ट होकर नल से काल के समान भिड़ गया। हमको रनिवास की हिफ़ाजत करने और खबर देने के लिये रवाना किया और अँगद को जीवंजीवक बूटी से इलाज के वास्ते दवाखाने में सुषेण के पास हनुमान, जाम्बवान को साथ देकर भेज दिया। आखिरकार अंगद के भी जिलाने की खबर मिल गई है।

सीता—(खुश होकर) अंगद जिया है! तो ठीक है अब जिन्दगी तो टिक गई। कुमार उस ओरी देखो! कोई सुन्दरी बड़ी तेजी के साथ इधर आ रही है।

लव—हैं! (अपना शरासन सजाकर उनको देखता है) कोई

धनिया मालूम होती है जो अपनी चेटी के साथ आ रही है। और वह कुछ घबड़ाई सी मालूम होती है।

सुरुचि—(सुरुचि दरबान को समझ कर संगिनी के साथ घबड़ाहट से) हे देवी ! जानकी ! हे लोकमाता ! तुझे आदाब है।

सीता—चिरमङ्गली हो। (इज्जत के साथ) बहन इधर बैठो। (आसन दिखलाती है और इंगुरौटी से सिंदूर निकालकर लगाती है)

सुरुचि—(अपने में) नारद के कहे मुताबिक ही मैं ने अमल किया है और इसने भी उसी तौर से आशीस दिया है। अब मेरे शौहर की फिक्र न रहेगी। नारद भी तो अनोखा जीव है। मैं यदि रण रङ्ग में न आई होती तो अनर्थ हो जाता। (प्रत्यक्ष) हे देवी ! आप को हजारों लाखों विरियाँ आदाब करके शुक्रिया अदा करती हूँ। हे माता ! तुम जगद्धात्री ! नारी पाकदामिनियों में शिरोमणि हो ! जानकी देवी तो आप ही हैं ? अगर वह सती साध्वी आप ही हैं तो आपके कलमा क्या कभी मिथ्या हो सकती हैं ? यह तो बड़ी अचरज की बात है।

सीता—(डाँवाडोल होकर) क्या यह जुमला असत्य है ? क्या तू सधवा नहीं ? अगर ऐसी जहमत अभी तक न आई हो या आने वाली हो तो बता ? मैं अवश्य दूर कर दूँगी। मेरे दइत तीनों लोक के स्वामी हैं। मेरे लाड़ले उनसे भी बढ़कर हैं। उनके रहते साक्षात शंकर भी तेरे पति का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। तू क्यों घबड़ाई सी मालूम होती है ? डरोमत। इधर बैठकर साराजिक्र सुनाओ !

सुरुचि—(प्रफुल्लित हो मन में कहती है—"अब जी में जी आया") तेरी बातें सब सच हैं देवी ! तुम ने तो मुझे दिलदार व बेखौफ होकर अभय दान दिया। अब मुझे बिललाने का कोई दरकार नहीं। ओमाई ! तुम कितनी भी तितिक्षा दो लेकिन मुझे किसी तरीके से चैन नहीं मिलता !

ऊर्मिला—बेशक भ्रमरहित हो। अपना समूचा मजमून इन्हीं से

बयान करो। तुम क्यों शंका करती हो? पधारो कोई आतङ्क की वात नहीं।

सुरुचि—(स्वगत) वताने पर यह मेरी एहसान करेगी? कि नहीं? अपने अपत्य को समझा सकती है न? वह क्या इनको वातों को मान जायगा? हाय! मेरी तकदीर में क्या है ज्ञात नहीं। (कहकर अफ़सोस करती है और दीनभाव से अभ्र की ओर देखकर नमती है)

सीता—हे स्त्री! तू क्यों विशूर हो रही है? (पुचकारती हुई लवको दिखाकर) यही मेरा दुलारा बेटा है। इसने अपने पिताको भी जीत लिया था। उसको मैं तेरा सहारा करने को सहेज दूँगी इसको कोई भी परास्त नहीं कर सकता। ओ लल्ला! तू जा और इस शरणागत अवला की हाफ़िज़ होकर आ।

लव—(उठकर) जो माता जी की आज्ञा। अभी जाता हूँ।

सुरुचि—हे माँ! रञ्जीदा होने के सवव से मैं यों दुश्शंका कर रही थी। अब मैं अपने बदकिस्मती का दास्तान बयान करती हूँ सुनिये। मैं हस्तिनापुर की मल्का हूँ, मेरा नाम सुरुचि है। आपको हर्षदाइनी जानकर पनाह में आई हूँ।

सीता—(ऐरा-गैरा सा होकर) हैं!! तैनें क्या कर डाला! नल महाराज की पट्ट महिषी हो? इस सादे लिवास में तनहा यहाँ आई? क्या यह आपके लायक है? क्या किसी बन्दोही को भेजने से यह काम न होता? हमने तो और ही सोचा था कि तुम कोई मामूली लुगाई होगी। आगा-पीछा सोचे-बिला तुमने क्या किया? (लव से) हे बेटा लव! अब ढिलाई न करो जाकर इनका सदमा दूर करो।

लव—(नफ़रते नज़र से सुरुचि के पग से मुँह तक ताक कर) अम्मा! अब यह राज मुझे भासित हो गया कि ये यहाँ क्यों आई हैं। माँ सुनो! अङ्गद के मरने के बाद इनके शौहर व भय्या कुश के

दरमियान युद्ध हो रहा था। तभी मैं चला आया। नल को दिव्यास्त्र से भी क़जा न होने के बाइस भैय्या किसी अमोघास्त्र का इस्तेमाल कर रहा होगा। तब वे सहम कर वालिद के पनाह में गये होंगे और वहां वालिद को विरत देख कामयाबी न पाकर इनको इधर भेजे होंगे। इससे ज्ञात होता है कि हमारे पौ बारह हैं। अब क्या बाजी तो मार लिया? (उछल पड़ता है)

सुरुचि—("अहा! इस सुरहे ने सब बात जान लिया") (प्रकाश) हे वीर पुत्र! तुम्हारे पिताजी ने मुझे नहीं भेजा है। मैं खुद यहां आई हूं। तुम्हारा भाई मेरे स्वामी पर ब्रह्मास्त्र का इस्तेमाल कर रहा था। जब कि रणरङ्ग में खुद ब्रह्मा उसे ब्रह्मास्त्र के इस्तेमाल करने से बाज रखने के लिये हरचन्द कोशिस कर रहे हैं। पर वह किसी का कहना नहीं मानता। इस वजह से मैं माताजी के शरण में अभय लेने आई हूँ। (तुरन्त रोती-बिलखती सीताजी के चरण पकड़ माथा टेकती है) हे माँ! आप पुत्र को समझाकर मेरा त्राण कीजिये। हे देवी! मुझे सुहाग की भीख दीजिये।

सीता—(सुरुचि को उठाकर) ऐसा न करो बहिन! बैठ जाओ।

ऊर्मिला—बड़ी बहिन! यह तो बड़ी विकट समस्या है! अब क्या होगा?

सुरुचि—(हाथ जोड़ खड़ी रहती है) हिफ़ाजत करोगी न? माँ बच्ची की कौन रक्षा करेंगी? मैं आँचल पसारे सुहाग की भीख माँगती हूँ। (गला भर जाता है)

श्रुत—इसके हिफ़ाजत का उत्तरदाइत्व हम लोगों पर है। इसके बेताब दिल को सम्हालना हमारा फ़र्ज है। यह हम पर भरोसा करके आई है। कुमार को समझाकर यह एहसान करना होगा। बच्चे भी हम लोगों की फ़रमाइस नामञ्जूर न करेंगे। परन्तु देर करने से सब फ़जूल होगा।

सीता—(सोचकर) हाँ यही ठीक है (लव से) बेटा ! रणरङ्ग में जाके तेरे भाई जब तक राजा को निशाना न बनावे उससे पहले उसे यहाँ बुला ला ।

लव—जो आज्ञा माँ । (जाता है)

सीता—हे तन्वी ! तू दुखित न हो । तेरा क्लेश दूर करने की कोशिश करूँगी । हनुमान को एलची बनाकर पैगाम भेजा था । पर तेरे बदमिजाज खाविन्द के हौसले ने मानने से इनकार कर दिया । अङ्गद की कजा ने और भी परेशान किया । बकौल मेरे, शायद बच्चा मान जाय । बिल-फेल वह किसी तरह न माना तो मेरे पिता जी याने यमज के मुर्शिद वाल्मीकि जी कहेंगे तो खामख्वाह उन्हें मंजूर करना पड़ेगा । हालाँ कि इतना करने की जरूरत न होगी । तेरे दइत को अब कोई खतरा नहीं है । मैंने तुमको अपनाया है ।

वाल्मीकि—(अचानक प्रकट होता है और सब कोई उठकर वन्दना करती हैं) मनोवांच्छा फल सिद्धिरस्तु ! बेटी ! मुझे सब ज्ञात है । मैं पहले सब कुछ लिख रक्खा था । तेरी मुराद पूरी होगी । तेरे पुत्र कहना जरूर मानेंगे । फिक्र करने की जरूरत नहीं । तुम लोग बैठो मैं जाता हूँ (वाल्मीकि का गायब होना)

सुरुचि—देवी मातेश्वरी ! त्रिलोक माता ! एक सदमा और है माँ । मैं तो बदकिस्मत काकवन्ध्य हूं उस पर यह पुत्र शोक (कहती-कहती गला भर जाता है और सिसक-सिसक कर रोने लगती है । और चेतना खोकर गिर पड़ती है । थोड़ी देर के बाद अपने को सम्हाल कर आँसू पोंछती हुई) माँ वह भी बरदास्त नहीं कर सकती । मेरा दिल टूट कर टुकड़े-टुकड़े हो रहा हैं ? देवी ! बहू जब पूछेगी तो उसे क्या जवाब दूँ ? छोकड़ी का गौना तक न हुआ जननी ! (रोती है)

सीता—(गम्भीर चितवन से) क्या तुम्हारा जिगर युद्ध में काम आ गया ? हा ! कैसी दुःख की बात है ! यह तो असहनीय व्यथा

ई। हे नूरे? एक पल भर भी मेरे पुत्र नज़र से ओझल हो जावें तो मेरे तन मन में अशांति फैल जाती है। तू कैसी आफत में गर्क हो गई है? यह सदमा कैसे सह रही है? तेरे बेटे को किस निठुर ने मारा? जल्दी बता? मुझे गनगन हो रही है।

सुरुचि—(रोती हुई लव के गये हुये सामने को आंखों के इशारे बताती हुई) जिसे मेरा रक्षक बनाया वही तो मेरे पुत्र का भक्षक (फिर रोती है)

सीता—(कुछ खिसियाकर सिर झुकाके) ऐं! यह बात है! वह तो मुझसे अभी तक बताया भी नहीं। क्या मेरे दोनों बेटों ने ही ये सब हरकतें की हैं? तुम्हारे ऐसे कुसुम कोमल अबला के लिये एक के द्वारा बेरहमी से पुत्र नाश और यदि पुत्रशोध किया जाय पर भी उधर दूसरे के द्वारा प्राणप्रिय हृदयनाथ को हरने की कोशिस है? यह दारुण दुःख कैसा असह्य है! हे सखी! कैसी आफ़त में तू घेरी गई है! सुनकर मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है। (यों कहती हुई मातम-फ़ुरसी करने लगी।)

सुरुचि—(दीन भाव से) योजनगन्धा! स्निग्ध मनस्वी! करुणा-मई! तुम्हारे पनाह में आने से सुहाग की रक्षा हो सकती है, इसी भरोसे पर कलेजे को चट्टान करके शोक सागर पारकर यहाँ आई हूं। मुझे भी अपनी संगिनी समझ मेरे ऊपर रहम करो।

सीता—कोमल-हृदये! मेरे दइत ने कई बार कई तरकीबों से समझाया-बुझाया कि लड़ाई से नुकसान के अलावा फ़ायदा खाक है? तेरे खाविन्द ने ही दीवानेपन से खुद अपने ऊपर इस जहमत को बुलाया।

सुरुचि—अनिष्ट आने पर हक़ीक़त में हित के कलमा काकोल-सा लगते हैं जैसे कि मरनेवाले को दवा।

ऊर्मिला—हे मल्का! दहलने की कोई जरूरत नहीं जिस सीता-

माई की मेहरबानी से तुझे सोहाग मिला है उसी के मार्फत तुमको डाँवरा भी मिल सकता है। घबराने की कत्तई जरूरत नहीं।

सुरुचि—(प्रमोद से चेहरा खिलने लगता है) माँ क्या मैं उतनी तकदीरमन्द हूँ ? यदि मेरा फरजन्द जिन्दा हो जाय तो मैं उसे सीता-देवि के बेटों का खिदमतगार बना दूँगी।

सीता—(तरस खाकर) ऐसा कुछ दरकार नहीं इतने दीन न बनो मनुहारी ! तू बेफ़िक्र रह ! वह खुद आजाद रह सकता है।

सुरुचि—(अपने में) खैर ! अब तो मेरे दोनों फ़िक्र जाते रहे। (प्रकाश) हे जनकराजनन्दिनी ! मेरे बेटे के जीने का चारा हो तो बताओ ?

सीता—(श्रुतकीर्ति को थपकी देती हुई) इसके बेटे को चेत कैसे आयगा ?

श्रुत—(हैरत से) जेठानी ? तू क्या भूल गई ? अंगद को किस तरह जिन्दा किया गया उसी भांति इनका बेटा भी जिलाया जायगा। कैसी अनजाने की-सी खिल्ली उड़ाती हो ?

सीता—हाँ-हाँ ! वही नीक होगा। अनिलसुत ही इसको जिन्दा करेगा वही इस काम के लायक है। (हनुमान का नाम लेते ही उसका फ़र-फ़र आवाज़ करते हुये हाजिर होना और घुटनों के बल टेक कर शिर नवाना)

हनुमान—मातेश्वरी ! मुझे क्यों याद किया, क्या हुक्म है ? खादिम हाजिर है।

सुरुचि—(काँपती हुई) क्या यही हनुमान है ? जहननसीन करते ही नजर पड़ा ! इन्होंने ही लक्ष्मण को लोध्र से जिलाया था ? बत्तीसी दिखाकर मुँजरा करती है)

हनुमान—'चिर अहिवात पाओ।' (आसीश देता है)

सुरुचि—(मनमें उछाह से) अब मजबूती और भई आशीस दो मिले अब डर नहीं। अब सात-पाँच करने की क्या गरज है ?

सीता—अहो ! बात-सुन ? अंगद जी उठा ?

हनुमान—ओ माँ ? आपके नजरेइनायत से अंगद ही क्यों हमारे झुरमुट के सारे लड़ाके द्विविद आदि वीरों के लिये गई—वहार बन मैंने सबको निभा दिया।

ऊर्मिला—हे मारुती ! तुमने बहुतायत वाजिब आमाला पेश किये। तुम्हारे जरिये कई सीमन्तिनी अपने-अपने खोये हुये दयितों को पाकर सुखी होंगी।

हनुमान—ओ माँ ! यह सब आपही की मेहरबानी की तासीर है। मैं तो आप लोगों का आर्थिक पुत्र हूं।

सीता—पावनी ! ये नल राजा की जाया हैं। इनका बेटा लव कुमार से मारा गया है।

हनुमान—(मनमें, "खुदाहाफिज") क्या यह राजा नल की मल्का है ? यहाँ क्यों आई है ? (फ़िर ध्यान करके मनमें) अब सब साफ़ हो गया। इसे अपने दयित को यमके चुंगल से छुड़ाने के हेतु यह तदबीर नारद ने बताई है। इसी वजह से उधर घबड़ाता हुआ भाग रहा था। (प्रकाश) हाँ माँ ? क्या इनके बेटे को भी जीवित कर दूँ ? एक ही पल भर में उनके दोनों को लाकर हाजिर कर दूं ?

सुरुचि—(मन में) अहा ! क्या ही अक्लमन्द और इशारे पर काम करनेवाला है ! अब तो खाविन्द और फरजन्द भी जिन्दा हो रहे हैं (लेकिन द्विविद का अत्याचार याद कर गुस्से में भरे) यह उस लम्पट द्विविद को क्यों जिन्दा किया ? (प्रकाश) हे हनुमान ! तुम्हारे कारण वह लफ़ंगा द्विविद जिन्दा हो गया। यह तुमने अच्छा नहीं किया। खैर आइन्दा वह राम के हाथ ही मरेगा। देखो ! तुम्हारा मुँह जो सवेरे देखेगा उसे उस दिन भूखा मरना होगा (कुछ सम्हल कर)

नहीं नहीं ! मैं यह क्या कर रही हूँ। हे सदय ! माफ़ करना तुम श्रीराम के भक्त होने के वजह से सवेरे उठकर तुम्हें देखने या याद करने-वालों को इस तरह की कोई भी कमी न रहेगी और विना मेहनत मोक्ष भी मिल जायगा। हे खैरख्वाह ! मुझे पति और पुत्र दान दो।

हनुमान—(ध्यान करके मन में सोचता है) "अहा द्विविद द्वापर में लाँगलि के हाथ रैवत पर्वत पर मरने का सराप इनके मुँह से निकल गया।" अम्मो मैं विल-कुल नाराज नहीं हूँ। कोई भी काम चन्द्रचूड़ के हुक्म के विना नहीं चलता। ईश्वर की आज्ञा के विना एक चीटी भी नहीं काटती। ओ माँ ! आप विडम्वित न होइये। मैं सब बातों का विचार करके ही आहर मना कर रहा था। परन्तु तुम्हारे पति बदकिस्मती से नहीं माने। मैंने भी तो ब्रह्मा का वर जान-कर ही एक अदने मुक्के से अधमरा कर दिया। मैं पूरा घूँसा दूँतो ब्रह्मा का भी खातमा हो जाय। द्विविद के अत्याचार को माफ़ कीजिये। यह हाल सुग्रीव सुनेंगे तो कान मलेंगे।

सुरुचि—खैर अनसुनी का बोलबाला हो। हम सब साक्षात भोग रहे हैं सो काफी है। हे अंजनीके पुत्र अब विलम्ब न करो। मेरे मनमें खटका न उठने पावें। (आँसू पोंछती बिलखती है।)

सीता—हे करीम बेटा ! मरुत्वान ! मैं इनके बेटे को देखना चाहती हूँ। इन्हें देख मेरा मन पिघल रहा है। उसे जल्दी ला। (माँड़वी, ऊर्मिला और श्रुत भी देखना चाहती हैं)

हनुमान—हे धात्री ! मैं अभी छिनक भर में जङ्ग निपटाकर उसे पेश करता हूं। (फ़र-फ़र आवाज करते हुये आसमान में उड़कर गायब हो जाता है)

सुरुचि—हे सियजी ! क्या यह वही वीर है जिसने समुन्दर लाँघकर तुम्हें श्रीरामजी का हाल बताया था ?

सीता—हाँ हम लोगों को सब तरह से इमदाद देनेवाला यही था। यदि यह न होता तो हम लोगों का कभी का अन्त हो गया होता।

[तीर कमान पर चढ़ाये कुश-कुमार, ब्रह्मा, नघुक और लव के साथ हनुमान का प्रवेश। उनके पीछे शंकर और सिर लटकाये हुए राजानल आते हैं। सीता सहित सब उठकर शंकर को प्रणाम करते हैं। शंकर आशीस देकर बैठने को कहते हैं]

कुश—(हनुमान के कन्धे से नीचे कूदकर) ए वालिदा! आपने मुझे क्यों बुलाया है?

सीता—बेटा! तू क्या कर रहा है।

कुश—माँ! कुछ भी बिना सोचे-विचारे ऐसे वर उस बदचलन को इन्होंने क्यों दिया?

सीता—दिया है तो उनकी कदर तू करता है कि नहीं?

कुश—मुझे गरज क्या खाक है। अगर उनको बचाने का बूता है तो खुद हिफ़ाजत कर लें। मैं कृत-कृत्य हुये बगैर नहीं मानूँगा।

सीता—अरे! उनकी इतनी हैसियत नहीं, ताकत-हीन हैं तब?

कुश—फिर उस बदकार शिकार को मेरे सामने छोड़ दें। देखो माँ! दुम-दबाकर भागता है कि नहीं?

सीता—तुझे कुछ ज्ञात है? इस समय कजा किसकी है?

सुरुचि—(सकपकाकर) हे मातेश्वरी! मेरे प्राणेश्वर का उद्धार करेंगी न? आपकी बात मानेगा न? हा देव!

कुश—कजा चाहे किसी का हो हमसे क्या मतलब? माई तुम और पिताजी पहले भी इसी तरह पनाह में आये हुये कई ठेसरों को माफ़ी फ़रमाते रहे। लेकिन इसके खसम को मौत से कोई नहीं बचा सकता।

लव—अरे भाई ! इसको तुम न मारो तो मैं खुद एक ही वार में इसे मार गिराता हूँ। अंगद के जान के एवज्र में जरूर इसकी जान लेना है।

कुश—भाई ! तुम देखते रहो मैं ही इसे मार दिखाता हूँ।

सुरुचि—हे वीर पुत्र ! तुम्हें देखते ही मुझे डर सताता है। शान्त होकर सुनो ! इस झगड़े के अलावा और कौन-सा जुल्म इन्होंने किया है ? बताओ ये गुमराही तो नहीं हैं बाबा ?

कुश—मुझे कुछ सरोकार नहीं। ऐसे गदहे को मारना जरूरी है।

सीता—(झुँझलाती हुई झिड़क कर) अरे बेहूदा ! ये नल महाराज की राज्ञी है। मेरे पनाह में है बिना जाने मैंने इसे अभयदान दिया है। मेरे नियम को मानते हो कि नहीं ?

लव—बिना जाने अभयदान···तो···।

सीता—(आँखें लाल करके) बस चुप रह।

लव—(नकबानी से शिर नवाकर डरता हुआ दूर खड़े होकर देखता है।)

कुश—(चौंककर सिर झुका के डर से दूर खड़े होकर नमस्कार करता है) अम्माँ ! मैं ऐसा कमीना नहीं कि वालिदा की भन्ना न मानूँ। पर प्राक्कन् कई पीढ़ियों से आती हुई रवाज्र के खिलाफ़ आज माताजी की बात मान कर चढ़ाया हुआ शर उतारे देता हूं। (अपाँग दृष्टि से सुरुचि की ओर देख कर) हे देवी ! जा अब आपका पति बच गया। माँ के पनाह में आकर कौन खाली हाथ लौटा है ? जाके अपने प्राणेश के साथ ऐश-आराम में जिन्दगी गुजारो। अपने राज्य को सुशासित कराओ। (हनुमान से) भाई इनके बेटे को इन्हें सौंप दो।

सुरुचि—(अपने बेटे को पाकर गले लगाती हुई रोती है) हे कुश कुमार ! तू लोमश होकर अष्ट विभूतियों को कामयाब करो।

तुम्हारी मातृ भक्ति पर मैं भरपूर निहाल हूँ। (आगे बढ़कर) हे देव श्रेष्ठ ! ब्रह्मा, शंकर और महामुनिनारद ! आपकी मेहरबानी से सीतामाई ने मुझे अभयदान दिया। गुजरे पुत्र और पति को भी वापस दिलाया।

सीता—हे देवगण ! आपका निहोरा करती हूँ अनजान में डांवरों ने जो कुछ किया उसे माफ़ कीजिये। आपके दर्शन से हम सब पवित्र हुये (कुश-लव से) हे कुमार ? इन लोगों को प्रणति करो और माफ़ी माँगो। (सब लोग सीता सहित माँडवी, ऊर्मिला, श्रुत कीर्ति और सब बच्चे नमस्कार करते हैं।)

[श्रीराम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का मौजूद होना।]

श्रीराम—हे सर्वतो भद्र ! आप इन बच्चों को माफ़ कीजिये।

ब्रह्मा—हे रिपुहा ! तुम्हारे बेटों की बहादुरी ने ही फ़तह पाई। मुझे और राजा नल को उन्होंने माफ़ कर दिया। जिससे मेरा वरदान मिथ्या न होने पाई। आप तो विष्णु के अवतार ही हैं। मेरी माता इन्दिरा श्री सीताजी ने मेरे ऊपर रहम की। मैं तो आपका जेठा पुत्र कुश-लव का बड़ा भाई हूं। रावण के वध के लिये ही आपने यह रूप धारण किया है। आपके बेटे सौर बंश की आयत बढ़ाने वाले होंगे।

नल—(सब जानकर क्लेद से फ़िकिर में) हे ! परमात्मा, पर ब्रह्म, अन्तर्यामि, निर्गुण, निरंजन, निराख्यात, अव्यय, अस्तोय, अनावृत अंतर्गत, अज, अमर, अच्छेद्य, अदाह्य, अशोष्य, अव्यक्त, अलिप्त, अतीन्द्रिय, अधिष्ठान, अध्यवसाई, अनभिष्वंग, अकृतात्मा, अनुभूत, अनुकम्पा, अटोक, अजस्र, अमिट, अथाह, अपेल, अलख, ऐ शरणागत रक्षक ! मेरी हिफ़ाजत करो। अज्ञात से मैंने यह धृष्टता की। अब आँखें खुल गईं। मुझे क्षमा करें। (प्रणाम करता है)

श्रीराम—हे नल ! तू तो बौरहा बन गया है ! देखो (पुरारि के तरफ़ इशारा करते हुये) दुनिया भर के सब जीव इनके हाथ में हैं। यही परब्रह्म कहलाते हैं। यही अन्तर्यामी लयकर्ता हैं।

नल—हे स्थिति पालक ! उपनिषदों में यों कहा गया है कि "शिवाय-विष्णुरूपाय शिवरूपाय विष्णवे, शिवस्य हृदयं विष्णु: विष्णोश्चहृदयगु शिव: यथा शिवमयो विष्णुरेवं विष्णुमयश्शिव:" इसलिये हे श्रीराम ! आप दोनों में कुछ ही तफ़ावत नहीं है।

सुरुचि—(आकर दइत को बन्दगी करती है) अफ़सोस ! हे महबूब ! आज त्रैलोक्य की माता श्री जानकीजी की मेहरबानी से आपको मुकर्रर इस शकल में चङ्गा पासकी हूँ। गतप्राय सुत को भी पाकर धन्य हुई।

नल—(चलायमान हो लज्जा से) हे जगदम्बे मैं आपका अभिवादन करता हूं। आपने मेरी जान बख्श दी। और पुत्र को भी बरी कर दिया ! मेरी तौहीनी हुई। आपके बेटे परन्तप और आबरू पाये।

ब्रह्मा—(मुकर से) तुमने मेरे वर की मादकता से न केवल अपनी वरन् मेरी जान भी भरम में डाल दी। देखो ! मेरे पीठ पर हनुमान का पूरा मुक्का मैंने सह लिया। भरभरी देखो ! हनुमान का भारी घूँसा खाने की तेरी क्या औकात है ? उसने भी मेरी इज्जत के मारे मजबूर हो इतना ही चखाया। तेरे जैसे जाहिल को वर देने का मजा मुझे मिल गया। रे भोंदू ! राम के बेटे मेरे खलखत में हैं ? मुझे पैदा करने वाले के ऊपर भी क्या मेरा वर अमल दे सकता है ? कुम्भकर्ण के समान सुपास के बदले जान बूझकर कुबास चाहा। हा ! देव ! सूज टीसता है ! खैर अब खलासी मिली। अब आइन्दा इस तरह बेवकूफ़ों को वर कभी न दूँगा। (टीस से ब्रह्मा ढलमलाता है)

नल—(सूज को देखकर अचेत हो गिरने लगता है। ब्रह्मा उसे पकड़ कर उठाता है) हे विधि ! मेरी भूल माफ़ कीजिये।

श्रीराम—(ब्रह्मा के पीठ पर हाथ फेरते हैं और ब्रह्मा खुशी मानते हैं।) हे राजानल ! फख की वजह से तुमने ऐसी असम समस्या को पैदा की। पर खैरिअत है। अपने राज्य में जाकर आराम और आजादी से सल्तनत चलाओ, बदमिजाज मत बनो। कभी भी ऐसे निस्तार होने का सदमा अपने मन में न लाना। कभी-कभी तक़दीर का भी हेरफेर होता है। अब अफ़सोस करने से क्या होगा ?

नल—हे अकृतात्मा मौला ? जायावरवादी के जरिए फ़ारिक़ किये गये मुझ जैसे नामूसी और गरूरों को सल्तनत से क्या मतलब ? आराम काहे का है ? मैंने राज्य का त्याग किया है। मुझे ताड़ित समझिये। मैं अब नाक रखने के लिये आप से यही गुज़ारिश करता हूँ कि अपनी जोरू सहित परिस्ता-में वास करूँ। हे ब्रह्माजी ? मेरा राज्य अब रामचन्द्रजी का हो गया। अब नाउम्मेदी के अलावा और बदा क्या है ?

श्रीराम—हे राजा नल ? यों नाक कटने की ख्यालात छोड़ दो। पुरन्दर कई वार असुरों से मार खा चुका है। चुनांचे कान में तेल डाल-कर सोओ। तुम्हारे मारफ़त तुम्हारा बेटा ही सल्तनत का दावेदार तथा मालिक होगा। मैं भी रियाया को वंशीले बेटे के हाथ सौंप देता हूं।

ब्रह्मा—(श्रीराम से) हे स्थिति पालक ! अब आप अपने धाम में वास कीजिये। इस भूपर आकर साठ हजार वर्ष काफी वक्त बीत गया। सारी धरती निष्कण्टक हो गई। आपकी यहाँ अब कोई जरूरत भी नहीं है। अब अपने नतैत संयुक्त स्थिर लोक में बसिये। नस्ल परंपरा के ढङ्ग पर विजयलक्ष्मी से शुशोभित कुश को राज्याभिषेक जल्दी कीजिये। इस जङ्ग से भूभार उतर गया।

श्रीराम—(स्मरण करके) मेरे गुरुदेव के प्रस्तुत न रहने के कारण कुछ सोच रहा हूँ।

[वशिष्ठ का प्रवेश सबका उठकर प्रणाम करना]

वशिष्ट—हे बलवीर ? परापर ज्ञान से यहाँ का हाल जानकर मैं इधर चला आया। वृकोदर की सब बातें सच हैं। आज कुश को शैल पहनाकर तख्ते ताऊस पर चढ़ा के तिलक दो।

श्रीराम—हे तनूज ? कुशकुमार ? मेरा समूचा राज्य तुम्हें सुपुर्द करता हूँ। अपने सचिवों के संयुक्त रियाया का पालन कायदे से करना। सबको आराम देना। यह लो सुन्दर मुकुट, अङ्गद और चक्र-वाल ये राज चिह्न धारण करो। [सिर पर मकुट पहिनाते हैं ऊपर से सुरलोग विमानों में बैठ मुअत्तर, कुमुद, कदम्ब, कनेर कली, उसीर, किंकिणी जाल, कुन्द, गजरे, चम्पा, जालियों की ढेर की ढेर अपने-अपने नाम से जड़ाऊ जेवरात गिराते हैं और जरिया से बनाये हुए सुडौल पन्ना और जौहर बन्दर और भालुओं पर और ओले की भाँति सौंधा फल, जेवनार, आम, कटहल, कुम्हड़ा, केला, संतरा, नारंगी, दाख, पिस्ता, बदाम, आदि गिराते हैं, और पन्नीर, पुष्पराग, शतपत्र, सतखने, शिरमौर, चन्दिनी से झड़ी भर देते हैं। मलमल से बनाये साड़ी चोली, धोती, तौलियाँ, उपर्णा आदि गिराते हैं। गन्धर्व और किन्नर गाने बजाने के साथ नाचते हुए जयजय कार मचा रहे हैं।

बन्दर और भालू कुम्हड़े और कटहल आदि को गेंदि की तरह फिर ऊपर फेकने लगे, और कुछ फलों को खूब बैठकर खाने लगे, उनमें से कुछ सिरमौर और चोली साड़ी आदि पहनकर किन्नर के जैसे नाचने लगे ! कुछ बन्दर धोती पहनकर ढोल बजाते सीटी आदि जोर से देकर गूंज रहे थे। ऊपर उद्गाता वेद पाठ करते और कुश को आशीस देते हैं।]

श्रीराम—(हँसते हुए खुशी मनाने लगे) हे बेटा ! आयुष्मान होकर अपने भाइयों से मेल रख के और उनकी राय लेते हुये चैन से राज पालन करो। हक-नाहक भाइयों में तक़सीम न करना।

सीता—हे दुलार ! नेकनीयती से अपने दादे की नेकनामी

बढ़ाना। शरणागत की हिफ़ाजत करना और भाइयों की राय लें निनिजा से रियाया में आमोद-प्रमोद फैलाना।

ब्रह्मा—ओ कुशकुमार! बैरी रहित शाहंशाह होकर यश हासिल करो।

शंकर—चिरञ्जीवी कुश! तेरी सारी कामनायें पूरी हों।

पुरन्दर—(प्रवेश करके कुश को आशीस देता हुआ सबको सिर नवाकर खड़ा होता है।]

नारद—नृत्य करता हुआ गाने लगता है—

चौ०—सुमिरन करले मन राम। दिन नीके बीते जाते हैं।
पाप गठरिया सिर पर भारी। आगे नहीं पग जाते हैं॥
मात-पिता पति कुल परिवारा। कोई सङ्ग न आते हैं।
दुनिया दौलत माल खजाना। काम नहीं कछु आते हैं॥

गाना—ज्ञान की आँखों से देखो। राम के जो कर्म हैं।
काम जितने राम के हैं। सबके अन्दर मर्म है॥

गाना—श्रीरामा गुन गाओ सुख पावो जग में।
कामक्रोध मदलोभ मोह बटमार घेरे मग में॥
जगत् पिता की जय जय बोलो श्रीरामा करुणा से खेलो।
जन्म मरण जञ्जीरों से जो बेड़ी पड़ी है पग में॥ श्री०॥

हे चाचा कुश! मैं ही इस गारत का कारक हूं। इस इन्द्र पर टूटनेवाली आफ़त को मैंने इन्द्र से हटाकर यों चलाया, माफ़ कीजियेगा। मैं इस वजह से इस झगड़े का उकसानेवाला बना कि श्रीराम जी के अपने धाम पहुँचने के पहले तुम लोगों की बहादुरी और तुम्हारा यश जहान में फैल जाय। अब मेरा पेट भी भर गया और जिस लिये ये मेरे पिता जी ब्रह्मा ने मुझे पैदा किया, वह काम भी दिखाके उरुण हुआ। तुम दीर्घायुष्मान हो और आयत युग तक निष्कंटक राज्य करो।

वशिष्ट—हे वत्स ! वाल्मीकि के चेले ! मैं तुम्हें आशीस देता हूं। "स्वस्त्यस्तुते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु"

कुश—(विनीत हो)हे देवादि देव महादेव ? आपके जैसे सन्तों के आशीस से मैं कृतार्थ हुआ। मैं प्रणति करता हूं।

शंकर—हे पातशाह ! तू अयोध्या में वासकर सारे भूमण्डल पर राज्य कर। तुझको कभी पराजय हासिल न होगी। तेरे अनुनय-विनय से मैं भूरि प्रफुल्लित हुआ हूँ। तू कोई वरदान माँग, दूँगा।

कुश—हे संवर्तक ! आपके फ़जल के अलावा और क्या चाहिये ? सबकी जिन्दगी आपके हाथ है तो भी आपका अनुग्रह सत्य और स्थिर हो।

वशिष्ट—ऐ नल ! हारने की व्यथा से सदमें-दिल मत हो ! ये तो श्री आदि विष्णु के अवतार हैं ! इनमें और शिव में कोई अन्तर नहीं। सीताजी त्रिबली हैं। उनके बेटे उन्हीं के तरह हैं। उनसे हार मानना कोई बेइज्जती नहीं। जो हुआ सब अच्छा समझो। शहर में जाकर सबसे वस्ल करो।

पुरन्दर—हे खरारि ? अब मुझे कोई कण्टक नहीं रहा, परमपद को पधारिये। अब आपके बेटों के सहारे त्रिलोकाधिपत्य आसानी से कर सकता हूँ।

हनुमान—हे बादशाह कुश ? मुझे कौतूहल हो रहा है कि तुम अपने पिताजी से भी ज्यादह सल्तनत को घर बैठे बढ़ाकर राज्य करोगे। तुमने रणरङ्ग में राज्यों को जीत कर हासिल किया है। इस खुशी में मैं भी मुँह माँगा वर देना चाहता हूँ। माँग लो।

कुश—(प्रमोद से) हाँ ! हाँ ! हनुमान ! तुम खालिस, परिमार्जित पुनीत, और विद्याधर हो। चुनाँचे तुमको और भालूराज ऋच्छपति को मैं वन्दना करता हूँ। तुमसे यह वर अवश्य माँगता हूं कि जब मैं स्मरण करूँ तब सौहार्द से दर्शन देना।

हनुमान—तथास्तु ! पर मेरी यही तालीम है, याद रखो तो बेहतर है। एक बार वैकुंठ में सहस्रपाद ने इस प्रकार सब ऋषिगण व भक्त-जनों के बीच शिक्षा देते हुए आखिर यह शिक्षा दी, सुनो···

श्लोक—सर्वार्थ सम्भवो देहो जनितः पोषितोयतः।
नतयोर्याति निर्वेशं पित्रोर्मर्त्यश्शतायुषा ॥

सब अर्थों को सिद्ध करनेवाले शरीर की उत्पत्ति करके पालन-पोषन करनेवाले माता-पिता से मनुष्य सौ वर्ष में भी उरुण नहीं हो सकता।

श्लोक—यस्तयोरात्मजः कल्प आत्मनाच धनेन च।
वृत्ति न दद्यात् तंप्रेत्य स्वमांसं खादयन्तिः ॥

जो पुत्र समर्थ होकर भी शरीर और धन के द्वारा माता-पिता की जीविका का ढङ्ग नहीं करता है उसके मरने पर यमदूत उसी का माँस खिलाते हैं।

श्लोक—मातरं पितरंवृद्धं भार्यां साध्वीं सुतं शिशुं।
गुरुं विप्रं प्रपन्नंच कल्पोऽविभ्रत् स्वसन्मृतः ॥

माता, पिता, वृद्ध, पतिव्रता स्त्री, थोड़ी अवस्था के पुत्र, गुरु, अतिथि, ब्राह्मण, उपकारेच्छु और शरणागत की शक्ति होने पर भी जो पालन नहीं करता वह स्वास लेते हुये भी मरे के समान है।

श्लोक—दुर्जरंवत ब्रह्मस्वं भुक्तमग्नेर्मनागपि।
तेजीयसोऽपि किमुत राज्ञामीश्वरमानिनाम्।

ब्राह्मणों का थोड़ा भी धन तेजस्वी अग्नि के लिये भी पचाना कठिन है तब अपने को स्वामी माननेवाले राजा लोग क्या पचा सकेंगे?

श्लोक—नाहं हालाहलं मन्ये विषंयस्य प्रतिक्रिया।
ब्रह्मस्वंहि विषप्रोक्तं नास्य प्रतिविधिर्भुवि ॥

मैं हलाहल को विष नहीं मानता, क्योंकि उसकी औषधि हो

सकती है। किन्तु ब्राह्मण का धन विष कहा गया है, कारण उसके दोष को दूर करने का उपाय पृथ्वी में नहीं है।

श्लोक—हिनस्ति विषमत्तारं वह्निरद्भिः प्रशाम्यति।
कुलं समूलं दहति ब्रह्मस्वारणि पावकः॥

विष खानेवाले को मारता है। और अग्निजल से शान्त हो सकती है। किन्तु ब्राह्मण धन रूपी अरणि से उत्पन्न अग्नि मूल-सहित कुल को नाश कर देती है।

श्लोक—ब्रह्मस्वं दुरनुज्ञातं भुक्तं हन्ति त्रिपूरुषं।
प्रसह्यतु वलाद्भुक्तं दशपूर्वान् दशापरान्॥

ब्राह्मण का धन बिना जाने हुये भी खाने से तीन पुरुषों (पीढ़ियो) तक को नाश कर देता है और हठ पूर्वक बल से खाने पर दस पहले और दस पीछे की पीढ़ियों को नष्ट कर देता है।

श्लोक—स्वदत्तां परदत्तां वा ब्रह्मवृत्ति हरेच्चयः।
षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः॥

जो पुरुष अपनी दी हुई या अन्य की दी हुई ब्राह्मण की जीविका हरता है, वह साठ हजार वर्ष तक विष्ठा का कीड़ा होता है।

श्लोक—न ब्राह्मणान्मन्ये दयितं रूपमेतच्चतुर्भुजं।
सर्ववेदमयोविप्रः सर्वदेव मयोह्यहम्॥

मुझे अपना यह चतुर्भुज रूप भी ब्राह्मणों से अधिक प्यारा नहीं है, ब्राह्मण सर्व वेद स्वरूप हैं और मैं सर्वदेव स्वरूप हूँ।

नारद—हे गौतम के नाती! तुम्हारी बात बिलकुल सच है। उस समय मैं भी वहीं था।

चौ०—अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना। ते नर पशु बिन पूँछ बिषाना॥
निज जन जानि ताहि अपनावा। प्रभु सुभाव कपिकुल मन-भावा॥

शंकर—(राम की ओर मुस्कुराता हुआ देख) हे आपव! अब शहर में जाकर बाकी आमा याने जलसा, फ़बन आदि कराओ। हम

और वृकोदर यहाँ से चलें। (सबके सब प्रणाम करते हैं और वे सबके देखते-देखते लुप्त हो जाते हैं)

श्रीराम—गुरुदेव ! अब हम शहर में जाकर शिवजी के कहे के मुताबिक बाकी कारवाई करें। चलिये चलें। (सब जाते हैं)

[पट परिवर्तन]

चौथा—दृश्य

[रणरङ्ग के एक ओर बगीचे में भीरुराज और कादर बातें कर रहे हैं]

कादर—सरदारजी ! मुझमें ताक़त जब से कम हो गई तब से डर ज्यादह बढ़ गया।

भीरु—हाँ ! हाँ ! इसी से तो हमें सरदार होकर भी औरतों के हाथ मार खाकर इस तरह भूख के मारे छटपटाना पड़ता है। क्या करें हमारी बदनसीब।

कादर—तुम विश्वास रखो मुझे युद्ध का नाम सुनते ही हाथ पैर काँपने लगते हैं।

भीरु—अरे ! तुम इतना डरपोक बन गये क्या ? सुनो एक कहानी-एकबार कार्तवीर्यार्जुन रावण को चिड़िए की भाँति पकड़कर पिंजड़े में बाँध दिया। तब अर्जुन के बेटे खिलवाड़ में उसे चाबुक से मारने लगे। तब रावण चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा। यह हाल सुनकर पुलस्त्य ब्रह्मा ने उसे छुड़ाकर भेज दिया। इसी तरह पाताल में बलि के बच्चों ने रावण को पकड़कर पिञ्जड़े में बाँध दिया था और खूब भालों से चुभाने लगे। यह हाल जानकर राजा बलि ने उसे अपने खानदान का रावण समझकर छोड़ दिया। एकबार वालि को नहाते समय उसने पीछे से बीसों हाथों से पकड़ लिया था। यह हाल जानकर वालि ने उसे अपने काँख में दबा लिया और इस तरह छः महीना बगल में दबकर प्रार्थना करने पर कि मुझे छोड़ दो, वालि

को दया आ गई और अपने पूँछ से उसे लपेट और सातों दरियाओं में डुबाकर लंका में फेंक दिया।

कादर—(भीरुराज को जोर से पकड़कर) अब यह कहानी छोड़ दो। मुझे बीबी की याद आती है। अहा! (बीबी को यादकर रोता है)

भीरु—(आँखों से आँसू भरे राज्ञी का ख्याल कर बगल मुख करके सिसक सिसककर रोने लगता है) कादर! अब चलो हम भी चलें। अयोध्या में जाकर जीते हुए सिपाहियों में मिलकर कहेंगे कि हम जङ्ग जीत चुके। उसके बाद घर पहुँचेंगे।

कादर—वही नीक है, चलो चलें (दोनों जाते हैं)

[पट परिवर्तन]

पाँचवाँ-दृश्य

अयोध्या नगरी में श्रीरामचन्द्रजी का दर्बार

[राजानल, नद्युक, कुशलव, आदि अपने-अपने मुनासिब आसनों पर बैठे हैं]

श्रीराम—हे नल! हर आदमी चार अवस्थाओं से विमुक्ति पाता है, जैसे बाल्य, यौवन, कौमार और वार्धिक। वार्धिक दशा में याने चौथे अवस्था में राजा को अपने पुत्र को राज्य देकर आप वानप्रस्था-श्रमधर्म पालन करे। इस वास्ते पहले उसे पूरा करके तुम स्वर्ग में वास कर सकते हो। मैं भी मेरा राज्य मेरे बेटों को सौंपकर अपने स्थान को जाने पर आमादा हूँ।

नल—आपकी आज्ञा शिरोधार्य है।

श्रीराम—हे भय्या-लक्ष्मण! तुम और हनुमान आदि सब मिलकर नद्युक को अपने राज्य का पट्टाभिषेक यहीं करके कुश और नद्युक

को रथों पर बिठाकर जलूस निकालो और घोषणा कर दो कि कुश महाराज सप्तद्वीपों पर राज्य कर रहा है।

लक्ष्मण—जो भन्ना! (सब तयारी कराके जलूस निकालकर तब तक विश्वकर्मा के सजाये हुए कारीगरी, फाटक, दहर, दीवार, माडों, वन्दनवार आदि मङ्गलप्रद सजावटों को देखकर सब रीझ गये। लौट आने पर भोजन करके महफिल आदि देखते परखते खिलाअत बाँटते, सबको दिये गये अपने-अपने मुनासिब दहेजों को ले ले, अपने पद के अनुसार यानों पर चढ़ चढ़कर अपनी वाहिनी साथ ले—चले गये। नल भी बेटे को सब कुछ सौंपकर वहीं से वानप्रस्थाश्रम धर्म-पालन करने को जङ्गल में चले गये।

चन्द दिन गुजरने पर श्रीरामजी अपने कुटुम्ब सहित धाम को सिधारे।)

[पट परिवर्तन]

छठवाँ—दृश्य

[कैलास में शंकर जी पार्वती के साथ बातें कर रहे हैं]

शंकर—अब भी ज्ञात हुआ? कि नहीं? हे अपर्णा? तुमने पूछा था कि तीन दिन बीत गये, जाड़े के मौसिम में एक बारगी ठिठुरते हुये कहे बिना कहाँ गये थे? देखो श्रीराम की जैसी पितृ-भक्ति थी उससे दुगुनी कुशलव की मातृ-भगति है। वे बच्चे हैं तो क्या? पाँच दिन तक घमासान जङ्ग करके विजय पाये।

पार्वती—क्या वे बालक उतने बरियार हैं? हे जहान के पूज्य? कल बिल्व वन के नीचे शैव्य और भूतगणों के बीच में एकबार मुकर्रर इस दास्तान का बयान कीजिये।

शंकर—मङ्गला! तू यतमाद करो कि मुझे राम से बढ़कर मुहब्बती और कोई नहीं है सुनो—

चौ०—राम द्रोही मम भगत कहावा। सो नर सपनेहु मोहि न पावा॥
राम विमुख भगती चह मोरी। सो नारकी मूढ़ मति थोरी॥
दो०—राम प्रिय मम द्रोही, राम द्रोही ममदास।
ते नर करहि कलप भरि, घोर नरक महँ वास॥

हे आर्या ? सुनो ! जो व्यक्ति श्रीराम संयुक्त कुशलव, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, सीता और हनुमान आदि का यश बढ़ानेवाला संवाद बाँचता है और सुनता है वह जितेन्द्रिय होकर सौ वर्ष तक जीता है। तथा पुत्र पौत्र पाकर सुखी होता है। मित्रों को गुरुजनों को और सन्तों को फोड़ने में या पराया धन या पराई स्त्री लेने में या अदने कारजों में मन कभी नहीं लगेगा। तिजारतों में बढ़ोत्तरी होती है।

पार्वती—तो कैलास के सब पावनों को कल शाम को आने की खबर भेजूँगी। मुझे फिर यह दास्तान सुनने को मन खरोचता है।

शंकर—सही।

श्लोक—सर्व मङ्गल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यंबके देवि नारायणि नमोस्तुते॥

श्रीसीताराम की जय। श्रीहनुमान सहित कुशलव की जय।

सर्वेजनास्सुखिनो भवन्तु।

मंगलं महत्

यह वीरनल-कुश लव हिन्दी साहित्य नाटक श्री पोक्कुलूरि वेंकटावधानी के तृतीय पुत्र पं० रामचन्द्र शर्मा की कृति है।

स्थान—शहर बनारस।